रामपाल का भांडाफोड़
Rampal Exposed





" सिंहो के लेहङ नहीं साधु न चले जमात.."

यानी सच्चा साधु या संत सिंह (शेर) के समान होता है । और निर्भय होकर स्वछंद विचरण करता है । उसके

आगे पीछे भीङ नहीं होती । और न ही किसी प्रकार के ताम झाम या ढोंग आडम्बर होते है ।

प्रश्न 1- जगत गुरू रामपाल जी कहते हैं कि कबीर का जो असली ज्ञान है । वो सिर्फ उनके पास है और किसी के पास नहीं । रामपाल जी ने अध्यात्म चर्चा के लिए पूरे विश्व के संतो को आमंत्रित किया है । इसके बारे में आप क्या कहते हैं । आखिर सच्चाई क्या है ?

रामपाल की सच्चाई क्या है - रामपाल के बारे में कोई भी बात करना मुझे समय की बरबादी से ज्यादा कुछ नहीं लगता । रामपाल के यहाँ जो भीङ है । वह अधिंकाश अशिक्षित और ग्रामीण लोगों की है । खुद रामपाल भी अशिक्षित से अधिक नहीं है । बाकी शास्त्र पुराणों में तोङ मरोङ कर ऐसी बातें निकाल लेना कोई बङी बात नहीं है । जबकि वे पूर्णतः आधारहीन हों । मुझे हैरानी है । रामपाल और मधु परमहँस (साहिब बन्दगी) दोनों जोर शोर से कबीर की बात करते हैं । जबकि कबीर से इनका कोई लेना देना नहीं हैं । रामपाल तो लोगों ने बताया कि - कई कई वाणी नाम ? सतनाम के नाम पर देता है । और मधु परमहँस - सतगुरु सतनाम ..मंत्र देते हैं । ये दोनों ही " सोहंग " को गलत बताते हैं । जबकि कबीर ने इसी से शुरूआत बतायी है । और ये पूर्णतः निर्वाणी (धुनात्मक) है । तथा स्वांस में प्रति 4 सेकेंड 2 सोऽऽ 2 हंऽऽ इस तरह हो रहा है । विश्व का कोई भी व्यक्ति - हिन्दू मुसलमान सिख ईसाई यहूदी पारसी इसका तुरन्त परीक्षण कर सकता है । अतः इसमें सन्देह जैसी कोई बात ही नहीं है । इन दोनों का जो दीक्षा देने का तरीका है । वह भी हँस ज्ञान वाला नहीं है । मधु परमहँस को सामान्य धर्म शिक्षक और रामपाल को अनपढ धार्मिक शिक्षक से अधिक महत्व नहीं दिया जा सकता । रही बात । उसके चैलेन्ज आदि की । थोङा इन्तजार करें । सभी नकली और झूठे लोग खुद पतन रूपी गढ्ढे में गिरने वाले हैं । कितने ही पाखण्डी गिर चुके । वह आप देख ही चुके । फ़िर भी कबीर या आत्मज्ञान के सोहंग या निर्वाणी मंत्र का कोई खण्डन करता है । तो मुझे उसका चैलेंन्ज स्वीकार है । मुझे हर उस धार्मिक गुरु का चैलेंज स्वीकार है । जो खुद को इस समय सतगुरु कह रहा है । बशर्ते यह चैलेंज बङे स्तर पर हो । बाकी इनका इलाज सत्ता खुद ही कर रही है । इसलिये मुझे इनमें कोई कैसी भी दिलचस्पी नहीं है ।

मैं रामपाल (की बकवास) मधु परमहँस (का बङबोला पन) जैसे तमाम लोगों का खंडन करता हूँ कि - वे सफ़ेद झूठ बोल रहे हैं । पहली बात तो इनका आत्मज्ञान से कोई वास्ता ही नहीं । ये सदियों से स्थापित थ्योरी के एकदम विपरीत बोल रहे हैं । और प्रयोगात्मक ज्ञान से तो इनका दूर दूर तक कोई वास्ता नहीं है । जबकि वही असली होता है । मैंने संक्षेप में कई बार स्पष्ट किया है - जो भी व्यक्ति सांस में स्वतः होते निर्वाणी और धुनात्मक नाम के अतिरिक्त कोई भी अन्य नाम (दीक्षा) देता है । और अंतर में अधिकतम 3 महीने तक दिव्य प्रकाश नहीं कर पाता । निसंदेह वो व्यक्ति (गुरु कहना तो बहुत गलत होगा ना) पूरा धूर्त है । बस इसकी शर्त 1 ही है । शिष्य ने निर्धारित समय तक सही योग ध्यान सुमरन किया हो ।

प्रश्न 2- करोंदा । हरियाणा में कोई रामपाल जी महाराज हैं ? जो खुद को कबीर साहब का उत्तराधिकारी कहते है ? व दावा करते है कि - इस समय धरती पर केवल उन्हीं के पास कबीर जी का असली ज्ञान है ? वो टीवी पर रिकॉर्डिंग के द्वारा मंत्र देते है क्या ये मुमकिन है कि - कोई टीवी द्वारा ज्ञान दे ? इस तरह तो उसके चले जाने के बाद उसके चेले ही कई पंथ चला लेंगे । और असल में उनके मंत्र में वे काल के मंत्र भी थे ? जिनका वो सतसंग में विरोध करते हैं ?

रामपाल ठीक कहता है । वो उत्तराधिकारी है । लेकिन कबीर ने जो बताया कि - उनके पंथ में कैसे काल दूत घुस आयेंगे । और लोगों को भ्रमित करेंगे । वो उन्हीं में से एक उत्तराधिकारी है । कबीर ने अनुराग सागर में काल दूत का हुलिया भी बताया है । एक बार मिलान करे । खुद पता चल जायेगा । अगर उसमें ताकत है । तो मुझसे बात करे । मैं उसे बताऊँगा । कबीर ने क्या कहा । क्या नहीं कहा ?

- टीवी पर रिकॉर्डिंग के द्वारा मंत्र देना मुमकिन है । मगर सिर्फ़ पाखण्डियों के लिये । वे कुछ भी कर सकते हैं ।

असल में उनके मंत्र में वे काल के मंत्र भी थे ? जिनका वो सतसंग में विरोध करते हैं ?

- वो जिसकी नौकरी करता है । उसी की तो बजायेगा । निर्वाणी मंत्र (धुनात्मक नाम) में 1 भी अक्षर नहीं है । ये स्वांस में ध्वनि रूप है । इसमें 1 भी अक्षर वाणी से नहीं बोलना होता । इसलिये इसे अजपा और निर्वाणी मंत्र (धुनात्मक नाम) कहा गया है । इसके अलावा वाणी से जाप करने को कोई गुरु 1 भी अक्षर का ह्यी क्लीं ॐ लं नं आदि जैसे बीज मंत्र भी देता है । निश्चय ही वो कालपुरुष का चमचा है । लेकिन ध्यान रहे । वो भी (ऐसा हरेक गुरु) अपने आपको सतगुरु ही कहता है । सतगुरु ?

१२ कबीर चरित्रबोध (१८४७)

कितनेक साधु ऐसे भी हैं जो सत्य पुरुषकी भक्तिसे भटकाते हैं और काल पुरुषकी भक्तिमें लगा देते हैं। सो उनकी शिक्षा और बातोंसे पहचान लेना चाहिये। ऐसा न हो कि, उनके धोकेमें आ जावें। वे साधु कालपुरुषके दूत हैं उनसे सावधान रहना और जिस साधुमें अपने गुरुका ज्ञान और उसकी शिक्षा देखना उसकी मर्यादा तथा सेवा अपने गुरुके समान करना और धोखा घड़ी देने-वाले साधु अपनी वार्तालापसे पहचाने जाते हैं।

सत्य पुरुषकी भक्तिके अतिरिक्त और समस्त भक्तियां जाल तथा बंधनमें डालनेवाली हैं। कालपुरुषका विष ब्रह्मा विष्णु और शिव सनकादिकसे लेकर समस्त जीवोंमें समाया हुआ है। बिना सत्यगुरुकी दयासे कोई सत्य पदमें लग नहीं सकता है, समस्त शरीर तथा नक्षत्रोंमें काल पुरुषका विष छिपा हुआ है।

स्वाँस जो खाली जात है । तीन लोक का मोल

स्वाँस उस्वाँस में नाम जपो । व्यर्था स्वाँस मत खोय ।
न जाने इस स्वाँस को । आवन होके न होय ।

श्वांसा की कर सुमरणी । अजपा को कर जाप ।
परम तत्व को ध्यान धरि । सोहं आपे आप ।

माला है निज श्वांस की । फेरेंगे कोई दास ।
चौरासी भरमे नहीं । कटे कर्म की फांस ।

काया मध्ये श्वास है । श्वास मध्य सार ।
सार शब्द विचारिके । साहब कहो सुधार ।

सोहं जाप अजपा है बिन रसना है धुन्न - गरीबदास जी

प्रश्न 3- रामपाल की " ज्ञान गंगा " नामक पुस्तक के बारे में आपका क्या विचार हैं ?

पुस्तक को मैंने जिज्ञासावश देखा । कुछ कुछ पढा भी । कहीं की ईंट कहीं का रोङा । भानमती ने कुनबा जोङा । तर्ज पर ये पुस्तक - वेद । गीता । देवी भागवत । कबीर वाणी । कुरआन । बाइबल । ग्रन्थ साहब । कुछ पुराण आदि से उनके अंशो की मनमानी और अवैज्ञानिक तरीके से व्याख्या करके बनायी गयी है । कैसे ? आईये निम्नलिखित पुस्तकीय अंशों के साथ विचार करते हैं । हालांकि पूरी पुस्तक में भ्रामक और अनर्गल बातों की भरमार है । और सभी पर बात करने का कोई औचित्य ही नहीं है । इसलिये कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर चर्चा करते हैं ।

- जबकि बाइबल में उत्पति विषय के सृष्टि की उत्पत्ति नामक अध्याय में लिखा है कि - प्रभु ने मनुष्य को अपने स्वरूप ? के अनुसार उत्पन्न किया । तथा 6 दिन में सृष्टि रचना करके 7वें दिन विश्राम किया ।

बाइबिल में क्या लिखा है । मुझे नहीं मालूम । पर जब यह आत्मा सार तत्व (है । शाश्वत स्थिति) यानी आदि सृष्टि से भी पूर्व आत्म स्वरूप था । तब पहले इसने (शास्त्र में भी यही वर्णन है) 84 आदि योनियों को बनाया । पर सन्तुष्ट नहीं हुआ । तब सबसे अन्त में मनुष्य शरीर बनाया । और फ़िर सन्तुष्ट होकर उसी में प्रविष्ट हुआ । जाहिर है । पूर्व में वह कोई मनुष्य स्वरूप में नहीं था । वैसे इस स्थिति को पूर्णतया समझाना बेहद जटिल है । पर वास्तव में यह बात विराट माडल के लिये है । एकदम वास्तविक स्थिति में तो परमात्मा विराट से भी परे है । क्योंकि विराट वगैरह जो कुछ भी है । सब उसी में है । और निर्मित है । मूल में उसके अतिरिक्त कुछ है ही नहीं

- जबकि नानक साहब ने सतपुरुष के आकार रूप ? में दर्शन करने के बाद अपनी अमृतवाणी महला पहला श्री गुरु ग्रन्थ साहब में पूर्ण ब्रहम का आकार होने का प्रमाण दिया है । लिखा है - धाणक रूप रहा करतार । पृष्ठ 24 । हक्का कबीर करीम तू बेएब परवर दिगार । पृष्ठ 721 । तथा प्रभु के मिलने से पहले हिन्दू धर्म में जन्म होने के कारण श्री बृजलाल पाण्डे से गीता को पढ़कर नानक साहब ब्रहम को निराकार कहा करते थे ।
वह कविर्देव परिभूः अर्थात सर्व प्रथम प्रकट हुआ । जो सर्व प्राणियों की सर्व मनोकामना पूर्ण करता है ? वह कविर्देव स्वयंभूः अर्थात स्वयं प्रकट होता है । उसका शरीर किसी माता पिता के संयोग से (शुक्रम अकायम) वीर्य से बनी काया नहीं है । उसका शरीर (अस्नाविरम) नाड़ी रहित है । अर्थात 5 तत्व का नहीं है । केवल तेज पुंज से 1 तत्व का है ।

उपरोक्त वर्णन में इस बात पर जोर है कि ये आत्मा सदैव से ही किसी आकार (मनुष्य रूप) में था । अब आईये । एक प्रयोग करते हैं । एक हवाई जहाज (एक आकार) लीजिये । अब इसके चार टुकङे (दूसरा आकार) कर लीजिये । अब इसके सभी पार्ट (तीसरा आकार) अलग अलग कर लीजिये । अब सभी पार्ट का चूरा (चूर्ण आकार । चौथा) कर लीजिये । इस चूरे को उङा (कण कण में) दीजिये । अब बताईये । इनमें से कौन सा आकार सत्य था । इसी matter से फ़िर हवाई जहाज किसी नये रूप रंग (विचार और इच्छा शक्ति) में बन सकता है । मिट्टी से विभिन्न रंग रूप के खिलौने बनाते हैं । अलग अलग नाम देते हैं । पर मूल मिट्टी ही है । और उसका कोई निश्चित आकार नहीं हैं । शास्त्रों ने स्पष्ट कहा है कि - वह निराकार और साकार (अब सृष्टि होने के बाद) दोनों ही हैं । क्योंकि उसके अलावा दूसरा कोई है ही नहीं । सब कुछ उसी से है । और भी ध्यान दें । परमात्मा को अवर्णनीय कहा है । आकार होने पर उसका वर्णन काफ़ी हद तक संभव था । वाणियों में जो - अलख पुरुष । अगम पुरुष आदि का वर्णन है । वह वास्तव में आत्मा की प्रकाशमय स्थिति है । अकह (परम लक्ष्य) को प्राप्त होने वाला । सबसे परे । निज आत्म स्वरूप को ही देखता है । और ये आदि सृष्टि से पूर्व वाली स्थिति ही है । फ़िर बताईये । यहाँ एक अलग परमात्मा कहाँ से आया ? अकह का अर्थ ही यह है कि अब कहने सुनने वाला कोई है ही नहीं । फ़िर किससे और क्या कहा जाये ।

****

परमात्मा समस्त उपाधियों से रहित (निरुपाधि) है । परमात्मा एक तिनका कार्य नहीं करता । हां । लेकिन उसके होने से । उसकी सत्ता से ये सब कार्य हो रहे हैं ।

परमात्मा न साकार है । न निराकार है । न सगुण है । न निर्गुण है । यह सब काल निरंजन के बारे में हैं ।..
बल्कि परमात्मा गुणातीत कालातीत अवर्णनीय है ।
परमात्मा का नाम..जो श्री गुरु गृंथ साहब में शब्द अकह के आया है । और रूप विलक्षण है । वाणी से परे है । इसी के लिये कहा है - नाम रूप दोऊ अकथ कहानी । समझत सुखद न जात बखानी ।

॥ चौपाई ॥

सुरति आतम सूर्ज कहाई । सो प्रतिबिंब पड़ा घट माहीं ॥
जैसे घड़ा नीर से भरिया । सूरजका प्रतिबिंबजो परिया ॥
ऐसे आतम देह समाना । अंदर में कोइ देख न जाना ॥
बाहर कीन्हा भास प्रकासा । सो करे मन इंद्री में बासा ॥
नाद बिंद कीन्हा बिस्तारा । ऐसे रचि संसार सँवारा ॥
चरअरुअचरचराचरखाना । गुनमनमिलिपसुपंछिनसाना
योँ बिस्तार भई जग माया । बंधन भये जन्म जिव काया॥
कोइनाहिं भेद उधरकापाया । बार बार भव में उरझाया॥

वास्तव में आत्मा का सबसे सटीक उदाहरण तो सूर्य और दर्पण का ही होता है । क्योंकि जीवात्मा भाव आत्मा का प्रतिबिम्ब ही है । इसमें जीव भाव पूर्णतया हटते ही वह फ़िर से मुक्त आत्मा हो जाता है । आप एक छोटा शीशा (मुँह देखने वाला दर्पण) । और एक बङा शीशा । तथा एक पारदर्शी काँच लीजिये । अब इन तीनों को सूर्य के सामने लाईये ।

पहले खुली आँखों से सीधे सूर्य देखिये । बहुत चमक से आँखें चौंधियाती है । अब बङे दर्पण में सूर्य देखें - दर्पण की क्षमता अनुसार चमक । आँखों पर प्रभाव कम । अब छोटे दर्पण में - चमक और प्रभाव और भी कम । अब पारदर्शी काँच में - स्तर और भी घट गया । ठीक ऐसे ही आत्मा की विभिन्न अनगिनत स्थितियाँ बनती हैं ।

अब फ़िर से बङे दर्पण पर आ जाईये । प्रथम अवस्था में एकदम साफ़ दर्पण में सूर्य देखिये । सूर्य एकदम स्पष्ट और प्रत्यक्ष चमक वाला दिखेगा । यह साफ़ दर्पण मनुष्य अंतकरण की स्वच्छ निर्मल स्थिति को बताता है । योगी अपना अंतकरण (दर्पण) योग द्वारा ऐसा ही शुद्ध रखते हैं । तब आत्मा (सूर्य या आत्मप्रकाश) ऐसे ही नजर आने लगता है ।

द्वितीय अवस्था - अब इसी दर्पण पर पानी फ़ैला दीजिये । फ़िर सूर्य देखें । प्रतिबिम्ब धुँधला । और चमक फ़ीकी । यह मनुष्य के अन्दर मन में निरन्तर उठती विचार लहरों की स्थिति हुयी ।

तृतीय अवस्था - अब इसी दर्पण पर थोङी धूल रगङकर गन्दा कर दे । अब सूर्य कैसा हुआ ? यह मनुष्य की मलिन वासनाओं की स्थिति हो गयी ।

चतुर्थ अवस्था - अब इसी दर्पण पर ढेरों कालिख पोत दें । अब सूर्य कैसा दिखा ? ये मनुष्य की तामसिक या राक्षसी वृतियाँ होने से आत्मप्रकाश खत्म सा ही हो गया ।

अब ये सब परिवर्तन अंतकरण (दर्पण) में ही तो हुये । सूर्य तो ज्यों का त्यों ही चमक रहा है । हमेशा ही चमकता रहता है । बस यही रहस्य है । इसी दर्पण को साफ़ करना रखना ही खास बात है ।

ये मैंने समझाने के लिये चार प्रमुख अवस्थायें बतायीं हैं । स्थितियाँ तो बहुत बनती हैं ।

दर्पण सूर्य से असल सूर्य तक जाना - अब दर्पण में सूर्य को देखने से आशय है । सच्चे गुरु ने आपको आत्मा की झलक दिखा दी । इसी को देखते हुये इसी के प्रकाश में आप सूर्य तक की यात्रा तय कर लोगे । अब यहाँ एक चीज गौर से समझो । आप जमीन पर खडे हैं । और दर्पण का सूर्य देखा । यह हँस दीक्षा हो गयी । अब असल सूर्य और आपके बीच एक सीधी अति लम्बी लाइन या मार्ग है । तो इसी दर्पण वाले सूर्य (यह खुद जीवात्मा हुआ) के सहारे (ध्यान) आप इसी लाइन (सन्तमत का मध्य मार्ग) पर बढते चले जाओ । ज्यों ज्यों आप असल सूर्य (परमात्मा) के निकट होते जायेंगे । दर्पण का प्रतिविम्ब बङा (यहाँ योग की उच्च स्थिति) चमक तेज (आत्मप्रकाश बढना) गर्मी तेज (योग पावर) होती जायेगी । अन्त में बिलकुल सूर्य (परमात्मा) के पास जाकर दर्पण सूर्य (जीव प्रतिबिम्ब) खत्म हो जायेगा । फ़िर उसकी क्या आवश्यकता है ? अब साक्षात (परमात्मा से साक्षात्कार) सूर्य ही आपके सामने है । इसी उदाहरण पर ध्यान देने से आपको पूरी योग यात्रा । जीवात्मा का मुक्त होना । या कैसे निज आत्मस्वरूप होना । सब कुछ आसानी से समझ आ सकता है ।

भीखा साहब　　साखी　　८७

एक संप्रदा सब्द घट एक द्वार सुख संच ।
इक आतम सब भेष में दूजो जग परपंच ॥३१॥
भीखा भयो दिगम्बर[1] तजि कै जक्त बलाय ।
कस्त[2] करो निज रूप को जहँ को तहाँ समाय ॥३२॥
भीखा केवल एक है किरतिम भयो अनंत ।
एकै आतम सकल घट यह गति जानहिं संत ॥३३॥
एकै धागा नाम का सब घट मनिया माल ।
फेरत कोई संतजन सतगुरु नाम गुलाल ॥३४॥

पहला प्रकरण

मूलम् ।

आत्मा साक्षी विभुः पूर्ण एको मुक्तश्चिदक्रियः ।
असङ्गो निःस्पृहःशान्तो भ्रमात्संसारवानिव ॥१२॥

अन्वयः ।	शब्दार्थ ।
आत्मा	आत्मा
साक्षी	साक्षी है
विभुः	व्यापक है
पूर्णः	पूर्ण है
एकः	एक है
मुक्तः	मुक्त है
चित्	चैतन्य-रूप है
अक्रियः	क्रिया-रहित है
असंगः	संग-रहित है
निःस्पृहः	इच्छा-रहित है
शान्तः	शान्त है
भ्रमात्	भ्रम के कारण
संसारवान्	संसारवाला
इव	भासता है

भावार्थ ।

हे जनक ! बन्ध और मोक्ष दोनों अवास्तविक हैं और केवल अपने स्वरूप की अज्ञानता से देहादिकों में अभिमान करके, जीव अपने को बन्धायमान करके, मुक्त होने की इच्छा करता है । वास्तव में न उसमें बन्ध है और न मोक्ष है । जीव-आत्मा है, एक है, पूर्ण है, मुक्त है, असंग है, निःस्पृह है और शान्त है । भ्रम करके संसारवाला भान होता है । वास्तव में, उसमें संसार तीनों कालों में नहीं है, इसमें एक दृष्टांत कहते हैं—

अष्टावक्र-गीता

पहला प्रकरण

(१) अहंकार आदिकों का भी आत्मा साक्षी है, पर कर्ता नहीं है।

(२) आत्मा विभु अर्थात् सर्व का अधिष्ठान है।

(३) आत्मा एक है अर्थात् सजातीय और विजातीय स्वगत-भेद से रहित है।

(४) आत्मा मुक्त है अर्थात् माया और माया के कार्य देहादिकों से भी रहित है।

(५) आत्मा चित् है अर्थात् चैतन्य-स्वरूप है।

(६) आत्मा अक्रिय है अर्थात् चेष्टा से रहित है, क्योंकि परिच्छिन्न में चेष्टा अर्थात् क्रिया होती है, व्यापक में नहीं होती है।

(७) आत्मा असंग है अर्थात् सम्पूर्ण सम्बन्धों से रहित है।

(८) आत्मा निःस्पृह है अर्थात् विषयों की अभिलाषा से भी रहित है।

(९) आत्मा शान्त है अर्थात् प्रवृत्ति और निवृत्ति देहादि अन्तःकरण के धर्मों से रहित है।

(१०) आत्मा केवल भ्रम के कारण संसारवाला भासित होता है। इन दस हेतुओं करके आत्मा वास्तव में संसारी नहीं हो सकता है।

मूलम् ।

अहो अहं नमो मह्यमेकोऽहं देहवानपि ।
क्वचिन्नगन्ता नागन्ता व्याप्य विश्वमवस्थितः ॥ १२ ॥

अन्वयः ।	शब्दार्थ ।
अहम्	मैं
अहो	आश्चर्य-रूप हूँ
मह्यम्	मेरे लिये
नमः	नमस्कार है
अहम्	मैं
देहवान्	देहधारी होता हुआ
अपि	भी
एकः	अद्वैत हूँ
न क्वचित्	न कहीं
गन्ता	जानेवाला हूँ
न क्वचित्	न कहीं
आगन्ता	आनेवाला हूँ
विश्वम्	संसार को
व्याप्य	आच्छादित करके
अवस्थितः	स्थित हूँ

भावार्थ ।

प्रश्न—आत्मा अनेक प्रतीति होते हैं, क्योंकि प्रत्येक देह में आत्मा सुख दुःखादिवाला पृथक् ही प्रतीत होता है। यदि आत्मा एक होवे, तब एक के सुखी होने से सबको सुखी होना चाहिए तथा एक के दुःखी होने से सबको दुःखी होना चाहिए। एक के चलने से सबको चलना और एक के बैठने से सबका बैठना होना चाहिए ?

उत्तर—जनकजी कहते हैं कि बड़ा आश्चर्य है कि मेरा आत्मा एक ही है, तथापि अनेक देहरूपी उपाधियों के भेद करके अनेक आत्मा प्रतीत हो रहे हैं। जैसे एक ही जल नाना घट-रूपी उपाधियों में नाना रूपवाला प्रतीत होता है। जैसे एक ही सूर्य का प्रतिबिम्ब नाना जलोपाधियों में हिलता-चलता प्रतीत होता है। और जैसे एकही आकाश नाना घटमठादिक उपाधियों में क्रिया आदिकवाला प्रतीत होता है, परन्तु वास्तव में वे क्रिया आदि सब उपाधियों के धर्म हैं, आकाश के नहीं हैं। वैसे सुख दुःख गमनागमनादिक भी सब देहादि उपाधियों के धर्म हैं, आत्मा के नहीं हैं, इसी से एक ही आत्मा गमनादिकों से रहित व्यापक होकर स्थित है ॥ १२ ॥

अब आत्मा की बात समझिये । आत्मा वास्तव में एक ही है । और उसी को सृष्टि बनने के उपरांत (सबसे परे होने के कारण) परम आत्मा कहा गया है । मनुष्य आदि सभी (किसी न किसी जीवन की इच्छा से) जीवात्मा है । गौर से समझें - आत्मा का किसी भाव में किसी इच्छा से शरीर (जीवन) धारण करना ही आत्मा का जीवन या आत्मा से जीवन हुआ । तो जो वो नया शरीर नयी इच्छाओं नये संस्कार नये स्वभाव के साथ जीव (भाव में) धारण करता है । तब जीवात्मा कहलाता है । अब इसको भी समझें । जैसे कोई अभिनेता है । वह अनेकों अच्छे बुरे मध्यम चरित्र निभाता है । तो क्या उसका मूल प्रभावित हो जाता है ? अपने चरित्र को निभाने के बाद वह अपने मूल में स्थित हो जाता है । यही बात आत्मा और जीव के बीच सम्बन्ध को लेकर है । आप सब जानते हैं । आत्मा ने सबसे पहले सोचा कि - मैं कौन हूँ ? कोहम ? उस समय ये पूर्ण था । और हङबङाहट में था । तब उससे संकल्प हो गया - मैं एक से अनेक हो जाऊँ । तो कोहम से ही अहम की उत्पत्ति हुयी । फ़िर अनेक जीव बने । इसके बाद इसने सर्वश्रेष्ठ मनुष्य शरीर बनाया । और शरीर को कहा - ओहम (ॐ) । इसके बाद उस मनुष्य को जिज्ञासा हुयी - कोहम । तब ज्ञान से उत्तर मिला - सोहम । यानी मैं भी वही हूँ ।
वास्तव में यह समझाना बङा जटिल है । लेकिन इसको एक सटीक उदाहरण से इस तरह समझ सकते हैं ।

जैसे किसी विशाल मैदान (अखिल सृष्टि) में अनगिनत दर्पण (अंतःकरण या मन) रखे हो । और उन पर सूर्य (आत्मा) का प्रतिबिम्ब (ही जीवात्मा) पङ रहा हो । तो उन सभी में अलग अलग सूर्य नजर आयेगा । इसी तरह आत्मा का प्रकाश (रूपी फ़ोकस) अंतः करण पर पङता है । इस क्रिया को सिनेमा प्रोजेक्टर द्वारा भी सटीक जाना जा सकता है । प्रोजेक्टर का बल्ब (आत्मा) > इसके बाद फ़ोकस । इसके बाद आगे चढी रील जिसमें चित्र और ध्वनि हैं । (अंतःकरण) इसके बाद सिनेमा हाल में जाता फ़ोकस प्रकाश (अदृश्य प्रकृति की क्रियायें) और सिनेमा के परदे (प्रथ्वी) पर चलते चलचित्र (मनुष्य आदि का जीवन और विभिन्न क्रियायें) बस यही सच है । जब तक यह मन द्वारा अपने अहम माया रूप को सत्य मानता रहता है । तब तक जीव कहलाता है । और ज्ञान द्वारा निज स्वरूप को जान लेता है । तब यही मुक्त आत्मा हो जाता है ।

आत्मा सो परमात्मा:

सच तो ये है कि - परमात्मा नाम का अलग से कहीं कोई और कुछ नहीं है ।और मुख्य रूप से जो कुछ है । सो ये आत्मा ही है । लेकिन परमात्मा भी हो जाता है । कैसे ? अब ये जानिये ।
जब से आत्मा का एक से अनेक होना । और ये सृष्टि रचना आदि खेल शुरू हुआ है । तब से ये परमात्मा शब्द बन गया ।जो वास्तव में आत्मा के (अनादि रूप या स्थिति) मूल रूप के लिये ही कहा जाता है । शुरूआत में यानि सबसे पहले ये आत्मा ही था । ना कि परमात्मा । परमात्मा इसलिये नहीं । क्योंकि जब इसके अलावा कुछ था ही नहीं । तो फ़िर ये किससे या सबसे परे कैसे और क्यों होता ? कोई आवश्यकता ही नहीं थी। इसलिये परमात्मा भी नहीं था । हाँ आत्मा थी । अतः सृष्टि रचना के बाद मुख्य शक्ति आत्मा को परमात्मा कहना उचित भी बनता है ।क्योंकि इस सब खेल से " परे " जो मुक्त और निज स्वरूप स्थित आत्मा है । वही परमात्मा है ।ये बात इसलिये और भी बन गयी । क्योंकि सृष्टि रचना के दौरान आत्मा से बहुत सी उपाधियाँ और स्थितियाँ जुङ गयीं ।अतः इस खेल (शब्द पर ध्यान दें) का विजेता होकर जो भी अपने मूल आत्मा स्वरूप में पहुँच जाता है । तब वह इन सबसे " परे " होकर परमात्मा ही कहलाता है ।
ये बात समझाने के लिये है । और द्वैत स्थिति में जीव से परमात्मा तक की किसी भी स्थिति उपाधि को प्राप्त

होने पर " परमात्मा " शब्द सृष्टि रचना के बाद से पूरी तरह सत्य भी है । अतः आत्मा सो परमात्मा यानी दो नही हैं । एक ही बात है ।

कबीर साहिब:

ज्ञानी महिमा एही जाना । सब घट आतम एक समाना ।
सो हंसा सतलोक सिधावे । दुविधा भाव सबै बिसरावे ।

परमात्मा सो आत्मा । जिमि भानु किरण प्रकाश हो ।
उलट कर जब आप चीन्हें । भाव दूसरा नाश हो ।

बोधसागर (२५१)

सद्गुरु वचन

कहँ कबीर सुन सुकृती बानी । यह घट समझ लेहु सहिदानी॥
सूक्षम रूप शब्द कर आही । सतगुरु मिलहिं लखावहिं ताही॥
सुर्त निर्त जब शब्द समाना । अहंकार मन केर बिलाना ॥
दीन भाव गति तबही आई । सब घट आतम एक समाई ॥
पूरण ज्ञान जाहि घट होई । तब यह भेद पाय है सोई ॥
ज्ञानी महिमा एही जाना । सब घट आतम एक समाना॥
सो हंसा सतलोक सिधावे । दुबिधा भाव सबै बिसरावे ॥

छन्द–भाव दूसर तजहु धर्मनि, एक ब्रह्म विचारके ।
इमि जीव जगमें देखिये, जलबिन्दु लहर सम्हाँरके ॥
परमातमासों आत्मा, जिमि भानु किरण प्रकाश हो ।
उलट कर जब आप चीन्हें, भाव दूसर नाश हो ॥

सोरठा–जिमि तिल मध्ये तेल, कंचन औ आभूषणा ॥
जीव ब्रह्म इमि मेल, पुहुप मध्य जिमि बासना ॥

इति श्री अमरमूल आत्मज्ञान वर्णन

दादू दरिया प्रेम का, तामें झूलैं दोइ। - 77 -
इक आतम परआत्मा, एकमेक रस होइ ।। 70 ।।
दादू हिण दरियाव, माणिक मंझेई।
डुबि डेई पाण मैं, डिठो हंझेई ।। 71 ।।
परआतम सौं आत्मा, ज्यूँ हंस सरोवर मांहि।
हिलि मिलि खेलैं पीव सौं, दादू दूसर नांहि ।। 72 ।।
दादू सरवर सहज का, तामें प्रेम तरंग।
तहँ मन झूलै आत्मा, अपणे सांई संग ।। 73 ।।
दादू देखौं निज पीव को, दूसर देखौं नांहि।
सबै दिसा सौं सोधि करि, पाया घट ही मांहि ।। 74 ।।

दादू साहिब:

काहे को दुख दीजिये । साँई है सब मांहि ।
दादू एकै आत्मा । दूजा कोई नांहि ।

दादू दरिया प्रेम का । तामें झूलें दोई ।
इक आतम परआत्मा । एकमेव रस होई ।

मुझ ही मैं मेरा धणी । पडदा खोलि दिखाइ ।
आत्म सौं परमात्मा । प्रकट आण मिलाई ।

परआतम सौं आतमा । ज्यूँ हंस सरोवर माहिं ।
हिलि मिलि खेलें पीव सौं । दादू दूसर नाहिं ।

पर आतम सौं आत्मा । ज्यों पाणी में लूंण ।
दादू तन मन एक रस । तब दूजा कहिये कूंण ।

पर आतम सौं आत्मा । ज्यों जल जलहि समाई ।
मन हीं सौं मन लाइये । लै के मारग जाई ।

परआत्म सौं आत्मा । ज्यों जल उदक समान ।
तन मण पानी लौंण ज्यों । पावै पद निर्वाण ।

जब पूरण ब्रहम विचारिये । तब सकल आत्मा एक ।
काया के गुण देखिये । तो नाना वरण अनेक ।

दादू एकै आत्मा । साहिब है सब माहिं ।
साहिब के नाते मिले । भेष पंथ के नाहिं ।

सब हम देख्या शोध कर । दूजा नाहीं आन ।
सब घट एकै आत्मा । क्या हिन्दू मुसलमान ।

सब घट एकै आत्मा । जानै सो नीका ।
आपा पर में चीन्ह ले । दर्शन है पीव का ।

सुन्दर दास:

आत्मा अखण्ड सदा एकई रहतु है ।

परमात्मा:

हालांकि बीच की गुप्त बातें जो आज तक किसी भी सन्त ने नहीं बतायीं । मैं भी नहीं बताऊँगा । पर फ़िर भी बहुत कुछ स्पष्ट हो जायेगा ।
परमात्मा - सबसे ऊपर । मन बुद्धि वाणी से परे । अचिंतनीय । अवर्णनीय । परमानन्द । सबका मालिक । साहिब
इसके बाद - सतनाम या निःअक्षर या सारशब्द - निरवाणी नाम की अंतिम मंजिल । नाम अपने एकदम शुद्ध रूप में । मायारहित । जिसके लिये कबीर साहिब ने कहा है - आङा शबद कबीर का । डारे पाट उखाङ । और भी कहा है - वाणी पर जो शब्द है । सो सतगुरु के पास । और भी - आदि नाम जो गुप्त है । बूझे विरला कोय । और भी - धर्मा तोहे लाख दुहाई । सार शब्द बाहर नहि जाई । वास्तव में यही आकर सच्चा मोक्ष प्राप्त हो जाता है । क्योंकि इसके ऊपर सिर्फ़ परमात्मा ही है । इसी के लिये कहा गया है -
अद्वैत वैराग कठिन है भाई । अटके मुनिवर जोगी । अक्षर को ही सत्य बतायें । वे हैं मुक्त वियोगी । अक्षरतीत शब्द एक बाँका । अजपा हू से है जो नाका । जो जब जाहिर होई । जाहि लखे जो जोगी । फ़ेरि जन्म नहीं होई । ये हैं असली नाम । निरवाणी नाम ।
इसके नीचे - कुछ गुप्त बात ।
इसके नीचे - पाँच स्थान गुप्त ।
इसके बाद - नाम की अलग अलग मंजिले ।
इसके बाद - सतलोक यानी सचखन्ड । या अमरलोक ।
इसके नीचे - बृह्माण्ड शुरू । यानी बृह्म की चोटी से उतरना आरम्भ ।
इसके नीचे - नाम अभी सीधा है । यानी जीवात्मा अपने स्वरूप को जानता है ।
इसके कुछ और नीचे आते ही - माया का क्षेत्र यानी भँवर गुफ़ा । सोहं..आदि शुरू हो गया । और आत्मा माया से प्रभावित होने लगी । उसमें " अहम " मूल जुङा । अंतकरण मन बुद्धि चित्त अहम आदि बने । और आत्मा जीव भाव से जुङने लगी । नाम उल्टा हो गया । { इसीलिये वाल्मीकि ऋषि को यही उल्टा नाम दिया गया था । उल्टा

नाम जपा जग जाना । वाल्मीकि भये बृह्म समाना । }आत्मा अपनी पहचान भूलने लगी । अन्ड । बृह्माण्ड से नीचे उतरकर पिन्ड में आते ही - जीवात्मा पूरी तरह अपने को भूल गया । और अपनी पहचान यानी खुद को जीव ही मानने लगा । और ये काल माया का कैदी हो गया । अतः सन्तमत के मध्य मार्ग यानी बीच के रास्ते में निरवाणी नाम की मायाक्षेत्र के अनुसार अलग अलग स्थिति और धुनि बनती हैं । जैसे ररंकार..निरंकार आदि । जैसा कि ऊपर बताया । सबसे लास्ट में असली नाम है ।

क्योंकि सबसे पहले सिर्फ़ परमात्मा ही था । उसने संकल्प किया । मैं अनेक हो जाऊँ । और फ़िर ये सृष्टि माया के परदे पर बनी । क्योंकि प्रकृति रूपी ये सृष्टि जङ है । इसमें सिर्फ़ परमात्मा ही चेतन है । और चेतनता सृष्टि के कण कण में नजर आती ही है । अतः वो हमारे अन्दर ही क्या सर्वत्र है ।

- परन्तु वेदों में ॐ' नाम जो केवल ब्रह्म की साधना का मंत्र है । उसी को वेद पढ़ने वाले विद्वानों ने अपने आप ही विचार विमर्श करके पूर्ण ब्रह्म का मंत्र जानकर वर्षों तक साधना करते रहे । प्रभु प्राप्ति हुई नहीं । अन्य सिद्धियाँ प्राप्त हो गई । क्योंकि गीता अध्याय 4 श्लोक 34 तथा यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 10 में वर्णित तत्वदर्शी संत नहीं मिला । जो पूर्ण ब्रह्म की साधना 3 मंत्र से ? बताता है । इसलिए ज्ञानी भी ब्रह्म (काल) साधना करके जन्म मृत्यु के चक्र में ही रह गये ।

- परन्तु पूर्ण परमात्मा की 3 मंत्र ? की वास्तविक साधना बताने वाला ? तत्वदर्शी सन्त न मिलने के कारण ये सब मेरी ही (अनुत्तमाम) अति अश्रेष्ठ मुक्ति (गति) की आस में ही आश्रित रहे । अर्थात मेरी साधना भी अश्रेष्ठ है ।

- गीता अध्याय 9 के श्लोक 20, 21 में कहा है कि - जो मनोकामना (सकाम) सिद्धि के लिए मेरी पूजा तीनों वेदों में वर्णित साधना शास्त्र अनुकूल करते हैं । वे अपने कर्मों के आधार पर महास्वर्ग में आनन्द मना कर फिर जन्म मरण में आ जाते हैं । अर्थात यज्ञ चाहे शास्त्रानुकूल भी हो । उनका एक मात्र लाभ सांसारिक भोग । स्वर्ग । और फिर नरक व 84 चौरासी लाख योनियाँ ही हैं । जब तक तीनों मंत्र (1 ओ3म ॐ तथा 2 तत व 3 सत सांकेतिक) पूर्ण संत से प्राप्त नहीं होते ।

- सामवेद के श्लोक न 822 में बताया गया है कि जीव की मुक्ति 3 नामों से होगी । प्रथम - ॐ । दूसरा सतनाम - तत । और तीसरा सारनाम - सत । यही गीता भी प्रमाण देती है कि ॐ तत सत । और श्री गुरु ग्रन्थ साहब भी यही नाम जपने का इशारा कर रहा है । जो 1 सच्चा नाम है । इसी तरह यह सार नाम भी ।

- अकेला ॐ मन्त्र किसी काम का नहीं है । ये तीनों नाम व नाम देने की आज्ञा मुझे गुरुदेव स्वामी रामदेवानन्द जी महाराज द्वारा बख्शीश है । जो कबीर साहब से पीढी दर पीढी चली आ रही है ।

उपरोक्त सन्त कबीर साहब की बात कहते हैं । अब देखिये । खुद कबीर साहब क्या कह रहे हैं -

ओंकार है वेद को मूला । ओंकार में सब जग भूला । है ओंकार निरंजन जानो । पुरुष नाम सो गुप्त अमानो ।

योग, यज्ञ, जप, संयम, तीरथ, ब्रत, दान । नवधा (नौ भाग) वेद किताब है । झूठ का बाना ।

वेद पुरान सब झूठ है । हमने इसमें पोल देखा । अनुभव की बात कहे कबीरा । घट का परदा खोल देखा ।

पुरान कुरान सब बाते है । ये घट का परदा खोल देखा । अनुभव की बात कहे कबीर । यह सब है झुठी पोल देखा

वेद किताब दोनों फंद पसारा । तेहि फंदे पड़ा आप बिचारा । वेद पुराण किताब कुराना । नाना भ्रांती बखाना ।

चार वेद ब्रहमा निज ठाना । मुक्ति का मर्म उनहुँ न जाना ।

सुमृति वेद पढ़े असरारा (बार-बार) पाखण्ड रूप करें अहंकारा । वेद पुराण पढ़त अस पांडे । खर चन्दन जैसे भारा

निराकार तै वेद । आदि भेद जाने नहीं । पण्डित करत उछेद । मते वेद के जग चले ।

स्मृति शास्त्र पुराण बखाना । ता में सकल जीव उरझाना । जीवन को ब्रहमा भटकावा । अलख निरंजन ध्यान दृढावा

वेद मते सब जीव भरमाने । सत्यपुरुष को मर्म न जाने । निरंकार कस कीन्ह तमासा । सो चरित्र बूझो धर्मदासा ।

वेद जाहि ते ताहि बखाने । सत्यपुरुष का मर्म न जाने । कोई इक हंस विवेकी होवे । सत्य शब्द जो गहि बिलोवे

तुलसी साहिब हाथरस वाले जी

निरंकार को नेत बखाना । निरंकार के परै न जाना ।

वेद निरंकार तत्व को नेति नेति कह रहे है और निरंकार के परे स्थित उस तत्व को नहीं जानते है ।

।। प्रश्न माना पंडित ।।
तुलसी स्वामी मुक्ति न पावा । ये पुरान झूठे गोहरावा ।
सिम्रित सास्तर झूठ बनावा । ये तौ आदि अंत चलि आवा ।

क्या मुक्ति नहीं मिली किन्तु ये पुराण मुक्ति-मुक्ति झूठे ही बुलाते है । क्या स्मृतियाँ एवं शास्त्र झूँठ बनाये गए हैं और आदि से अंत तक चली आ रही है ये बातें क्या असत्य हैं ।

।। उत्तर तुलसी साहिब ।।
माना सुनियौ काल पसारा । वो दयाल पद इन से न्यारा ।
ब्रहमा बिष्णु काल की जारा । इन सब कीन्हा झूठ पसारा ।
कर्म कराइ जगत बौराया । ता से आदि अंत नहीं पाया ।

हे माना पंडित सुने ! यह काल चारों ओर फैला हुआ है और वह परम दयाल पद इन सबसे न्यारा है । ब्रहमा, विष्णु भी काल से कवलित हैं - और इनसे सम्बन्धी बातें मिथ्या हैं कर्म में फंसा कर सारे संसार को इन्होंने पागल बना रखा है - इसलिए इन्हें आदि अंत का ज्ञान नहीं होता ।

88

* ब्रह्म गायत्री जाप *

निम्नलिखित जाप पूर्ण गुरु द्वारा प्राप्त करके सुरति, निरति, मन लगाकर प्रतिदिन 108 बार करने से अर्थ (धन), धर्म, काम (मनोकामना) व मोक्ष (मुक्ति) प्राप्ति का एक मात्र सरल साधन है।

1. "सत सुकृत अविगत कबीर" साहेब कबीर जी का
2. "ॐ" जाप श्री सावित्री-ब्रह्मा जी का
3. "किलियम्" जाप श्री गणेश जी का
4. "हरियम्" जाप श्री लक्ष्मी-विष्णु जी का
5. "श्रीयम्" जाप श्री महालक्ष्मी (शेरोंवाली) का
6. "सोहम्" जाप श्री पार्वती-शंकर जी का
7. "सत्यम्" जाप श्री सत्यपुरुष जी का

रामपाल द्वारा अपने शिष्यों को दिए हुए मन्त्र इस प्रकार है :

"**काल के मन्त्र:** सत सुकृत अविगत कबीर
ओ3म् ओ3म् ओ3म् ओ3म्
किलियम् किलियम् किलियम् किलियम्
हरियम् हरियम् हरियम् हरियम्
श्रीयम् श्रीयम् श्रीयम् श्रीयम्
सोहं सोहं सोहं सोहं
सत्यम् सत्यम् सत्यम् सत्यम्

सतनाम: ॐ सोहं

सारनाम: ॐ सोहं सत्यम"

ये सब (वर्णात्मक नाम) काल के मन्त्र हैं । असली सतनाम जाप निर्वाणी और ध्वनि रूप है । जिसको सदगुरु जाग्रत करता है । वैसे वह सबके अन्दर है । पर प्रकट नहीं । सदगुरु उसको अंतर प्रकाश के साथ प्रकट करते हैं ।

सत्त शब्द तन सागर माहीं रतन अमोलक पीया । आपा तजै धसै सो पावै ले निकसै मरजीया । - भीखा साहब

सत्त शब्द तन माँहिं रहाई । वा को छाँड़ि खानि को जाई ।

मूल शब्द घट माहिं विराजे । शून्य शिखर अक्षर धुन साजै । ताकी महिमा तुलै न कोई । ऐसा साधू विरला कोई ।

पुरुष नाम तुम जानो भाई । हमते काह करहु चतुराई । पुरुष नाम है तुम्हारे पासा । तुम्हारे घट में सत्य निवासा

सतनाम या सारनाम या सारशब्द या पुरुष नाम एक ही बात है ।

अब देखिये कबीर जी क्या कह रहे है -

जंत्र मंत्र सब झूठ है मति भरमो जग कोय । सत शब्द जाने बिना कागा हंस न होय ।

जंत्र मंत्र का आडम्बर सब झूठ है । इसके चक्कर में पडकर अपना जीवन व्यर्थ न गँवाये । गूढ ज्ञान के बिना कौवा कदापि हंस नहीं बन सकता । अर्थातः- दुर्गुण से परिपूर्ण आज्ञानी लोग कभी ज्ञानवान नहीं बन सकते ।

जहाँ तक मुख वाणी कहीं । तहाँ तक काल का ग्रास । वाणी परे जो शब्द है । सो सतगुरु के पास ।

असली सतनाम वाणी से परे है । ये 52 अक्षरों में भी नहीं आता । ये अक्षरों से भी परे है ।

बावन अक्षर मय संसारा । नि:अक्षर सो लोक पसारा । सोई नाम है अक्षर निवासा । कायाते बाहर प्रकाशा ।

बिन सद्गुरु कोई नाम न पावै । पूरा गुरु अकह समझावै ।
अकह नाम वह कहा न जाई । अकह कहि कहि गुरु समुझाई ।

लिखो न जाय कहै को पारा । हैं अक्षर में जो पावै निरबारा ।
लिखो न जाय लिखामें नाहीं । गुरु बिन भेंट न होवे ताहीं ।

शब्द कहो तो शब्द हू नाहीं । शब्द पड़ा माया की छाहीं ।
शब्द न बिनसे बिनसे देही । हम साधु हैं शब्द सनेही । (बिनसे - नष्ट होना)

कहन सुननकी है नहीं । देखा देखी नाय ।
सार सबद जो चिन्ही । सोई मिलेगा आय ।

काया नाम सबै गोहरावे । नाम विदेह विरला कोई पावे ।
जो युग चार रहे कोई कासी । सार शब्द बिन यमपुर वासी ।

सार शब्द विदेह स्वरूपा । निःअक्षर वह रूप अनूपा ।
तत्व प्रकृति भाव सब देहा । सार शब्द निःतत्व विदेहा ।

बिनु रसना के जाप समाई । तासों काल रहे मुरझाई ।

नहिं वह शब्द न सुमरन जापा । पूरन वस्तु काल दिखदापा ।

आदि सुरति पुरुष को आही । जीव सोहंगम बोलिये ताही ।

अब अनुराग सागर से देखिये -

कबीर साहब बोले - हे धर्मदास ! मोक्ष प्रदान करने वाला सार शब्द विदेह स्वरूप वाला है । और उसका वह अनुपम रूप निःअक्षर है । 5 तत्व और 25 प्रकृति को मिलाकर सभी शरीर बने हैं । परन्तु सार शब्द इन सबसे भी परे विदेह स्वरूप वाला है ।

कहने सुनने के लिये तो भक्त संतो के पास वैसे लोक वेद आदि के कर्मकांड उपासना कांड ज्ञानकांड योग मंत्र आदि से सम्बन्धित सभी तरह के शब्द हैं । लेकिन सत्य यही है कि सार शब्द से ही जीव का उद्धार होता है । परमात्मा का अपना सत्यनाम ही मोक्ष का प्रमाण है । और सत्यपुरुष का सुमिरन ही सार है ।

बाह्य जगत से ध्यान हटाकर अंतर्मुखी होकर शांत चित्त से जो साधक इस नाम के अजपा जाप में लीन होता है । उससे काल भी मुरझा जाता है । सार शब्द का सुमरन सूक्ष्म और मोक्ष का पूरा मार्ग है ।

इस सहज मार्ग पर शूरवीर होकर साधक को मोक्ष यात्रा करनी चाहिये ।

हे धर्मदास ! सार शब्द न तो वाणी से बोला जाने वाला शब्द है । और न ही उसका मुँह से बोलकर जाप किया जाता है ।

सार शब्द का सुमरने करने वाला काल के कठिन प्रभाव से हमेशा के लिये मुक्त हो जाता है । इसलिये इस गुप्त आदि शब्द की पहचान कराकर इन वास्तविक हँस जीवों को चेताने की जिम्मेवारी तुम्हें मैंने दी है ।

हे धर्मदास ! इस मनुष्य शरीर के अंदर अनंत पंखुड़ियों वाले कमल हैं । जो अजपा जाप की इसी डोरी से जुङे हुये हैं । तब उस बेहद सूक्ष्म द्वार द्वारा मन बुद्धि से परे इन्द्रियों से परे सत्य पद का स्पर्श होता है । यानी उसे प्राप्त किया जाता है ।

शरीर के अन्दर स्थित शून्य आकाश में अलौकिक प्रकाश हो रहा है । वहाँ आदि पुरुष का वास है । उसको पहचानता हुआ कोई सदगुरु का हँस साधक वहाँ पहुँच जाता है । और आदि सुरति (मन बुद्धि चित्त अहम का योग से एक होना) वहाँ पहुँचाती है ।

हँस जीव को सुरति जिस परमात्मा के पास ले जाती है । उसे " सोहंग " कहते हैं । अतः हे धर्मदास ! इस कल्याणकारी सार शब्द को भलीभांति समझो ।

सार शब्द के अजपा जाप की यह सहज धुनि अंतर आकाश में स्वतः ही हो रही है । अतः इसको अच्छी तरह से जान समझकर सदगुरु से ही लेना चाहिये । मन तथा प्राण को स्थिर कर मन तथा इन्द्रिय के कर्मो को उनके विषय से हटाकर सार शब्द का स्वरूप देखा जाता है । वह सहज स्वाभाविक ध्वनि बिना वाणी आदि के स्वतः ही हो रही है । इस नाम के जाप को करने के लिये हाथ में माला लेकर जाप करने की कोई आवश्यकता ही नहीं है । इस प्रकार वेदेह स्थित में इस सार शब्द का सुमरन हँस साधक को सहज ही अमरलोक सत्यलोक पहुँचा देता है ।

सत्यपुरुष की शोभा अगम अपार मन बुद्धि की पहुँच से परे है । उनके एक एक रोम में करोंङो सूर्य चन्द्रमा के समान प्रकाश है । सत्यलोक पहुँचने वाले एक हँस जीव का प्रकाश सोलह सूर्य के बराबर होता है ।

***

अब - ॐ तत सत का रहस्य देखते हैं ।

जैसा कि आप नीचे चित्र में देख सकते है । "ॐ तत सत" ब्रहम (काल) की ओर संकेत करता है न कि परमात्मा (पूर्ण ब्रहम) की ओर । और न ही इस श्लोक में परमात्मा का जिक्र है । न ही परमात्मा ने वेदों और यज्ञ की रचना की है । वेद काल निरंजन की स्वांस से प्रकट हुआ है । और रामपाल ने अर्थ का अनर्थ किया हुआ है ।

त्यागो पवन रहित पुनि जबहीं । निकसेउ वेद स्वांस संग तबहीं ।
स्वांस संग आयउ सो वेदा । बिरला जान कोई जाने भेदा । (अनुराग सागर)

और फ़िर सबसे बङी बात ये "ॐ तत सत" **वाणी का शब्द** है ।
जबकि कबीर साहब का नाम **निर्वाणी** (धुनात्मक) है ।

बेद पुकारत नेति नेति । बेदांत बरनि ताहि ब्रहम कहेत ।
संत ताहि कहै काल गैल । वे दयाल गति भिनि अपेल ।

वेद नेति नेति पुकारते रहते है । वेदांत ने उसका ब्रहम रूप में वर्णन किया है ।
संत गण उसे काल का गलियारा कहते है । उन परम पुरुष दयालु की गति कुछ भिन्न है ।

वेद पुराण भागवत गीता । पढ़ि गुणि कहैं काल हम जीता । तीनों गुण ईश्वर ठहरायी । माया फन्दा ताहि बनाई ।

ओंकार है वेद को मूला । ओंकार में सब जग भूला । है ओंकार निरंजन जानो । पुरुष नाम सो गुप्त अमानो ।

तीन बार में नाम जाप का प्रमाण :--



अध्याय 17 का श्लोक 23

ॐ, तत्, सत्, इति, निर्देशः, ब्रह्मणः, त्रिविधः, स्मृतः,
ब्राह्मणाः, तेन, वेदाः, च, यज्ञाः, च, विहिताः, पुरा।।23।।

अनुवाद : (ॐ) ब्रह्म का (तत्) यह सांकेतिक मंत्र परब्रह्म का (सत्) पूर्णब्रह्म का (इति) ऐसे यह (त्रिविधः) तीन प्रकार के (ब्रह्मणः) पूर्ण परमात्मा के नाम सुमरण का (निर्देशः) संकेत (स्मृतः) कहा है (च) और (पुरा) सृष्टीके आदिकालमें (ब्राह्मणाः) विद्वानों ने बताया कि (तेन) उसी पूर्ण परमात्मा ने (वेदाः) वेद (च) तथा (यज्ञाः) यज्ञादि (विहिताः) रचे।



ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा।।२३।।

अर्जुन! ॐ, तत् और सत् – ऐसा तीन प्रकार का नाम '**ब्रह्मणः निर्देशः स्मृतः**'– ब्रह्म का निर्देश करता है, स्मृति दिलाता है, संकेत करता है और ब्रह्म का परिचायक है। उसी से '**पुरा**'– पूर्व में (आरम्भ में) ब्राह्मण, वेद और यज्ञादि रचे गये हैं। अर्थात् ब्राह्मण, यज्ञ और वेद ओम् से पैदा होते हैं। ये योगजन्य हैं। ओम् के सतत चिन्तन से ही इनकी उत्पति है और कोई तरीका नहीं है।

संत कबीर जी ने भगवद गीता की व्याख्या उग्रगीता में की हुई है । अब आप स्वंय ही कबीर जी द्वारा भगवद गीता के अध्याय 17 की व्याख्या का अंश देख ले ।

उग्रगीता

अथ सप्तदशोऽध्यायः

तीनि नाम त्रिगुणको वर्णन

तीनि नाम वर्णों मैं त्रिगुणा । जाते सृष्टि होत है सगुना ॥
वह अंतुतु है मति सोई । तीनिउ नाम एक सम होई ॥
निज मंत्रहि मैं भाषि सुनाया । ताको मर्म न काहू पाया ॥
पाक रसोइ छूति जो होई । वो अंततू सति है सोई ॥
पातक छूति रहैं नहिं कोई । यह तो मंत्र पवित्र कराई ॥
पावै प्रसाद जो सकल जहाना । सुमिरै पावै पद निर्वाना ॥
सब कारज सुमिरे त्रै नामा । पूरण होइ सकल विधि कामा ॥
योग सिद्धि सत्रह अध्याई । सो तो पूरण वर्णि सुनाई ॥

कबीर उवाच

कहै कबीर सुनु धर्मनिराया । तीनिउ गुण वरतै संसारा ॥
साधू कहैं कोइ कर्म न लागै । तन मनते इच्छा कह त्यागै ॥
कर्म करै कर्ता न कहावै । मन सो कुमारग जान न पावै ॥
मारग अगम साधुकर होई । कृष्ण अपने मुख भाषा सोई ॥
वेद पुराण पार नहिं पावै । जहँवा साधू ध्यान लगावै ॥
वेद कितेब दोउ है फन्दा । यहि ते लागि रहैं जग धन्धा ॥

यहाँ कबीर जी बता रहे है कि कृष्ण ने अर्जुन को ब्रहम ज्ञान दिया था । न कि परमातम ज्ञान ।
विस्तार से जानने के लिए उग्रगीता में देखे ।

तुलसी साहिब हाथरस वाले जी भी ऐसा ही कहते है ।
गीता ज्ञान ब्रहम समझावा । अरजुन छले नर्क बिच नावा ।

उग्रगीता

अथ पञ्चदशोऽध्यायः

कबीर उवाच

कहै कबीर धर्मदास सुजाना । ब्रह्मज्ञान यह कृष्ण बखाना ॥
ब्रह्मज्ञान ऐसा है सोई । उग्र ज्ञान जानै नहिं कोई ॥
जिन जाना तिन ही पहिचाना । जैसे गूँगे सपना जाना ॥
गूंगा शैन जो गूंगा जानी । अभिअन्तर सो ले पहिचानी ॥
मैं तोहि प्रगटे कहौं बखानी । गुप्त शैन कोइ गूंगे जानी ॥
अगम अपार शब्द निर्धारा । बूझै आदि अन्त सुख सारा ॥
नहिं बोली भाषा महँ आवे । नहीं रूप कछु वरणि सुनावे ॥
हाथ न पांव सुर्ति नहिं जाके । कहो कैसे कोउ पावै ताके ॥
दृष्टि अदृष्टि न देखन आवे । सतगुरु अवर न वरण लखावे ॥

छन्द—परण अवरण भाव बूझो क्षर अक्षरको भेद जो ।
क्षर विनशित अक्षर सुस्थित अथ कहे यह भेद जो ॥
अक्षर माहिं नि दरशय गुरू भेद लखाइया ।
कोटि वेद पुराण वांचे सतगुरु भेद लखाइया ॥

सोरठा—अक्षर भेद है सार बहु विधि कहो पुकारिकै ।
बूझै बूझनिहार, आदि पुरुष सुख शब्द है ॥

इति श्रीमदुग्रगीताब्रह्मज्ञानयोगमते कबीरधर्मदाससंवादे पुरुषो-
त्तमयोग व्याख्यानो नामपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ।

प्रश्न 4- रामपाल के अनुसार सतनाम और सारनाम दोनों अलग हैं ? क्या पहले सतनाम की दीक्षा लेनी पड्ती है । फ़िर सारनाम की दीक्षा लेनी पड्ती है ?

नाम तो वास्तव में सिर्फ़ एक ही है । जो निर्वाणी और ध्वनि रूप है । लेकिन अलग अलग मंजिलों पर इसकी स्थिति, उपाधि, चेतन पुरुष और विज्ञान भिन्न है । यह ऐसी ध्वनि है । जिसके समान संसार में कोई ध्वनि नहीं है । ध्वनि की उत्पति आत्मा (चेतन) की स्फ़ुरणा से हो रही है । इसी ध्वनि से सम्पूर्ण सृष्टि में लगातार (मनुष्य के लिये) एक अकल्पनीय प्रकंपन हो रहा है ।

नाम अनादि एक को एक । भीखा सब्द सरूप अनेक ।

एक नाम में निजकै गहिलौं । तो छूटल संसारी । एक नाम बंदेका लेखों । कहैं कबीर पुकारी ।

एक नाम को अनेक विचारा । जिन जाना तिन उतरे पारा ।

निर्मल नाम एक है श्वेता । निर्मल सो जो नामहिं लेता ।

एकनाम चीन्हे बिना भटकि मुवा सब कोय । साहब इनहि बनाइके । आपुइ रहै निनार । सो निज नाम जाने विना । कैसे उतरे पार ।

सतनाम की महिमा जानै । मन बच करमै सरना आनै । एक नाम मन बच करि लेई । बहुरि न या भवजल पग देई ।

एक नाम जाने बिना । नहिं मिटे करम का अंक । तबही से सच पाइये । जब होय जीव निसंक ।

जग में बहु परपंच । तामें जिव भूला सबै । नहिं पावै कोइ संच । एक नाम जाने बिना ।

विविध रूप की भक्ति में । फिरि फिरि धरे शरीर । एक नाम बिन मुक्ति नहिं । ऐसी कहैं कबीर ।

सबसे ऊपर सारशब्द या निःअक्षर गुप्त है । समस्त शक्ति इसी से उत्पन्न है । जब साधक अन्तःकरण एकदम निर्मल और वासना शून्य हो जाता है । यह शब्द प्रयास से नहीं । बल्कि एकदम अजीव सा झपाटा मारने के अन्दाज में प्रकट होता है । और साधक को खीचकर पार डाल देता है । इसके बाद यहीं परमात्म साक्षात्कार होता है । इसी के लिये कबीर ने कहा है - आङा शब्द कबीर का डारे पाट उखाङ । तथा जैसे आसमान से चील अपने किसी शिकार पर झपट्टा मारती है । ऐसा भी एक दोहा है ।
इसके बाद शक्ति की मंजिल है । यह तथा अन्य ध्वनि साधक को अभ्यास में आराम से सुनाई देती है । इसके बाद निरंजन, ॐकार, ररंकार, सोहं है । यह प्रमुख हैं । लेकिन फ़िर इनकी शाखाओं में हंग झंग आदि अन्य ध्वनियां हैं । जो अलग अलग दीपों में चेतना चुम्बकत्व और विद्युत्व का संचार करती हैं । वास्तव में यह ध्वनियां ही गुरुत्व (चुम्बकत्व) द्वारा सम्पूर्ण सृष्टि को एक सूत्र में बांधे रखती हैं ।

निःअक्षर निर्वाणी नाम की अंतिम मंजिल है ।

सत कर आदि सुरति घटमाहीं । निःअक्षर में आनि समाई । सूरति निःअक्षर से आई । सूरति सोहंग को उपजाई

आदि नाम है अक्षर माहीं । गुरु बिन नर्क पुन छूटे नाहीं । सोहं में निःअक्षर रहाही । बिन गुरु के कौन देह लखाई

सोहं शब्द हम जग में लाए । सार शब्द हम गुप्त छुपाए ।

सतगुरु सोहं नाम दे गुझ बीज विस्तार । बिन सोहं सोझे नहीं मूल मंत्र निज सार ।
गुझ=गुप्त । सोझे=पैवस्त न होना

निहअक्षर ते अक्षर भाया । अक्षर आदि अमी उपजाया ।
आदि अमी किये सकल पसारा । फल रहा कछु नाहिं न न्यारा ।
सोहं कला अमीके माहीं । श्वेत बीज झलके तेहि ठाहीं ।

प्रथमहि ब्रहम स्व इच्छा ते । पाँचों शब्द उचारा । सोऽहं निरंजन ररंकार और शक्ति ओंकारा ।

- सबसे पहले ब्रह्म ने स्वेच्छा से पाँच शब्द (ध्वनियां) प्रकट किये । इनमें - सोहं की ध्वनि । दूसरी निरंजन यानी कालपुरुष की ध्वनि । ररंकार की ध्वनि । शक्ति (माया) की ध्वनि । और ॐकार की ध्वनि है ।

विशेष - वास्तव में ये ध्वनियां भी एक एक न होकर दो दो हैं । इस वाणी का सन्देश ही यह है कि अधिकतर लोग अपनी मनमुखता के चलते इन ध्वनियों में अन्तर नहीं समझ पाते । और कोई कोई तो किसी एक ध्वनि (के सुनाई देने) को ही सत्य (शब्द या सार शब्द) मानकर जान लेता है कि उसे अन्तिम लक्ष्य प्राप्त हो गया ।

पाँच शब्द पाँच है मुद्रा सो निश्चय कर जाना । आये पुरुष पुरान निःअक्षर तिनकी खबर न आना ।

- ये पाँच शब्द पाँच मुद्राओं को ही साधु सत्य मान लेते हैं । लेकिन वास्तविक पुरुष और निःअक्षर की खबर तक नहीं पता होती ।

नौ नाथ चौरासी सिद्ध लों पाँच शब्द में अटके । मुद्रा साध रहे घट भीतर फ़िर औंधे मुख लटके ।

- 9 नाथ और 84 सिद्ध ये सभी इन पाँच शब्दों में ही अटक (उलझ) कर रह गये । शरीर के अन्दर योग क्रियाओं द्वारा मुद्राओं को साधते रहे । और फ़िर औंधे मुँह हुये । यानी सत्य से वंचित ही रहे ।

पाँच शब्द पाँच है मुद्रा लोक दीप यम जाला । कहे कबीर अक्षर के आगे निःअक्षर का उजियाला ।

अब देखिये । सबसे महत्वपूर्ण बात - ये पाँच शब्द । पाँच मुद्रायें । लोक दीप । ये सब यम (काल) का जाल ही हैं । इसलिये कबीर ने स्पष्ट किया है कि - इन अक्षरों (इन ध्वनियों या शब्द) के भी पार या आगे सत्य या निःअक्षर है । निःअक्षर का अर्थ ही है - अक्षर से भी अलग ।

तुलसी साहिब हाथरस वाले जी भी यही कहते है

घट में बैठे पाँचों नादा । घट में लागी सहज समाधा ।

पांचो नाम { सोऽहं, निरंजन, ररंकार, शक्ति, ओंकारा } जीव जब भाखा ।
छठवां नाम (सारशब्द या निःअक्षर) गुप्त करि राखा । पांचो नाम काल के जानो । तब दानी मन संका आनो ।

विशेष - निःअक्षर या सारशब्द या सारनाम या सतनाम या आदिनाम एक ही बात है । पर निःअक्षर अधिक सटीक शुद्ध और वैज्ञानिक शब्द है ।

" निअक्षर " यानी " सार शब्द " जो की असली नाम है । इसका मतलब ये न लगा लेना कि " निअक्षर " शब्द असली नाम है । बल्कि असली नाम (जो भी है ?) को " निअक्षर " कहते हैं । यानी ये अक्षर से भी परे है । निःअक्षर ही अन्तिम है । इसके बाद फ़िर कुछ नहीं । इसी के लिये कहा है -
जाप मरे अजपा मरे अनहद हू मर जाये । सुरति समानी शब्द में ताको काल न खाय ।

सार शब्द विदेह स्वरूपा । निःअक्षर वह रूप अनूपा । तत्व प्रकृति भाव सब देहा । सार शब्द निःतत्व विदेहा ।
सार शब्द = निःअक्षर = निःतत्व

निहअक्षर है सार । अक्षर है लखि पावई । धर्मनि करो विचार । निहअक्षर निहतत्व है ।
निःअक्षर = सार शब्द = निःतत्व

सार शब्द नि:अक्षर आहिं । गहै नाम तेहि संशय नहीं । सार शब्द जो प्राणी पावै । सत्त लोक माहिं जाय समावै ।
सार शब्द = नि:अक्षर

जिमि व्यंजन तिमि ज्ञान बखाना । वंश छाप सतरस सम जाना । चौदह कोटि है ज्ञान हमारा । इनते सार शब्द है न्यारा ।

सार शब्द साहब का न्यारा । सोई शब्द कहँ गुरु उचारा । सार शब्द काल नहिं पाई । तीन देवकी कौन चलाई ।

क्षर ही उतपति परलय क्षर ही क्षर ही जानन हारा । चरनदास सुकदेव बतावैं नि:अच्छर है सब सूँ न्यारा ।

सत्तनाम है सबते न्यारा । निर्गुन सर्गुन शब्द पसारा । निर्गुन बीज सर्गुन फल फूला । साखा ज्ञान नाम है मूला ।

सतनाम इनहूँ से न्यारा । ये बावे मुख कही बिचारा । निरगुन कहियत है ओंकारा । सतनाम बिधि अगम अपारा ।
सतनाम = नि:अक्षर

त्रंस नाम तें फिरि फिरि आवै । पूरन नाम परम पद पावै । नहिं आवै नहिं जाय सो प्रानी । सत्तनाम की जेहि गति जानी ।

शब्द अखण्डा और सब खंडा । सार शब्द गरजे ब्रह्मांडा । नि:अक्षर की परिचय पावै । सत्त लोक महँ जाय समावै ।

कबीर सोहं सोहं जप मुए । वृथा जन्म गवाया । सार शब्द मुक्ति का दाता । जाका भेद नहीं पाया ।

सार नाम सतगुरु सो पावे । नाम डोर गहि लोक सिधावे । धर्मराय ताको सिर नावे । जो हंसा नि:तत्व समावे ।

सत गुरु जीव प्रबोध के । नाम लखावै सार । सार शब्द जो कोई गहे । सोई उतरि है पार ।

एक नाम बिन मुक्ति न पावे । कोटिन साधु यत्न करावे । सार नाम की नाहिन आशा । कोटिन नाम करे विश्वासा ।

नौ लख तारा कोटि गियाना । सार शब्द देखहु जसभाना । कोटि ज्ञान जीवन समझावै । वंश छाप हंसा घर जावे ।

कबीर कोटि नाम संसार में । इनसे मुक्ति न होय । आदिनाम गुरु जाप है । बुझै बिरला कोय ।

आदि नाम है मुक्ति का । जप जाने जो कोय । कोटि जाप संसार में । तासे मुक्ति न होय ।

नाम लेत जो काल डराई । सुमिरत नाम हो दूर हो जाई । हमरो नाम सार है भाई । जो चीन्हे तेहि काल न खाई

जौ लगि ताहि न चीन्हहुँ भाई । पाहन पूजि मुक्ति नहिं पाई । कोटि कोटि जो तीर्थ नहाओ । सत्यनाम विन मुक्ति न पाओ ।

सार शब्द जब आवे हाथा । तब तब काल नवावे माथा । सार शब्द निज सार है कहूँ वेद तोय सार । पाईये सो पाईये बाकी काल पसार ।

तत्व तिलक तिहुँ लोक में । सत नाम निज सार । जन कबीर मस्तक दिये । शोभा अगम अपार ।

सतनाम = सार नाम

बूझ लेहु हो हंस । आदि नाम निज सार है । अमर होय ते वंश । जिन जानो निज नाम को ।

आदि नाम = सार शब्द

सत्यनाम है सार । बूझो संत विवेक करि । उतरो भव जल पार । सतगुरु को उपदेश यह ।

सत्यनाम = सार शब्द

चौथा पद सत्यनाम अमाना । विरला पाई करै पद ध्याना । सत्यनाम है सार अनूपा । प्रेम प्रीति गुरु दरस सरूपा

सत्यनाम = सार नाम

सब जग जूठा जानिके । सत्यनाम है सार । सहजे सहज प्रकट भया । सतगुरु शब्द सँभार ।

सत्यनाम = सार शब्द

आदि नाम जो राखे आसा । तापै परे न कालकी फाँसा । आदि नाम नि:अक्षर भाई । ताहि नाम ले लोकहि जाई

आदि नाम = नि:अक्षर

आदि नाम नि:अक्षर सांचा । जीते जीव काल सों बांचा । नि:अक्षर धुन जहवां होई । ताहि जपे नर बिरला कोई ।

आदि नाम = नि:अक्षर

कह ज्ञानी सुनु राय निरंजन । तुम तो भये वंश में अंजन । जीवन कहं मैं आन बचाई । सत्यशब्द सतनाम दृढ़ाई

सत्य शब्द = सतनाम

पुरुष पेड़ निरंजन है डारा । त्रिगुण शाखा प्रति संसारा । सत्य नाम नहिं जाने कोई । सार शब्द बिन गैबी गोई ।

सत्य नाम = सतनाम = सार शब्द

सत्य नाम प्रताप धर्मनि । हंस लोक सिधावाई । जन्म-मरण को कष्ट मैटे । बहुरि न भव जलआवई ।

सत्य शब्द प्रतीत दिढ़ाई । भौसागरते जीव मुक्तताई । जीव असंखन तारे जबही । आवें अंशलोकते तबही ।

सुरति निरति लै लोक सिधाऊँ । आदि नाम लै काल गिराऊँ । सत नाम लै जीव उबारी । अस चल जाऊँ पुरुष दरबारी ।

आदि नाम = सत नाम

तुम तो वाहगुरु को मानौ । वाहगुरु का मरम न जानौ । वाहगुरु मुख भाखि बखानौ । वाहगुरु की महिमा ठानौ ।

चौथा पद सत्तनाम बसेरा । वाह गुरु का वाँही डेरा । वाह गुरु सतनाम कहाये । ये बावे मुख अपने गाये ।

वाहगुरु = सत्तनाम

चौथा पद सतनाम कहाई । तेहि नानक वाहगुरु बताई ।
सत्त नाम वाह गुरु बतावा । तेहि कबीर सत्त सब्द लखावा ।
तीनों नाम एक है भाई । वे बासी चौथे पद माहीं ।

सत्तनाम = वाहगुरु = सत्तसब्द (घट रामायण पृष्ठ न. ५५७)

तुलसी तुच्छ अबूझ । जबै सूझ सूरति लखी । अलख खलक के पार । नि:अच्छर वो है सही ।

है अनाम अक्षर के माहीं । नि:अक्षर कोई जानत नाहीं । धर्मदास तहाँ वास हमारा । काल अकाल न पावे पारा ।

क्षर अक्षर नि:अक्षर पारा । बिनती करे जहाँ दास तुम्हारा । लोक अलोक पाऊँ सुख धामा । चरन सरन दीजे बिसरामा ।

अच्छर जहाँ लगि सब्द बोल में सभी कहाया । अरे हाँरे तुलसी निअच्छर है न्यार संत ने सैन बुझाया ।

आत्मज्ञान में पहली दीक्षा हँसदीक्षा होती है । इसको ही बहुत कम साधक पास कर पाते हैं । हँस से उठ जाने के बाद परमहँस दीक्षा होती है । इसके ऊपर की बात अनुभव से पता चलती है । इसको मौखिक रूप से बताना नियम विरुद्ध है । हँस पास कर लेने का प्रमाण या चिहन ये है कि साधक की शरीर से निकलने की स्थिति बनने लगती है । जिसको सच्चे गुरु साधक द्वारा बताये बिना ही जान जाते हैं ।

प्रश्न 5- रामपाल के अनुसार सारनाम के बिना सतनाम बेकार है ?

इस सृष्टि की कोई भी चीज । कोई भी कार्य । कोई भी क्रिया बेकार नहीं है । कबीर की पुस्तकों को थोड़ा अधिक गहनता से अध्ययन करने से लोग सारनाम की बात करने लगते हैं । पर सारनाम बातों का खेल नहीं है । सारनाम क्या है ? यह इस अखिल सृष्टि का परम गोपनीय रहस्य है । जो सिर्फ़ सतगुरु की कृपा से ही जाना जा सकता है ।

सारनाम या सतनाम एक ही बात होती है । और ये ही सृष्टि के किसी भी ज्ञान या आत्मज्ञान की सर्वोच्च उपलब्धि है । यह ध्वनि निरंतर सुनाई नहीं देती । बल्कि प्रकट होती है । तब जब मन या जीव विचार शून्य ही नहीं । सृष्टि शून्य भी हो जाता है । वास्तव में यही सारनाम असली परमात्मा से मिलाता है । बाकी निरंकार ररंकार हंग छंग आदि की ध्वनियां प्रकट होने के बाद निरंतर सुनाई देती रहती हैं । जिनमें सोहं सबसे स्थूल है । जो बिना किसी दीक्षा बिना किसी ज्ञान के थोड़े ही प्रयास से सांसों पर ध्यान देने से सुन सकते हैं ।

जब सुरति द्वारा अंतर में चढ़ाई की जाती है। तब अक्षर से पार नि:अक्षर (सारशब्द) प्रकट होता है । जब शिष्य में पात्रता और अधिकार की पूर्णता हो जाती है । तब शब्द ध्वनि रूपी सदगुरु शब्द ध्वनि रूपी डोर से ही नियमानुसार उस शिष्य को खींचता है । लेकिन ये भी सच है कि सारशब्द को कोई विरला ही जान पाता है

सार शब्द गुरु बताता नहीं बल्कि उसका पात्र या अधिकारी होने पर अंतर में स्वयं गुरु द्वारा प्रकट होता है अक्षर (स्वर) मन्त्र (शब्द) सभी फूँक से उत्पन्न होते हैं और फूँक चेतना से, चेतना चेतन से इसलिये वास्तविक बात सार शब्द से भी परे है ।

सार शब्द जब आवे हाथा । तब तब काल नवावे माथा ।
सार शब्द निज सार है कहूँ वेद तोय सार । पाईये सो पाईये बाकी काल पसार ।

शब्द अखण्डा और सब खंडा । सार शब्द गरजे ब्रह्मांडा ।
नि:अक्षर की परिचय पावै । सत्त लोक महँ जाय समावै ।

सार शब्द नि:अक्षर आहिं । गहै नाम तेहि संशय नहीं ।
सार शब्द जो प्राणी पावै । सत्त लोक माहिं जाय समावै ।

एकदम वास्तविक स्थिति में सतनाम या नि:अक्षर या सारशब्द सतलोक में है ।

चौथा पद सतनाम कहाई । तेहि नानक वाहगुरु बताई ।
सत्त नाम वाह गुरु बतावा । तेहि कबीर सत सब्द लखावा ।
तीनों नाम एक है भाई । वे बासी चौथे पद माहीं ।
सत्तनाम = वाहगुरु = सत्तसब्द (घट रामायण पृष्ठ न. ५५७)

ॐकार त्रिकुटी के भूपा । ताके परे निरंजन रूपा ।
उत्तर दिस में सोहं सारा । ररंकार पश्चिम के माँही ।

ताके ऊपर शक्ति विराजे । शक्ति ऊपर निःअक्षर गाजे ।

सार शब्द निर्णय का नाम । जासे होत मुक्त का काम ।

सत्त शब्द पहिले परवाना । सो कोई साधु बिरले जाना ।

सत्त शब्द सतलोक निवासा । जहँवाँ सत्तपुरुष कर बासा ।

जो जन होए जौहरी । सो धन ले विलगाय ।
सोहं सोहं जप मुए । वृथा जन्म गवाया ।
सार शब्द मुक्ति का दाता । जाका भेद नहीं पाया ।

चौथा पद सत्यनाम अमाना । विरला पाई करै पद ध्याना ।

सत्यनाम है सार अनूपा । प्रेम प्रीति गुरु दरस सरूपा ।

चौथा पद सत्तनाम बसेरा । वाह गुरु का वाँही डेरा ।

वाह गुरु सतनाम कहाये । ये बावे मुख अपने गाये ।

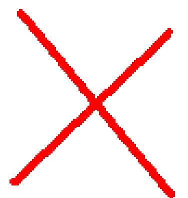
पाँच शब्द पाँच है मुद्रा लोक दीप यम जाला ।
कहे कबीर अक्षर के आगे निःअक्षर का उजियाला ।

छर अच्छर दूनों से न्यारा, 'सो' नाम हमार।
सार सबद को लई के आयी, मिरतू लोक मँझार।। ६।।

हमारा 'नाम' यानी शब्द क्षर और अक्षर (त्रिकुटी और सुन्न) दोनों से न्यारा और परे है। वह 'सो' शब्द है। उसी सार शब्द यानी सत्त शब्द को लेकर मैं मृत्युलोक में जीवों के उद्धार के लिए आया हूँ। ६।

प्रश्न 6- रामपाल " ॐ सोहं " को सतनाम बता रहें हैं । ये बात इनकी ही किताब में लिखी है ?

प्राण संगली-हिन्दी - के पृष्ठ नं. 84 पर राग भैरव - महला 1 - पौड़ी नं. 32
साध संगति मिल ज्ञानु प्रगासै। साध संगति मिल कवल बिगासै।।
साध संगति मिलिआ मनु माना। न मैं नाह ॐ–सोहं जाना।।
सगल भवन महि एको जोति। सतिगुर पाया सहज सरोत।।
नानक किलविष काट तहाँ ही। सहजि मिलै अंमृत सीचाही।।32।।



नानक साहेब कह रहे हैं कि नामों में नाम ''ॐ-सोहं'' यही सतनाम है। इसी से पाप कटते हैं। (किलविष कटे ताहीं)

नानक जी ने " ॐ सोहं " को सतनाम नहीं कहा है ।

ॐ शरीर को (अध्यात्म की टेक्नीकल भाषा में) कहा जाता है । सोहम को भी जिस प्रकार आजकल तमाम मंडल प्रचलित कर रहे हैं । उसे देखकर सिर्फ़ हँसी आती है । जिस तरह ॐ से शरीर बना है । उसी तरह सोहम से मन बना है । सोहम की रगङ से मन समाप्त हो जाता है ।

ओहम से काया बनी । सोहम से मन होय । ओहम सोहम से परे । बूझे विरला कोय ।

वैसे सोहंग भी निर्वाणी है ।

अब देखिये रामपाल की करामात । ये वाणियों को तोड़ मरोड़ कर पेश कर रहा है । सही वाणी नीचे चित्र में देखें ।

कीता पसाउ एको कवाउ । नानक होवै लख द्रयाउ ॥ २७ ॥
अपने धर्म कउ निहचल पालै । ज्योँ प्रीतम गऊ गोपाले बालै ॥
ऐसा हरि जन ज्योँ जल मीना । हरि सिऊँ प्रीति प्रीतम मनु लीना॥
नानक सललै सलल मिलाया । त्रिभवन एको जोति लिउ लाया ॥
बिन सतिगुर मेलि न सकै कोई । सतिगुर मिलै मुक्तिवर होई ॥२८॥
सतिगुर शब्द भगत जसु गाया । अलष पुरुष इक चलत दिखाया ॥

अकथ कथा का तत्तु बीचारु । तूँ भै भंजन अलख अपारु ॥
निकट बसहि संगी मनु माहि । सहज भाय मिलिआ बुध ताहि ॥३१
साध संगति मिल ज्ञानु प्रगासै । साध संगति मिल कवल बिगासै ॥
साध संगति मिलिआ मनु माना । ना मैं ना हऊँ सोहं जाना ॥
सगल भवन महि एका जोति । सतिगुर पाया सहज सरोत ॥
नानक किलविष काट तहाँ ही । सहजि मिलै अंम्रित सीचाही ॥३२॥

प्रश्न 7- रामपाल के मुताबिक " ॐ सोहंग " को लेकर फ़िर योगयात्रा अनुसार सारनाम दिया जाता है ?

मैं फ़िर कहूँगा । सारनाम तो बहुत बडी बात है । परम लक्ष्य ही है । निरंकार ररंकार को भी ठीक से ? बताने वाले गुरु । शिष्य को वहाँ तक पहुँचाने वाले गुरु भी (जो फ़ेमस हैं) मेरी नजर में नहीं आये । मौखिक बातें और प्रक्टीकल ज्ञान में जमीन आसमान का अंतर है ।

****

सोहम या सोहंग या हँसो - वास्तव में सही शब्द (या भाव या क्रिया या धुन) सोऽऽहंऽऽ ही है । लेकिन मजे की बात यह है कि यह बहुत ही रहस्यपूर्ण है । और अदभुत भी है । एक तरह से पूरा खेल ही इसी से हो रहा है । सोहं वृति से ही मन का निर्माण हुआ है । आत्मा में जब विचार स्थिति बनती है । और " अहम " स्वरूप का आकार बनता है । तब वह कहता है - सोहं । जिसको सरलता से समझाने के लिये शास्त्रों में कहा गया है - सोहम । वही मैं हूँ । या स्वयँ । यहाँ विचार करने योग्य बात है कि - जब वही है । और वह है ही । तब ये कहने की कोई आवश्यकता ही नहीं कि - वही मैं हूँ । सोहं । इसलिये जब यह आत्मा शान्त मौन निर्विचार स्थिति में होता है । तब यह पूर्ण मुक्त और (जिसे कहते हैं) परमात्मा ही है । लेकिन जैसे ही यह कोई मनः सृष्टि करता है । ये सोहं वृति हो जाता है । सोहं ॐ से बङी स्थिति है । और बहुत ऊँची स्थिति भी है । भले ही यह काल के दायरे में आती है - ओहम (ॐ) से काया बनी । सोहं से मन होय । ओहम सोहम से परे । जाने बिरला कोय । आत्मा ने पहले मन (अंतकरण) का निर्माण किया । ये ही सूक्ष्म शरीर है । इसका स्थूल आवरण ॐ बाहय स्थूल शरीर है । सोहं से बना ये मन सोहं (के निर्वाणी जाप) जप से ही खत्म हो जाता है । तब मन माया से परे का सच दिखता है । इसलिये कहा है - सोहं सोहं जपना छोङ । मनुआ सुरत शब्द से जोङ । अब क्योंकि सोहं सोहम या सोहंग शब्द प्रचलन में आ गये हैं । इसलिये इनको एक तरह से मान्यता सी मिल गयी है । जैसा तमाम अन्य शब्दों के साथ होता है । जिनका कोई भाषाई वजूद नहीं होता । पर वे धङल्ले से बोलचाल की अशुद्धता या स्पष्टता या स्थानीय लहजे से प्रचलित हो जाते हैं । वही मूल सोहं के साथ हुआ है । लेकिन ये बङा सरल है कि कुछ ही देर में इसका स्वतः सरल परीक्षण हो सकता है । विश्व का कोई भी किसी जाति धर्म का व्यक्ति गहरी सांस लेता हुआ प्रति 4 सेकेंड में प्रथम 2 सोऽऽ और अगले 2 सेकेंड हंऽऽ सुनता हुआ आराम से परीक्षण कर सकता है । जो सांस या दमा के रोगी होते हैं । उनकी तेज स्वांस में तो ये साफ़ साफ़ बहुत तेज और स्पष्ट सुनायी देता है । लेकिन ध्यान रहे । ये निर्वाणी है । और मुँह से कभी - सोंह सोहं नहीं जपा जाता । जैसा कि मैंने एक धार्मिक TV कार्यकृम में (शायद जैन प्रचारक साध्वी द्वारा) इतनी जोर से कहते सुना । जैसे साइकिल में पम्प से हवा डाल रही हो । इसको अजपा कहा जाता है । जिसका मतलब ही यह है कि ये स्वयं हो रहा है । इसको जपना नहीं है । सिर्फ़ इस पर ध्यान देना है । लेकिन बिना सच्ची दीक्षा प्राप्त व्यक्ति को इसके ध्यान से कोई फ़ायदा नहीं होगा । क्योंकि इसको जागृत किया जाता है । वह समय के सच्चे गुरु या सदगुरु द्वारा ही सम्भव है । लेकिन इसका दूसरा पक्ष भी है । आप अकड़ू किस्म के हैं । गुरु का आपकी नजर में कोई महत्व नहीं है । और आप निगुरा ही ध्यान करते हैं । तब यही (यदि क्रोधित हो जाये) हठ योग कहलाता है । जिसके दो ही परिणाम मैंने अब तक देखें है - गम्भीर किस्म का पागलपन और फ़िर मौत । इसलिये स्वांस में होता ये धुनात्मक नाम ही हमारा असली नाम है । और सिर्फ़ इसी से हम वापस अपने उस घर (सचखण्ड या सतलोक) तक पहुँच सकते हैं । जहाँ से जन्म जन्म से बिछुङे हुये हैं । एक तरह से । जिस तरह पहले राजा और अन्य लोग अपने छोटे बच्चे के गले में नाम पता परिचय का लाकेट पहनाते थे । ये परमात्मा ने सभी मनुष्यों के गले में डाला हुआ है । अब फ़िर भी खोये हुये हो । तो मैं क्या करूँ ? आज meditation जिसको लोग पढे लिखों की भाषा में breathing कहते हैं । उससे जो शान्ति सकून सा महसूस करते हैं । उसका मुख्य कारण यही है कि आप तब अपने में क्षणिक रूप से स्थित हो जाते हैं । और ये हर कोई जानता है । आप लंदन पेरिस कहीं भी घूम आओ । असली शान्ति सुख अपने घर आकर ही मिलता है । फ़िर वह कबीर साहब का झोंपङा हो । या राजीव साहब की

आलीशान कोठी । पशु पक्षी भी आखिर शाम को अपने घरोंदे में लौटते हैं । और भी कई उदाहरण सोहं को सिद्ध करते हैं । बुद्ध को जब बहुत दिन तक ज्ञान नहीं हुआ । और वे चिल्ला ही उठे - अब क्या करूँ । ज्ञान के लिये मर जाऊँ क्या ? तब आकाशवाणी (वास्तव में अंतरवाणी) हुयी - हे साधक ! अपने शरीर के माध्यम पर ध्यान कर । बुद्ध सोचने लगे । शरीर का माध्यम क्या है ? क्योंकि बुद्ध बुद्धिमान थे । अतः बहुत जल्द समझ गये । शरीर का माध्यम सिर्फ़ स्वांस ही है । क्योंकि इसके होने से ही शरीर की सत्ता कायम है । फ़िर वे भी पुराने जमाने का बुद्ध meditation करने लगे । आप स्वयं देखो - नाम । काम । दाम । राम । चाम आदि आदि कोई भी क्रिया (जिससे भी आप उस समय जुङे हों) हो । स्वांस में ही लयात्मक बदलाव होगा । बहुत आसान प्रयोग है ।

पर ये हंसो क्या है - आपका ये 5 तत्वों का 5 फ़ुट 5 इंच का शरीर बङा कमाल का है । सोहं यानी मन ऐसी हार्ड डिस्क है । जो दोनों तल (surface) पर काम करता है । यही बात शरीर की भी है । सोहं यानी जीव अवस्था । जो किसी भी सामान्य मनुष्य की है ही । उसमें कुछ भी जोङना घटाना नहीं है । वह तो पहले से ही है । इसमें मन रूपी ये सपाट प्लेट नीचे की तरफ़ (सिर से पैरों की तरफ़) क्रियाशील होती है । और शरीर के चक्रों में स्थित सभी कमल भी नीचे की तरफ़ (सिर से पैरों की तरफ़) और बन्द अवस्था में होते हैं । कुण्डलिनी भी जो सर्पिणी आकार की है । और कूल्हे रीढ के जोङ के पास सुप्त अवस्था में नीचे को मुँह घुसाये बैठी है । मुख्य स्थितियों के साथ । ये जीव और सोहं स्थिति है । अब क्योंकि आपके मन रूपी प्लेट पर 8 खाने बने हुये हैं । जिनके भाव और कार्य इस प्रकार के हैं - काम । क्रोध । लोभ । मोह । मद (घमण्ड) । मत्सर (जलन या ईर्ष्या) । ज्ञान । वैराग । इनमें पूर्व के 6 से आप परिचित हैं हीं । ज्ञान वैराग का खुलासा मैं कर देता हूँ । इन पूर्व 6 भावों से ऊब कर जब कोई शान्ति चाहता है । उसे वैराग स्थिति कहते हैं । तब यह ज्ञान की तलाश में भागता है । और अपनी स्थिति भाव अनुसार ज्ञान यात्रा करता है । क्योंकि चक्रों के कमल बन्द हैं । इसलिये दिव्यता का कोई अनुभव नहीं होता । क्योंकि कुण्डलिनी सोई है । आप अल्प (जीव) शक्ति ही खुद में पाते हैं ।

लेकिन - जैसे ही कोई सच्चा गुरु या सदगुरु आपके स्वांस में गूँजते इस नाम को जाग्रत कर देता है । प्रकाशित कर देता है । तब ये तीनों ही बदल कर क्रियाशील हो उठते हैं । सोहं मन पलट कर हँसो हो जाता है । जन्म जन्म से सोई सर्पिणी कुण्डलिनी जाग उठती है । शरीर चक्रों के कमल सीधे होकर ऊपर की तरफ़ (पैरों से सिर की तरफ़) मुँह करके खिल जाते हैं । अब पहले मन की बात करें । इसके सभी 8 भाव विपरीत होकर दया क्षमा प्रेम भक्ति आदि आदि सदगुणों में खुद बदल जाते हैं । कुण्डलिनी दिव्य शक्ति का संचार करती है । और चक्र कमल खुलने से वहाँ की दिव्यता प्रकाश और अन्य दिव्य लाभ साधक को होने लगते हैं ।

इसलिये सामान्य अवस्था (बिना हँस दीक्षा) में इस सोहं जीव को काग वृति (कौआ स्वभाव) कहा गया है । यह मलिन वासनाओं में सुख पाता है । हँसों की तुलना में विष्ठा इसका भोजन है । लेकिन हँस दीक्षा होने पर यह सत्य को जानने लगता है । और अमीरस (अमृत) इसका भोजन है । तब यह सार सार को गहता हुआ । सुख पाता हुआ । कृमशः (साधक की स्थिति अनुसार) पारब्रहम की ओर उङता है । और अपनी मेहनत लगन भक्ति अनुसार सचखण्ड पहुँचकर भक्ति अनुसार स्थान प्राप्त करता है । यही हँसो स्थिति है ।

कबीर साहेब:

कबीर, कहता हूँ कही जात हूँ । कहूँ बजा कर ढोल ।
स्वाँस जो खाली जात है । तीन लोक का मोल ।

स्वाँस उस्वाँस में नाम जपो । व्यर्था स्वाँस मत खोय ।
न जाने इस स्वाँस को । आवन होके न होय ।

श्वांसा की कर सुमरणी । अजपा को कर जाप ।
परम तत्व को ध्यान धरि । सोहं आपे आप ।

माला है निज श्वांस की । फेरेंगे कोई दास ।
चौरासी भरमे नहीं । कटे कर्म की फांस ।

कबीर जो जन होए जौहरी । सो धन ले विलगाय ।
सोहं सोहं जपि मुए । मिथ्या जन्म गंवाया ।

ओहम से काया बनी । सोहम से मन होय ।
ओहम सोहम से परे । बूझे विरला कोय ।

तुलसी साहब जी हाथरस वाले:

सोहँग का कोई भेद न पाई । सोहँग स्वाँगा हैं नहि भाई ।
तत्त पाँच गुन तीनि की स्वाँसा । सोहँग सुरति कीन्ह पधारा ।

धर्मदास जी:

जेठ जागती जोति की महिमा । परखो संत सुजान ।
अजपा जाप जपो सोहंगम । पावो पद निरबान ।

सावन सार नाम निज जपि ले । यह जप अपने से ।
कर नहिं हलै न डोलै जिभ्या । सोहं जपने से ।
काल नहिं ब्यापै सुपमनि से ।
इंगल पिंगल के मारग की । तुम डोर गहो मन से ।
नाम सोहंग जपो स्वांसा ।

(चरनदास जी की बानी, भाग १, पृ. ४९):

घट में ऊँचा ध्यान शब्द का सोहं सोहं माला ।
घट में बिन सूरज उजियारा राति दिना तहिं सूझै ।

सहजो बाई की बानी:

ऐसा सुमिरन कीजिये । सहज रहै लौ लाय ।
बिनु जिभ्या बिन तालुवै । अन्तर सुरत लगाय ।

हन्सा सोहं तार कर । सुरति मकरिया पोय ।
उतर उतर फिरि फिरि चढ़े । सहजो सुमिरन होय ।

सब घट अजपा जाप है । हंसा सोहं परख ।
सुरत हिये ठहराये कै । सहजो इहि विधि निरख ।

गरीबदास जी:

गरीब, सोहं शब्द हम जग में लाए, सार शब्द हम गुप्त छुपाए ।

सतगुरु सोहं नाम दे गुझ बीज विस्तार ।
बिन सोहं सोझे नहीं मूल मंत्र निज सार ।

सतगुरु परदा खोलहीं परा लोक लेजाहिं ।
सोहं जाप अजपा है बिन रसना है धुन्न ।
गुझ=गुप्त । सोझे=पैवस्त न होना

गरीब नामा छिपा ओम तारी । पीछे सोहं भेद विचारी ।
सार शब्द पाया जद लोई । आवागमन बहुर न होई ।

ज्यूं मकड़ी मुख तार है । पैठे स्वर्ग पाताल ।
ऐसे सोहं सुरति से जीते जौरा काल ।

सुन्न गगन में चढ़त है । सोहं सुरति विमान ।
भुवन चतुर्दश में रमैं । गगन मंडल मैदान ।

गुरु नानक देव जी:

सोहं हंसा जपु बिन माला । तहिं रचिआ जहिं केवल बाला ।
गुर मिलि नीरहिं नीर समाना । तब नानक मनूआ गगनि समाना ।

सोहं शब्दु सदा धुनि गाजै । जागतु सोवै नित शब्दु बिराजै ।
तीन अवस्था के सँगि रहै । जागत सोवत सोहं कहै ।

सोहं हंसा जाँ का जापु । इहु जपु जपै बढ़ै परतापु ।
अंमि न डूबै अगनि न जरै । नानक तिंह घरि बासा करै ।

प्रश्न 8- ये रामपाल बाबा बाकी कबीरपंथ को फ़ेक (जाली) बता रहे हैं ?

अगर आप कबीर धर्मदास संवाद की पुस्तक । अनुराग सागर । एक बार पढ लो । तो ये बाबा ? और वो बाबा ? सबकी असलियत पता चल जायेगी । पर ये सच है कि तमाम कबीरपँथियों में भारी मतभेद है । और वे तमाम ऐसी बात करते हैं । जिनका कबीर साहेब ही विरोध करते थे । ऐसा क्यों है ? और आपके बाबा की सभी बातों का रहस्य ? कबीर ने अनुराग सागर में स्पष्ट कर दिया है ।

रामपाल खुद कालदूत (मन रुपी कालदूत) का अंश है । देखिये कबीर वाणी (अनुराग सागर) से प्रमाण:

अब मैं आठवें पन्थ बताऊं । अकिल भंग दूत समझाऊं ।
परमधाम कहि पंथ चलावे । कुछ कुरान कुछ वेद चुरावे ।
कुछ कुछ निरगुण हमरो लीन्हा । तारतम्य पोथी इक कीन्हा ।
राह चलावे ब्रह्म का ज्ञाना । करमी जीव बहुत लपटाना ।

अब मैं आठवें पंथ को बताता हूँ । और उसके चलाने वाले अकिल भंग दूत के बारे में समझाता हूँ । वह परमधाम (सतलोक) कहकर अपना पंथ चलायेगा । कुछ कुरआन तथा वेद की बातें चुराकर अपने पंथ में शामिल करेगा ।

वह कुछ कुछ मेरे निर्गुण मत की बातें लेगा । और उन सब बातों को मिलाकर एक पुस्तक (ज्ञान गंगा) बनायेगा ।

इस प्रकार जोङ जाङ कर वह बृह्म ज्ञान का पंथ चलायेगा । उसमें कर्मी जीव बहुत लिपटेंगे ।

यहि विधि प्रगटे यमदूता । जीवन से कह ज्ञान बहूता ।
फिरि फिरि आवे फिरि फिरि जाई । बार बार जग में प्रगटाई ।

इस प्रकार काल निरंजन जीवों पर अपना दांव फ़ेंकते हुये उन्हें अपने फ़ंदे में (असली ज्ञान से दूर) बनाये रखेगा । यानी ऐसी कोशिश करेगा । वह अपने इन अंशो (कालदूतों) से बारह पंथ (झूठे ज्ञान को फ़ैलाने हेतु) प्रकट करायेगा । और ये दूत सिर्फ़ एक बार ही प्रकट नहीं होंगे । बल्कि वे उन पंथों में बारबार आते जाते रहेंगे । और इस तरह बारबार संसार में प्रकट होंगे ।

जहां जहां प्रगटे यमदूता । जीवन से कह ज्ञान बहूता ।
नाम कबीर धरावे आपा । कथित ज्ञान काया कहं थापा ।

जहाँ जहाँ भी ये दूत प्रकट होंगे । जीवों को बहुत ज्ञान (भरमाने वाला) कहेंगे । और वे यह सब खुद को कबीरपंथी बताते हुये करेंगे । और वे शरीर ज्ञान का कथन करके सत्यज्ञान के नाम पर काल निरंजन की ही महिमा को घुमा फ़िरा कर बतायेंगे । और अज्ञानी जीव को काल के मुँह में भेजते रहेंगे । काल निरंजन ने ऐसा ही करने का उनको आदेश दिया है ।

जब जब जनम धरे संसारा । प्रगट होय कै पन्थ पसारा ।
करामात जीवन बतलावे । जिव भरमाय नरक महं नावे ।

जब जब ये निरंजन के दूत संसार में जन्म लेकर प्रकट होंगे । तब तब ये अपना पंथ फ़ैलायेंगे । वे जीवों को हैरान करने वाली विचित्र बातें बतायेंगे । और जीवों को भरमाकर नरक में डालेंगे ।

हे धर्मदास ! सुनो । ऐसा वह काल निरंजन बहुत ही प्रबल है । वह तथा उसके दूत कपट से जीवों को छल बुद्धि वाला ही बनायेंगे ।



(घट रामायण ३५१)

मन दुग गुन के दान चुकावै । गुन तीनों से जग बौरावै ।
दुर्ग दानी यहि मन को जाना । अस दुर्ग दानी नाम कहाना ।

मन दुर्ग तीन गुणों सतों (विष्णु), रजों (ब्रहमा) और तमों (शंकर) का दान चुकता करता रहता है । इन तीनों गुणों में संसार पागल बना रहता है । इसी मन को दानदाता दुर्ग समझो - इसका दानी दुर्ग ऐसा नाम कहा गया है ।

रामपाल में कालदूत वाले सभी लक्षण है । कबीरदास, तुलसी साहिब जी ने उनको भी कालदूत (मन दुर्ग रूपी) कहा है जो इन तीन गुणों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) के ऋण उतारने या दान चुकता करने की बात करता है ।

भक्ति बोध

104 शंका-समाधान

निवेदन :- उपदेश प्राप्त करने वाला भक्तात्मा यह सोचेगा कि गुरु जी कह तो रहे थे कि तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) की पूजा नहीं करनी है। मन्त्र जाप उन्हीं के दिए हैं। उनके लिए निवेदन है कि यह पूजा नहीं है। हम काल के लोक में रह रहे हैं। यहाँ हमने जो सुविधा चाहियेगी वह ब्रह्मा-विष्णु-शिव आदि ही प्रदान करेंगे।

जैसे हमने बिजली का कनेक्शन(लाभ) ले रखा है। उसका बिल(खर्चा) भरना है। हम बिजली वाले मन्त्री की या विभाग की पूजा नहीं कर रहे। हम उनका बिल भरेंगे तो बिजली का लाभ मिलता रहेगा। इसी प्रकार टेलीफोन(दूरभाष) का बिल व पानी का बिल आदि अदा करते रहेंगे तो हमें सुविधाएँ मिलती रहेंगी। आप शास्त्र विरुद्ध साधना करके भक्ति हीन हो गए हो अर्थात् आप पुण्य हीन हो गए हो। जिस कारण से आपको धन लाभ आदि नहीं हो रहा। यह दास(रामपाल दास) आप का गारन्टर(जिम्मेदार) बनकर इस काल लोक की एक ब्रह्मण्ड की शक्तियों (ब्रह्मा-विष्णु-शिव-गणेश-माता आदि) से आप को सर्व सुविधाएँ पुनः प्रारम्भ करवायेगा तथा आप ने इस मन्त्र के जाप से इन का बिल भरते रहना है। जो मन्त्र प्रथम(सत सुकृत अविगत कबीर) है यह आपकी पूजा है, यह पूर्ण परमात्मा है तथा सत्यम् लाभ(फल) प्राप्त होगा। सत्यम् का अर्थ अविनाशी अर्थात् हमें अविनाशी पद प्राप्त करना है। इस मन्त्र के चार महीने के बाद आप को सत्यनाम(सच्चानाम) और मिलेगा, जो दो मंत्र का होगा। उसका एक मंत्र काल के इक्किस ब्रह्मण्ड का ऋण उतारने का है। उस की कमाई करके हमने ब्रह्म(क्षर पुरुष) अर्थात् काल का ऋण उतारना है। फिर यह काल हमें सर्व पापों से मुक्त कर देगा।

घट रामायण / ३५१

नकटा नाम दूत येहि जानौ। या की साखि न कोऊ मानौ॥
मन दुग गुन के दान चुकावै। गुन तीनों से जग बौरावै॥
दुर्ग दानी यहि मन को जाना। अस दुर्ग दानी नाम कहाना॥
या की बात सत्त कर मानी। येहि बिधि मन को दूत बखानी॥
यह मन निर्मल सुरति कराई। मन होइ हंस सुरति घर जाई॥
हंस मुनी होइ दूत उड़ाई। सुरति सब्द घर अपने जाई।
सत्य नाम पद पहुँचै भाई। चौथा पद रस पियै अघाई॥
मुनि होइ हंस ताहि कर नामा। बारा मत मन के पहिचाना॥
यह कबीर ने भाखा पेखा। औरौ संत यही बिधि लेखा॥
ये सब मन के मते बताये। मन से पंथ भेष जग आये॥
मन बाहर कोइ पंथ न होई। ये सब मते काल कर जोई॥
मन से भिन्न सुरति को पावै। सुरति जाइ पद नाम समावै॥

अर्थ—इसी को नकटा दूत समझो तथा इसका विश्वास कभी न करो। मन दुर्ग है, और रज, सत्त्व एवं तम गुण का दान चुकता करता रहता है। इन्हीं तीनों गुणों में संसार पागल बना रहता है। इसी मन को दानदाता दुर्ग समझो-इसका दानी दुर्ग ऐसा नाम कहा गया है।

काल के दवादश पंथों का रहस्य

तुलसी साहिब हाथरस वाले जी ने अनुराग सागर के इन्हीं काल के 12 पंथों का भेद बताया है । और कहा है कि ये 12 मत या पंथ ही वास्तव में मन रुपी कालदूत है ।

घट रामायण

प्रथम दूत मृतअंध कहावा। दास नरायन नाम धरावा॥
काल अंस ये नाम नरायन। जीव फाँस फंदा जिन लायन॥
तिरमिर दूजा नाम बखाना। जाति अहेरी कुफर कहाना॥
दूत तीसरा भाखि सुनाऊँ। अंध अचेत ताहि कर नाऊँ॥
सुरति गुपाल नाम तेहि पावा। कह कबीर ऐसी बिधि गावा॥
चौथा दूत भंगमन होई। झंगा मूल पंथ कहै सोई॥
पँचवाँ दूत ज्ञानभंग नामा। परचा करन मंत्र को थामा॥
मकरंद षष्टम दूत कहावा। नाम कमाली तासु धरावा॥
सप्तम दूत आहि चितभंगा। नामा रूप करै मन रंगा॥
अष्टम दूत का नाम बताऊँ। अकलभंग तासु कर नाऊँ॥
नवाँ दूत कर नाम बताऊँ। दूत बिसंभर बरनि सुनाऊँ॥
अब मैं दसवाँ दूत बताई। नकटा दूत ताहि कर नाँई॥
एकादस दूत नाम बतलाऊँ। दुर्गदानी तेहि बरनि सुनाऊँ॥
द्वादश दूत नाम बतलाऊँ। हंस मुनी तेहि बरनि सुनाऊँ॥
ऐसे बारा दूत बखाना। अनुराग सागर करत बखाना॥
साहिब कबीर ऐसी विधि गावा। सो मैं तुमको भाखि सुनावा॥

इन बारहों में, प्रथम दूत का नाम 'मृत अंध' है और उसका नाम नारायण दास रखा गया है। ये नारायण नाम के काल में अंश हैं, जिन्होंने जीवों के गले में मृत्यु के पाश का फंदा (बन्धन) बाँध रखा है।

दूसरे का नाम 'तिरमिर' है। यह जाति का शिकारी है, और इन्हें कुफ्र भी कहा जाता है। तीसरे दूत के विषय में मैं कहकर सुनाता हूँ–उसका नाम 'अंध अचेत' है। कबीरदास ने इस प्रकार भी कहा है कि उसे 'सुरति गोपाल' नाम भी दिया गया है। चौथा दूत 'भंगमन' है–और झंगा मूल पंथ' इसी ने बताया है। पाँचवें दूत का 'ज्ञानभंग' नाम है–और उसने परिचय करने वाले मंत्र को स्वीकार किया है।

छठाँ दूत 'मकरंद' है, उसका नाम कमाली भी रखा गया है। सातवें दूत 'चितभंग' है, वह मन की इच्छा के अनुसार नाना रूपों को धारण करता है। मैं अष्टम दूत का नाम बता रहा हूँ। आपका नाम 'अकल भंग' है। नवें दूत का भी नाम बता रहा हूँ, उसका वर्णन 'विसंभट' के नाम से कर रहा हूँ। अब मैं दसवें दूत के विषय में बता रहा हूँ–उसका नाम 'नकटा' है। ग्यारहवें दूत का भी नाम बता रहा हूँ–'दुर्गदानी' नाम से उसका मैं वर्णन करके बता रहा हूँ। बारहवें दूत का नाम बता रहा हूँ–उसका नाम 'हंसमुनि' है–मैं उसका नाम वर्णित करके सुना रहा हूँ।

इस प्रकार से बारह दूत कहे गए हैं, 'अनुराग सागर' नामक ग्रन्थ इस प्रकार का वर्णन करता है। कबीर साहब ने इनका इसी प्रकार से वर्णन किया है–जिसे मैं कहकर सुना रहा हूँ।

फूलदास सुनियौ चित लाई। अब या कौ हम बरनि सुनाई॥
निरगुन काल निरंजन जानौ। सोई याहि मनै पहिचानौ॥
सत्त सब्द तन माँहि रहाई। वा को छाँड़ि खानि को जाई॥
बारा मत नहिं कहिया भाई। वाही राह की मती बुझाई॥
मन ये राह की मति जो राखा। या को बारा की मति भाखा॥
मन ये द्वैत भाव जग राखा। दूत नाम येहि बिधि भाखा॥
एक नाम बिधि भूला भाई। ता से मन को दूत बताई॥
ये मन की बिधि कहूँ बखाना। फूलदास सुनियौ दै काना॥
बारा मत मन ही के जाना। द्वैत न छाँड़ि एक नहिं माना॥
यों बारा मत मन के भइया। बारा मत मन नाम कहइया॥
द्वैत राह मन छाँड़ न भाई। तहँ लगि यह मन काल कहाई॥
द्वैत काल मन यह बिधि गाया। मन मत द्वैत जगत सब आया॥
मन मत द्वैत वो राह न पाया। ये कबीर न यों बिधि गाया॥
या मन की बिधि बिधि समझाइ। बारा दूत मन काल कहाई॥

अर्थ–हे फूलदास! आप ध्यान लगाकर सुनें, अब मैं इनका वर्णन करके सुनाता हूँ। निर्गुण ब्रह्म को ही 'काल-निरंजन' समझें, और इनको मन-ही-मन पहचानें। 'सत्' शब्द इसी शरीर में ही रहता है–उसका त्याग करने पर व्यक्ति नरक में चला जाता है। हे भाई! इसे बारह मत नहीं कहा जाता–उस मार्ग के ज्ञानी ही उसे बताते हैं। इस मन में अध्यात्म मार्ग का जो ज्ञान रखा है, उसी के विषय में ये बारह मत हैं।

यह संसार मन में द्वैत भाव रखता है–दूतों का नाम इसी द्वैतभाव के कारण रखा गया है। हे फूलदास! तन्मय होकर आप सुनें, मन की इन विधियों का वर्णन मैं कर रहा हूँ। मन के ही बारह (मत) रूप हैं–किसी भी उपदेश को व्यक्ति एक भी नहीं मानता और द्वैतभाव को छोड़ता नहीं। इस प्रकार, मन बारह मत हैं और इस प्रकार, मन के ही बारह नाम कहे गए हैं। यह मन जब तक द्वैत मार्ग का त्याग नहीं करता–वहाँ तक वह मन ही 'काल' कहा जाता है।

मन के द्वैत को काल रूप स्वीकार करके इस प्रकार से कहा गया है, मन के द्वैत मन से ही सारा संसार जाना गया। मन के इस द्वैत मत से उसने (किसी ने भी नहीं) अध्यात्म मार्ग को प्राप्त नहीं किया, इस प्रकार कबीरदास जी ने बताया है। इस द्वैत मन के रहस्य को इस प्रकार समझाया गया है और इस मन रूपी काल के बारह दूत कहे गए।

ये मत बिधि सब कही बखाना। बारा नाम मनहिं के जाना॥
नरायनदास नर मन है भाई। येहि बिधि दास कबीर बताई॥
मन मृत अंध दूत बतलाई। मन नित मृत करै जग जाई॥
ये मन तिमर जगत को लावा। या ते तिमर नाम मन पावा॥
मन जगअंध अचेत करावा। अंध अचेत दूत ठहरावा॥
सुरति गुपाल नाम तेहि कहिया। मूरति मनगोपाल न करिया॥
मन मत भंग करै जग केरी। मन मत भंग नाम अस फेरी॥
मन मत ज्ञान करै चित भंगा। मन मत दूत नाम रस रंगा॥
मन पतंग माया मन राखा। मन मकरंद दूत यों भाखा॥
मन अरु चित भंग करै अनेका। चितभंग दूत नाम यों लेखा॥
मन अक्कल को भंग लगावा। अकलभंग नाम अस गावा॥
बिषै अमर मन करिकै राखै। सुरति नाम को नेक न ताकै॥
ताकर नाम बिसंभर दूता। बिष रस जीव किया मजबूता॥
मन कहँ नकटा दूत कहाई। ज्ञान सुनै फिर बिष रस खाई॥
या को लज्जा नेक न आवै। नकटा होइ पीछे पुनि धावै॥

अर्थ–इनके विषय में सारे मतों तथा रहस्यों को वर्णित करके कहता हूँ–इस मन के ही बारह नाम है, इस प्रकार समझो।

नर मन का नाम नारायण दास है, इस प्रकार कबीर दास ने बताया है। मन का एक दूत 'मृत अंध' कहा गया है, संसार में आकर मन निरन्तर मृत रखता है। तीसरा मन संसार में अंधकार लाता है, अतः मन का नाम अंधकार बतलाया गया है। यही मन संसार को अंधा और अचेत बना देता है। अतः इसे ही अंध अचेत काल दूत कहा गया है। उसी का नाम सुरति गोपाल कहा जाता है, क्योंकि वह मन में स्थित ब्रह्म की मूर्ति नहीं बनाता। जो संसार के मन को भंग करता (तोड़ता रहता) है–इसीलिए उसका नाम बाद में मतिभंग रखा गया। मन अपने ज्ञान से चित्त को बार-बार भंग करता है, इसीलिए मन के उस नाम को 'चितभंग' रखा गया है। मन पतंग, निरन्तर माया में मन रखे रहता है–इसीलिए इस मन के दूत का नाम मत मकरंद है। मन तथा चित्त को जो अनेक रूपों में भंग करता है, उसका नाम इसीलिए चित्त भंग कहा गया है। मन तथा बुद्धि को जो तोड़ता है, उसका नाम 'अक्लभंग' कहा गया है। अगर विषय वासनाओं को जिसने मन में स्थितर करके रखा है औ सुरति ध्यान आदि के विषय में जो कुछ भी नहीं जानता–उसका नाम विसम्भर दूत है और उसने वासना रस (विष रस) द्वारा मन को सुदृढ़ कर रखा है मन का नकटा दूत वह कहलाता है–जो ज्ञान सुनने के बाद भी विषय-रस में लीन रहता है। इसे लेशमात्र भी लज्जा नहीं आती और यह नकटा होकर भी वासनाओं के पीछे दौड़ता रहता है।

नकटा नाम दूत येहि जानौ। या की साखि न कोऊ मानौ॥
मन दुग गुन के दान चुकावै। गुन तीनों से जग बौरावै॥
दुर्ग दानी यहि मन को जाना। अस दुर्ग दानी नाम कहाना॥
या की बात सत्त कर मानी। येहि बिधि मन को दूत बखानी॥
यह मन निर्मल सुरति कराई। मन होइ हंस सुरति घर जाई॥
हंस मुनी होइ दूत उड़ाई। सुरति सब्द घर अपने जाई।
सत्य नाम पद पहुँचै भाई। चौथा पद रस पियै अघाई॥
मुनि होइ हंस ताहि कर नामा। बारा मत मन के पहिचाना॥
यह कबीर ने भाखा पेखा। औरौ संत यही बिधि लेखा॥
ये सब मन के मते बताये। मन से पंथ भेष जग आये॥
मन बाहर कोइ पंथ न होई। ये सब मते काल कर जोई॥
मन से भिन्न सुरति को पावै। सुरति जाइ पद नाम समावै॥
सो बारा से न्यारा होई। सो जिव अमर पंथ को जोई॥
मन से राह सुरति नहिं जाने। सो सब पंथ काल मत साने॥
यह महंत मन अंधा धुन्धा। येहि माँ काल रखावा फंदा॥
दास कबीर येहि पुनि भाखा। हमहूँ दीन्ह येही बिधि साखा॥
वह कबीर यह तुलसी लेखा। मन मानै तौ करौ बिबेका॥
तुलसी संत चरन की आसा। संत सरन में सुरति निवासा॥

अर्थ—इसी को नकटा दूत समझो तथा इसका विश्वास कभी न करो। मन दुर्ग है, और रज, सत्त्व एवं तम गुण का दान चुकता करता रहता है। इन्ही तीनों गुणों में संसार पागल बना रहता है। इसी मन को दानदाता दुर्ग समझो-इसका दानी दुर्ग ऐसा नाम कहा गया है। इसकी बात हमेशा सत्य समझो। इस प्रकार मन को ही दूत कहा गया है। यही मन निर्मल होकर सुरति ध्यान में लगता है—और यह मन हंस बनकर सुरति के घर के लिए गमन करता है—मन हंस बनकर इन बारह दूतों को पास से भगा देता है—और वह अपने घर सुरति के लिए प्रस्थान कर जाता है। 'सत् नाम' के स्थान पर पहुँचकर यही मन चतुर्थ अन्नाला के पद में प्रवेश कर आनन्द रस का पान करता है। जो मुनि हैं, उन्हीं का नाम हंस है, इस प्रकार ये बारह मत मन में ही पहचाने जाते है। कबीर दास जी ने इसी को देखा है और कहा है तथा अन्य सन्तों ने भी इसे इसी प्रकार देखा है। ये सभी बारह मन के भेद बताये गए है—तथा मन के द्वारा ही ये अनेक पंथ एवं वेष इस संसार में आए हैं। कोई भी पंथ मन के बाहर नहीं है—और यही सब काल के भी मत हैं।

मन से अलग होकर कौन सुरति समाधि प्राप्त कर सकता है। यह महन्त का अंधा धुन्ध है—और इसी में काल ने अपना पाश रख छोड़ा है। कबीरदास जी ने भी यही कहा है—हमने भी इसी प्रकार की ही साक्षी दी है। वह कबीर का मत है, यह तुलसी का मत और तुम्हारा मन स्वीकार करे तो इसे स्वीकार करो। तुलसी को तो निरन्तर सन्त चरणों की आशा रहती है और सन्तों की ही शरण में सुरति की निवास स्थली है॥

कालदूत रामपाल का न 8वां पंथ है । न 12वां पंथ है, और न ही 13वां पंथ है ।

रामपाल का काल (मन रुपी दूत) का पंथ या मत है ।

बारा (12) मत नहिं कहिया भाई । वाही राह की मती बुझाई ।
मन ये राह की मति जो राखा । या को बारा की मति भाखा ।

हे भाई ! इसे 12 पंथ या मत नहीं कहा जाता । उस मार्ग के ज्ञानी ही उसे बताते है । इस मन में अध्यातम मार्ग का जो ज्ञान रखा है । उसी के विषय में ये 12 मत है ।

मन ये द्वैत भाव जग राखा । दूत नाम येहि बिधि भाखा ।
एक नाम बिधि भूला भाई । ता से मन को दूत बताई ।

यह संसार मन में द्वैत भाव रखता है । दूतों का नाम इन्हीं द्वैत भाव के कारन रखा गया है ।

यह मन जब तक द्वैत मार्ग का त्याग नहीं करता तब तक वह मन ही काल कहा जाता है ।

बारा (12) मत मन ही के जाना । द्वैत न छान्ड़ी एक नहिं माना ।
यों बारा (12) मत मन के भइया । बारा (12) मत मन नाम कहइया ।

मन के ही 12 रूप (मत) है । जो न द्वैत भाव को छोड़ता है और न एक (अद्वैत) को मानता है ।

हे भाई ! ये 12 पंथ या मत मन के ही रूप है । इस प्रकार मन के ही 12 नाम कहे गये है ।

द्वैत राह मन छान्ड़ न भाई । तहँ लगि यह मन काल कहाई ।
द्वैत काल मन यह बिधि गाया । मन मत द्वैत जगत सब आया ।

यह मन जब तक द्वैत भाव का त्याग नहीं करता तब तक वह मन ही काल कहलाता है ।

मन के द्वैत भाव को काल रूप स्वीकार करके इस प्रकार से कहा गया है । मन के द्वैत भाव से ही सारा जगत जाना गया ।

मन मत द्वैत वो राह न पाया । ये कबीर न यों बिधि गाया ।
या मन की बिधि बिधि समझाई । बारा (12) दूत मन काल कहाई ।

मन के इस द्वैत मत से उसने (किसी ने भी नहीं) अध्यातम मार्ग को प्राप्त नहीं किया । इस प्रकार कबीरदास जी ने बताया है ।

इस द्वैत मन के रहस्य को इस प्रकार समझाया गया है । और इस मन रूपी काल के 12 दूत कहे गए है ।

ये सब मन के मते बताये । मन से पंथ भेष जग आये ।
मन बाहर कोई पंथ न होई । ये सब मते काल कर जोई ।

इस प्रकार ये काल के 12 पंथ या मत मन के ही बताये हुए है तथा मन के द्वारा ही ये अनेक पंथ एंव भेष इस संसार में आए है । ये 12 पंथ मन से बाहर नहीं है और यही सब काल के भी मत है ।

मन से भिन्न सुरति को पावै । सुरति जाइ पद नाम समावै ।
सो बारा (12) से न्यारा होई । सो जिव अमर पंथ को जाई ।

बारा (12) मत मन के बसे । जग्त भेष के पास ।

ये 12 पंथ या मत मन में निवास करते है । और इसी से संबध वेश रचना संसार के पास है (संसार में है) ।

काल के 12 पंथ या मत वास्तव में मन रूपी काल के नाम है । और रामपाल के लक्षण इन्हीं काल के 12 पंथों या मतों वाले से मिलते है ।

(१८७०) बोधसागर ८६

यहांलों तो चार गुरु और बयालीस वंशका लेखा लग चुका है इनके अतिरिक्त कबीर साहबके बारह पंथ और भी कबीरपन्थी ही कहलाते हैं।

कबीर साहबके पंथोंका वृत्तान्त

१-नारायणदासजीका पंथ। २-यागौदासजीकापंथ। ३-सूरत गोपाल पंथ। ४-मूलनिरञ्जनका पंथ। ५-टकसारी पंथ। ६-भगवान्दासजी का पंथ। ७-सत्यनामी पंथ। ८-कमालीपंथ। ९-राम कबीर पंथ। १०-प्रेमधामकी वाणी। ११-जीवा पंथ। १२-गरीबदास पंथ।

यह तो कबीर साहबके बारह पंथ हैं। इनमें कोई २ अच्छे हैं। और कोई निर्बल विश्वासके हैं। और रामकबीरके लोग ठाकुरपूजा करते हैं। और सत्यनामियोंके ध्यान भी विचलित प्रायः हैं। इन बारह पंथोंका यही विवरण है और इन बारह पंथोंके अतिरिक्त कबीर साहबके और पंथ भी हैं।

कबीर साहबके भिन्न २ पंथोंका वृत्तान्त

नानकपंथ-दादू पंथ-यानिप पंथ-मूलकदास पंथ-गणेश पंथ इत्यादि।

गरीबदास जी का भी 12 वां पंथ नहीं है । पहली बात गरीबदास का 12वां पंथ वाली बात वाणी में नहीं लिखी हुई । टिप्पणीकर्ता ने बोधसागर में काल के 12 मत या पंथों में गरीबदास जी के पंथ को अज्ञानतावश जोड़ दिया । जो की गलत है ।

गरीबदास जी ने कहा है 12 प्रकार के दूत घट में ही है |

द्वादश कोटि दूत घट मांहीं । कैसे हंसा परमगति जांहीं ।

वैसे भी कालदूतों ने कबीर ग्रंथों में मिलावट कर रखी है ।

बोधसागर में अधिकांश वाणियाँ भी कबीर की नहीं है ।

संक्षिप्त सूरसागर

सम्पादक

बेनीप्रसाद, एम० ए०, पी-एच० डी०,

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

* कबीर के जीवन और उपदेश के लिए देखिए कबीरकसौटी, बीजक (जिसके अनेक संस्करण प्रकाशित हुए हैं), कबीर साखी-संग्रह (बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग); अयोध्यासिंह उपाध्याय द्वारा सङ्कलित कबीर-वचनावली। सिक्खों के आदि ग्रन्थ में कबीर के बहुत से भजन दिये हुए हैं। बेलवेडियर प्रेस द्वारा प्रकाशित कबीर शब्दावली के अधिकांश शब्द कबीर के नहीं हैं। वेङ्कटेश्वर प्रेस द्वारा प्रकाशित बोधसागर के, पहले भाग को छोड़कर, शेष भागों की रचना भी कबीर की नहीं है। राजपूताना में कई सज्जनों के पास कबीर की बहुत सी अप्रकाशित रचना मौजूद है।

विवेचन

इस ग्रन्थकी एक ही प्रति सम्वत् १८४७ की लिखी हुई है इसकी दूसरी प्रति न होनेसे बहुत स्थानोंमें ज्योंका त्यों छोड़ना पड़ा है और अशुद्धियाँ रह गयी हैं । जब इतने वर्ष पीछेकी लिखी कबीरपंथी ग्रन्थोंकी यह दशा है तब नवीन कबीर पंथियोंकी लिखे ग्रन्थोंकी क्या गति होगी पाठक स्वयम् विचार कर लें ॥

इति

भिन्न भिन्न शाखा (पंथो) की अनुराग सागर की प्रतियाँ भी 46 प्रकार की पाई जाती है और उन सभी ग्रंथों में भी परस्पर विभिन्नता है । भिन्न भिन्न शाखा (पन्थ) वालों ने अपनी बड़ाई जताने के लिए एक दूसरे की निन्दा और खण्डन मण्डन लिखे हुए हैं ।

अनुरागसागर
(४६) ग्रन्थोंद्वारा संशोधित ।

विचार किया है कि, "अनुरागसागरकी भूमिका" नामकी एक पुस्तक अलग ही बनाकर पाठकोंकी भेंट करूंगा ।

तथापि इतना तो अवश्य कहे विना नहीं रहा जाता कि इन ४६ प्रतियोंकी परस्पर विभिन्नताके कारण एक एक विषयको देखनेके लिये कभी तो कुल ४६ प्रतियोंको उलटना पड़ता था, कभी एक विषयको जाननेके लिये समूचे ग्रंथको ही पढ़ जाना पड़ता था और भिन्न भिन्न शाखा (पन्थ) वालोंने अपनी बड़ाई जतानेके लिये एक दूसरेकी निन्दा और खण्डन मण्डन लिखे हुए हैं, ऐसे स्थानोंपर कई २ दिनोंतक विचार करना पड़ता था । जिसका विशेष वृत्तान्त जाननेके लिये उपर्युक्त भूमिकाको अवश्य देखना चाहिये । इस प्रकारसे कई महीनोंके कठिन परिश्रमसे सब ग्रन्थोंको मिलाकर मैंने यह ग्रंथ ठीक किया है ।

स्वंय कबीरदास जी ने कोई पंथ नहीं चलाया था । ये तो उनके अनुयायिओं ने उनके जाने के बाद कबीर नाम से पंथ चलाये थे ।

धरम दास औ दास कबीरा दादू नानक नामा रे ।
इन संतन नहिं पंथु चलाया ठगियन जगु भरमाया रे ।

धर्मदास, दादू, नानक और कबीरदास जी ने कोई पंथ नहीं चलाया है । ये तो कालदूतों ने संसार के लोगों को पंथों, वंशावली गद्दियों में भरमाया हुआ है ।

तबु बांधो में संत थे कबीर औ धर्मदास ।
तेही घर अब ठगु रहै परखै मीता दास ।

तब बांधोगढ़ में कबीर और धर्मदास नाम से संत थे । लेकिन अब वहां ठग रहते है - मीता दास ने परख कर ऐसा कहा है ।

अब तो हद हो गई है कुछ कबीरपंथी काल के 12 पंथ या मत का भेद जान नहीं पाये है और अपने पंथ को 13वां पंथ यानि मनमाना नाम घोषित करके लोगों को भरमा रहे हैं ।

काल के 42 वंशों का रहस्य:

बंस बयालिस मन के भाई । ता की बिधी कहूँ समझाई ।
चालिस बंस बास मन फेरा । इकतालिस स्त्रुत सार बसेरा ।
बिधी बयालिस सब्द बखाना । ऐसे बयालिस अटल कहाना ।
ये कबीर मुख भाखि सुनावा । तुम कछु और और ठहराया ।
मन और सुरति सब्द में जावै । अस अस बयालिस अटल कहावै ।

वास्तव में कई जगह कबीर वाणियों का अर्थ बाहरी संसार से नहीं है । गौर करें । तो वंश 42 मन के हैं भाई । यानी काल से उत्पन्न ।

इसमें रहस्य की लाइन ये है - ये कबीर मुख भाखि सुनावा । तुम कछु और और ठहराया ।

मतलब कबीर ने जो मुँह से कहा । उसका वो अर्थ न निकाल कर कुछ और ही अर्थ लग गया । या लगा लिया गया ।

असल में अंतर में जब सुरत यात्रा शुरू होती है । तो काल ने डराने धमकाने भरमाने तरह तरह के विघ्न डालने के लिये कालदूतों की चौकियां बना रखी हैं । सुरति की ऊँचाई बढने के साथ ही उस ऊँचाई की चौकी का कालदूत उतना ही ताकतवर होता है । इन्हीं में से कुछ कालदूतों बाहर भी जीवों को भरमाने हेतु शरीरधारी हो जाते हैं । या फ़िर किसी तामसिक साधु को आवेशित कर अप्रत्यक्ष कब्जे में ले लेते हैं ।

वंश बयालीस तक पहुँचते पहुँचते साधक सयाना हो जाता है । उसे डराया धमकाया या बातों से बहलाया नहीं जा सकता । तब आखिरी दाव के तहत ये अनोखे शब्द, सारशब्द का प्रपंच फ़ैलाते हैं । अन्दर भी जाल बिछा देते हैं । अन्दर ये धुन नकली होती है । और बाहर तो रामपाल, मधु परमहंस जैसे सारशब्द चिल्ला चिल्ला कर यही सब कर रहे हैं ।

इसके बाद काल और माया का नम्बर आता है । बहुत कठिन है डगर पनघट की ।

पर गुरु सच्चा हो । और शिष्य शिष्यता को लेकर पूरा हो । तो इनकी कलई जल्दी ही उतर जाती है ।

अब मेरी बात - पिछले दिनों मेरे पास बहुत से ई मेल इसी तरह की शंकाओं के आये कि फ़लाना बाबा ऐसा ज्ञान दे रहा है । वह यह योग बता रहा है । यह सब क्या है ? और सच्चाई क्या है ?

सच्चाई जानना बहुत सरल है - मैं तो कहता हूँ । आप मुझ पर भी शंका करो कि मैं आपको सही बात बता रहा हूँ । या भरमा रहा हूँ ।

कबीर की वाणी बीजक अभी भी प्रमाणित है । अगर कबीर जैसे दोहे बनाकर कोई झूठा (कालदूत) ज्ञान इसमें मिलाता भी है । तो कबीर की वाणी अलग ही नजर आती है ।

अब किसी भी गुरु का ज्ञान उपदेश यही कबीर बीजक वाली बात कह रहा है । और दीक्षा के बाद वही क्रियायें आपके सुमरन ध्यान में अनुभव में आती हैं । तो वह गुरु सच्चा है ।

अगर कोई भी आपको माला जपना आदि किसी भी आडंबर को बताता है । नाम मुँह से जपने को बताता है । जैसे ॐ नमो फ़लाने देवाय..तो आप समझ जाओ । वह कौन है ??

ना कर में माला गहूँ । न मुख से बोलूँ राम । हरि मेरा चिंतन करें । मैं पायो आराम ।

ये है सच ।

प्रश्न 9- रामपाल के मुताबिक मोक्ष देने वाला नाम सिर्फ़ इनके पास है ?

बडे बडाई ना करें । बडे न बोले बोल । हीरा मुख से ना कहे । लाख टका मेरो मोल । सच्चाई छिप नहीं सकती । झूठे उसूलों से । खुशबू आ नहीं सकती । कभी कागज के फ़ूलों से । ऐसा तो कभी कबीर ने भी नहीं कहा था । जबकि उन्होंने कितने चमत्कार किये । उनका जन्म न होकर वे प्रकट हुये थे । और जीवों के मोक्ष के लिये ही भेजे गये थे । उन्होंने कहा । परमात्मा की सच्चे नाम की भक्ति करो । उससे मोक्ष मिलेगा । उनके कहने में कहीं मैं भाव नहीं था ।

प्रश्न 10- रामपाल के मुताबिक खुद कबीर जी ने मार्च 1997 में दिन में 10 बजे इनको दर्शन दिये । और अंतर्ध्यान हो गये ?

हा हा हा । कबीर ने मुझे भी दर्शन देकर कहा था कि ये रामपाल क्या ऊल जुलूल बोलता रहता है । तू इसको समझाता क्यों नहीं । मैंने जवाब दिया । भैंस के आगे बीन बजाये । भैंस खङी पगुराय । अन्धे के आगे रोये । अपने नैना खोये ।

प्रश्न 11- रामपाल के मुताबिक अनामी पुरुष ही कबीर हैं ? अनामी पुरुष का नाम कबीर देव या कबीर साहिब है ? इनके मुताबिक कबीर ही सतपुरुष हैं ? इनके मुताबिक सतलोक पहुँचकर कबीर के साक्षात दर्शन होते हैं ?

इनसे पूछो । जब वो अनामी (जिसका नाम न हो) ही हैं । तो कबीर कैसे हुये ?
And All is ऊटपटांग in this Question

परमात्मा का नाम जिह्वा के द्वारा उच्चारण में आने वाला नहीं । जबकि सारे वर्ण उच्चारण में आते हैं । वह नाम ध्वनात्मक रूप वाला प्राण में निवास करता है जिससे वाणी आदि उत्पन्न हुयी । हम सारे नाम जानते हैं ।

राम, कृष्ण, ईश्वर, खुदा, गाड, बुद्ध, परमात्मा, भगवान आदि को ही उस परमब्रह्मपरमेश्वर का नाम समझते हैं ।

ब्रह्म राम ते नाम बङि, वरदायक वर दान ।
राम चरित सत कोट मह, लिय महेश जिय जान ।

यह जो परमात्मा का नाम है वह राम से बङा तथा ब्रह्म से भी श्रेष्ठ है ।

इससे यह सिद्ध होता है कि नाम कोई और है जो राम अक्षरों से भी विलक्षण है । क्योंकि नाम के ही प्रभाव से राम के चरित्र को शिवजी ने सतकोट में ही जान लिया है । ऐसा वह नाम सबका वरदान तथा वरदाता है । ऐसा वह प्रभावशाली परमात्मा का नाम है ।

जासु नाम सुमरति एक बारा, उतरहिं नर भव सिन्धु अपारा । राम नाम मनि दीप धरु, तुलसी भीतर बाहिरहु जो चाहिय उजियार ।

जीभ के आखिरी सिरे रखकर यानी प्राण के ध्वनात्मक नाम का दहलीज पर रखकर ध्यान करें तो अन्दर बाहर दोनों और उजाला हो जायेगा । ऐसा वह नाम गुण वाला है ।

अब देखो आत्मज्ञानी संत क्या कहते है परमात्मा के नाम के बारे में -

चौथे चार पार इक स्वामी । लखि भिन्न नाम अनामी ।
सूरति सैल महल पिय पाया । रूप न रेख निसानी ।
मैं मिलि जाइ पाइ पिय अपना । जल जल धार समानी ।

चौथे स्थल में एक स्वामी है, वे बिना नाम के है और उनके अनेक नाम भी बताये गए है । सुरति रुपी पर्वत पर मेरे प्रियतम स्वामी ने एक महल प्राप्त किया है - उसका न कोई रूप है, न रेखा है, न लक्षण है । मैं वहां जाकर उनसे मिली और अपना प्रिय प्राप्त किया है और जैसे जल जलधार में विलीन हो उठता है - वही स्थिति मेरी हुई ।

आदि अनाम ब्रहम है न्यारा । निराधार महँ कियो पसारा ।
ताहि पुरुष सुमरो रे भाई । तन छोड़ जिवलोक सिधाई ।

कहत अगोचर सबके के पारा । आदि अनादि पुरुष है न्यारा ।
आदि ब्रहम इक पुरुष अकेला । ताके सग नहीं कोई चेला ।
ताहि न जाने यह संसारा । बिना नाम है जमके चारा ।

प्रथम रहे इक पुरुष अनामा । चौथे पद के पार ठिकाना ।
जब नहीं रहे गगन आकासा । चंदा सूरज नहीं परकासा ।

आदि पुरुष नि:नाम अनाम । सो ठाम न ठौर न धाम कहायौ ।

नि:नामी वह स्वामी अनामी । तुलसी सुरति सैल तहँ थामी ।
जो कोइ पूछै तेहि कर लेखा । कस कम भाखौं रूप न रेखा ।

तीनों से न्यारा लोक पसारा । चौथे पद के पार वही ।
जहँ है नि: नामी कोउ न जानी । तीनों पट के पार रही ।

तीनि लोक से चौथा न्यारा । चौथे के परे अगम अपारा ।
पुरुष तहाँ इक अगम अनामी । चौथा पद तेहि पार ठिकानी ।

नहिं कार अकारा नहिं निरकारा । सत्त नाम सत सत्त रही ।
नहिं नाम अनामी तुलसी जानी । जाइ समानी सार मई ।

प्रश्न 12- रामपाल के मुताबिक कबीर वाले नाम के अलावा बाकी सब पूजा नरक ले जाती है ?

ये बात बिल्कुल ही गलत है । स्वर्ग नरक इंसान के कर्मों । दान । पुण्य । तीर्थ । आचरण । द्वैत भक्ति के सही गलत के आधार पर मिलते हैं ।

प्रश्न 13- क्या अगर मैं रामपाल के पास ना जाऊँ । तो क्या मैं नरक में जाऊँगा ? और फ़िर 84 लाख योनियों में । और क्या फ़िर जाकर मुझे मानव शरीर मिलेगा ?

आप नरक जाओ । या न जाओ ? ये आगे आपके कर्मफ़ल आदि ही फ़ैसला करेंगे । पर ऐसे बाबा ? झूठ ज्ञान से इंसान को भ्रमित करने के कारण वहाँ अवश्य जायेंगे । किसी को गुमराह करना बहुत बङा अपराध है । भला किसी का कर न सको । तो बुरा किसी का मत करना । जबकि लोग आप पर विश्वास करते हों ।.. हाँ एक बात है । कहने वाला अगर वह करके भी दिखाता है । जो वह कह रहा है । फ़िर तो बात सत्य है । मेरी जानकारी के अनुसार । एक चक्र पर का भी पहुँचा हुआ गुरू । दीक्षा की छह महीने में ही अंतर्यात्रा में इतने स्थान अवश्य दिखा देता है । जितने एक किमी के बीच आते हैं । ये आँख बन्द होने पर भी रंगीन टीवी की तरह दिखते हैं । सबसे बङी बात । आप वहाँ के किसी पुराने और अच्छे शिष्य से पूछना कि आपको अब तक ध्यान के क्या अनुभव हुये ? बस दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा ।

प्रश्न 14- रामपाल की किताब में कृष्ण जी को विष्णु जी का अवतार बताया जा रहा है ?

विष्णु का चाय नाश्ता ही देवताओं के साथ अक्सर होता है । और इतना तो सभी जानते हैं कि राम का अगला अवतार ही कृष्ण का हुआ था । तो फ़िर प्रथ्वी जब रावण जैसे असुरों के भार से व्याकुल होकर देवताओं के पास रक्षा के लिये गयी । तो सभी देवता इसके लिये बृहमा शंकर आदि के पास इकठ्ठे हुये । तो क्या ये देवता विष्णु को भी नहीं जानते थे ? जहाँ नारद जी नारायण नारायण करते अक्सर पहुँच जाते थे । सबूत के लिये आगे पढिये ।

बाढ़े खल बहु चोर जुआरा । जे लंपट परधन परदारा । मानहिं मातु पिता नहिं देवा । साधुन्ह सन करवावहिं सेवा । जिन्ह के यह आचरन भवानी । ते जानेहु निसिचर सब प्रानी । अतिसय देखि धर्म कै ग्लानी । परम सभीत धरा अकुलानी । गिरि सरि सिंधु भार नहिं मोही । जस मोहि गरुअ एक परद्रोही । सकल धर्म देखइ बिपरीता । कहि न सकइ रावन भय भीता । धेनु रूप धरि हृदय बिचारी । गई तहाँ जहँ सुर मुनि झारी ।

निज संताप सुनाएसि रोई । काहू तें कछु काज न होई ? सुर मुनि गंधर्बा मिलि करि । सर्बा गे बिरंचि के लोका । संग गोतनुधारी भूमि बिचारी । परम बिकल भय सोका । बृहमा सब जाना मन अनुमाना । मोर कछू न बसाई ? जा करि तैं दासी सो अबिनासी । हमरेउ तोर सहाई ? बैठे सुर सब करहिं बिचारा । कह पाइअ प्रभु करिअ पुकारा ? पुर बैकुंठ जान कह कोई ? कोउ कह पयनिधि बस प्रभु सोई ? जाके हृदय भगति जसि प्रीति । प्रभु तहँ प्रगट सदा तेहिं रीती । तेहि समाज गिरिजा मैं रहेऊ । अवसर पाइ बचन एक कहेऊ ।

हरि ब्यापक सर्बत्र समाना ? प्रेम ते प्रगट होहिं मैं जाना ? देस काल दिसि बिदिसिहु माहीं ? कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं ? अग जगमय सब रहित बिरागी । प्रेम तें प्रभु प्रगटइ जिमि आगी । मोर बचन सब के मन माना । साधु साधु करि ब्रहम बखाना ।

तब सभी देवता शंकर के कहे अनुसार स्तुति करने लगे । उस स्तुति में उन्होंने बहुत सी अन्य बातों के अलावा ये भी कहा । सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा । जा कहु कोउ नहिं जाना ? ये भगवान कौन से हैं ? जिन्हें सरस्वती ।

वेद । शेषनाग । ऋषि आदि भी नहीं जानते थे । विष्णु को तो सब देवता अच्छी तरह जानते थे । तब कालपुरुष ने प्रकट होने के बजाय आकाशवाणी से यह बात कही ।

नारद बचन सत्य सब करिहउ । परम सक्ति ? समेत अवतरिहउ ? अधिक विस्तार से लिखना संभव नहीं है । यह बात रामचरितमानस के बालकाण्ड में अर्थ द्वारा पढ लें ।

प्रश्न 15- रामपाल की किताब में ये भी लिखा था कि कालपुरुष किसी प्रेतात्मा की तरह कृष्ण जी में घुसकर गीता का ज्ञान दे गया ?

जब कालपुरुष ही अपने दूसरी भूमिका में राम और तीसरी भूमिका में श्रीकृष्ण होता है । तो उसे प्रेतात्मा की तरह कृष्ण के शरीर में घुसने की क्या आवश्यकता है ? ये इन ज्ञानी जी से कोई पूछे ।

कालपुरुष की चार प्रमुख स्थितियां हैं - कालपुरुष, श्रीकृष्ण, राम और मन । इसका एक अलग रूप यमराज का भी है । जिसको सृष्टि से पूर्व धर्मराय कहते थे । राम, श्रीकृष्ण इस त्रिलोकी के अलग अलग स्तर के दो प्रमुख हैं । अतः ऋषि महर्षि मुनि नारद कुछ देव देवियां आदि का मन्त्रालय निम्न स्तरीय राम के अधीन आता हैं । और देवत्व को प्राप्त हो चुकी बडी दिव्यात्माओं आदि का श्रीकृष्ण के अधीन आता हैं । ये सब त्रिलोकी तक का ही मामला है ।
कालपुरुष सिर्फ़ यही दो अवतार लेता है । विष्णु के अवतार छोटे छोटे होते हैं । ये शक्ति का जरूरत अनुसार वितरण और उपयोग होता है । अवतार आधे शक्ति अंश या अंश को कहते हैं । जैसे हनुमान रुद्र का ग्यारहवां अवतार थे । कोई भी अवतारी शरीर उस समय की आवश्यकता अनुसार पुतला मात्र होता है । जिसमें अनेक शक्तियां अपना शक्ति अंश दान करती हैं । और कोई एक प्रमुख शक्ति होती है । जैसे - विष्णु ।

प्रश्न 16- रामपाल की किताब में ये भी लिखा था कि कृष्ण जी ने अर्जुन के सामने शरीर त्यागा । तब अर्जुन के मन में ये विचार थे कि " कृष्ण पापी और कपटी है "

ये अफ़वाह और किवदंती ही है । जिसका सत्य से कोई वास्ता नहीं । दरअसल किसी भी ज्ञान में आजकल सत्य के स्थान पर झूठ अधिक प्रचलित है ।

प्रश्न 17- रामपाल के अनुसार जो गीता आजकल पढने को मिलती है । उसको महर्षि वेदव्यास से कालपुरुष ने बाद में (कृष्ण जी के बाद) आकर लिखवाया ?

गीता वेदव्यास ने ही लिखी है । प्रश्न की तरह की बात अफ़वाह है । कालपुरुष ही अवतार रूप में श्रीकृष्ण होता है । उसे ये छोटे मोटे नाटक की जरूरत नहीं होती । सात दीप । नौ खन्ड का मालिक या राष्ट्रपति कालपुरुष ही इस त्रिलोकी का सर्वाधिक बलवान है । उसे ऐसे टटपुंजुए काम की आवश्यकता नहीं होती । आदिशक्ति । सीता या

राधा उसकी पत्नी है । कालपुरुष के बाद त्रिलोकी में इससे (आदिशक्ति से) भी बडी कोई शक्ति नहीं है । वेदव्यास भी साधारण पुरुष नहीं थे ।

प्रश्न 18- रामपाल के अनुसार महाभारत युद्ध के बाद गोपियों को जंगली लोग उठाकर ले गये ?

लगभग सभी को मालूम । ये बात एकदम सत्य है । भीलन लूटी गोपिका । वही अर्जुन वही बाण । दरअसल

अर्जुन को महाभारत युद्ध जीतने के बाद अपनी ताकत और सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर होने का घमन्ड हो गया था । महाभारत युद्ध में श्रीकृष्ण के अर्जुन के रथ से नीचे उतरते ही रथ एक विस्फ़ोट के साथ उड्कर नष्ट हो गया । अर्जुन ने आश्चर्य से श्रीकृष्ण की तरफ़ देखा । तब श्रीकृष्ण ने कहा । ये रथ तो जाने कितने पहले ही भीष्म पितामह । कर्ण । द्रोणाचार्य.. आदि महाबलियों के प्रहार से नष्ट हो चुका था । ये सिर्फ़ मेरे बैठने से अब तक बचा हुआ था । फ़िर भी अर्जुन का गर्व पूरी तरह दूर नहीं हुआ । उसी गर्वहरण की भीलों द्वारा गोपिकाओं का हरण । बूढे हनुमान जी द्वारा पूँछ हटाने की कहना आदि कई बातें हुयी ।

प्रश्न 19- संत रामपाल है कबीर अवतार ऋग्वेद मंडल 9 सूक्त 86 मन्त्र 26 -27 तथा ऋग्वेद मंडल 9 सूक्त 82 मन्त्र 1 से -3 ऋग्वेद मंडल 9 सूक्त 96 मन्त्र 18 -19 -20 में साफ़-साफ़ लिख रखा है की परमात्मा मनुष्य की तरह एक राजा की तरह देखने योग्य है ! जो उपर अन्तरिक्ष में एक स्थान तीसरे मुक्ति धाम में विराज मान है साकार है ! वह अपने उस लोक से "स्थान" से चलकर गरजता हुआ इस लोक में आता है तथा एक भगत समुदाय का सेनापति की तरह अर्थात गुरु रूप में नेत्रत्व करता है ---- और वह गुरु संत रामपाल जी हैं जिनको स्वयम परमेश्वर ने अपना दूत बनाकर भेजा है जी ?

चार वेद तथा चार पुस्तकें ये आठों काल पुरुषके जाल हैं। इस जालमें फँसाकर उसने समस्त मनुष्योंको मार लिया और मनुष्योंको उसने ऐसा धोखा दिया कि, जितने नाम सत्य पुरुषके थे वे सब अपने नाम प्रकट किये। और सत्य पुरुषके धोखेमें समस्त मनुष्य कालपुरुषकी बंदनामें लगे और काल-पुरुषने सत्यपुरुषका नाम छिपाया और यह भेद ब्रह्मा विष्णु और शिवसे भी नहीं कहा इस धोखेसे समस्त मनुष्य इस शिकारीके शिकार हो गये। जो कोई चार वेद तथा चार पुस्तकों से पृथक् होगा उसको सूक्ष्म वेदकी ज्ञान प्राप्ति होगी। जिनका प्रेम पुरुषम वेंदसे है वे स्वसम्वेदसे कैसे प्रेम कर सकते हैं।

जितने पृथ्वीके मनुष्य हैं सो सब इस विषयसे एकबारगीही अनभिज्ञ हैं, उन लोगोंको केवल चार प्रकारकी मुक्तिकी सुध है और जितने अवतार पीर पैगम्बर पृथ्वीपर प्रकट हुए सो सब निर्गुण तथा सगुणका समाचार देते रहे। वेद तथा अन्यान्य पुस्तकोंमें इस बातका तनिक भी विवरण नहीं है कि, सत्यपुरुष कौन है। सब अचेत निद्रा तथा धोखेमें पड़े और कालपुरुको अपना पथदर्शक और मुक्तिदाता समझने लगे और जितने पीर पैगम्बर हुए किसीने भी सत्यपुरुषका स्थान स्वप्नमें भी नहीं देखा और न जाना। सब निर्गुण तथा सगुणका समाचार देते चले आये।

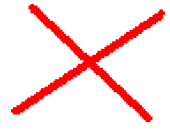
वैसे किसी भी वेद में सत्यपुरुष (परमात्मा) का ज्ञान नहीं है । वेद काल निरंजन की स्वांस से प्रकट हुआ है । अक्सर कालदूत बेहया बेशर्म निर्लज्ज और ज्ञान रहित दम्भी होते हैं । अनुराग सागर में इसी बात का जिक्र है । अद्वैत वैराग कठिन है भाई । अटके मुनिवर जोगी । अक्षर को ही सत्य बतायें । वे हैं मुक्त वियोगी ।

कबीर का कभी अवतार नहीं होता । प्राकटीयकरण होता है । कबीर किसी एक पुरुष का नहीं । उपाधि का नाम भी है ।

(परमात्मा मनुष्य की तरह एक राजा की तरह देखने योग्य है ! जो उपर अन्तरिक्ष में एक स्थान तीसरे मुक्ति धाम में विराज मान है साकार है ! वह अपने उस लोक से "स्थान" से चलकर गरजता हुआ इस लोक में आता है तथा एक भगत समुदाय का सेनापति की तरह अर्थात गुरु रूप में नेत्रत्व करता है - और वह गुरु संत रामपाल जी हैं - यहाँ से यहाँ तक यह रामपाल को ही परमात्मा बता रहा है । और ठीक इसी के आगे देखें । यह क्या कह रहा है - जिनको स्वयम परमेश्वर ने अपना दूत बनाकर भेजा है जी ।)

इसका अर्थ शायद यही हो सकता है - यह परमेश्वर को परमात्मा से बङा मानता है ? और इसे "दूत" शब्द की तुच्छता का भी ज्ञान नहीं । स्वयं कालपुरुष के लिये दूत शब्द प्रयोग नहीं होता । हाँ उसके नियुक्त दूतों को कालदूत अवश्य कहते हैं । इस हिसाब से अक्षर पुरुष यानी निरंजन सर का दूत = रामपाल । यह एकदम सत्य है । बल्कि 100% है । खुद कबीर साहब ऐसा बोल गये हैं । बागङबिल्ले कालदूतों के लिये ।

भक्ति मर्यादा



यह बात बिल्कुल ठीक है कि सबका मालिक/रब/खुदा/अल्लाह/गोड/राम/परमेश्वर एक ही है जिसका वास्तविक नाम कबीर है और वह अपने सतलोक/सतधाम/सच्चखण्ड में मानव सदृश स्वरूप में आकार में रहता है।

अनुभवहीन रामपाल परमात्मा को साकार बता रहा है । जबकि परमात्मा न साकार है । न निराकार है । न सगुण है । न निर्गुण है । यह सब काल निरंजन के बारे में हैं । अब देखो तुलसी साहिब हाथरस वाले, गुरु नानक, चरणदास और कबीर क्या कहते है परमात्मा के बारे में -

॥ शब्द नानक साहिब ॥

उघरा वह द्वारा वाह गुरू परिवारा॥ टेक।
चढ़ गइ चंग पतंग संग ज्यों। बंद चकोर निहारा॥ १॥
सुरति सोर जोर ज्यों खोलत। कुंजी कुलफ किवारा॥ २॥
सुरति धाइ धसी ज्यों धारा। पैठि निकसि गइ पारा॥ ३॥
आठ अटा की अटारि मँझारा। देखा पुरुष नियारा॥ ४॥
निराकार आकार न जोती। नहिं वह बेद बिचारा॥ ५॥
ओंकार करता नहिं कोई। नहिं वह काल पसारा॥ ६।
वे साहिब सब संत पुकारा! और पखंड पसारा॥ ७॥
सतगुरु चीन्ह दीन्ह यह मारग। नानक नजर निहारा॥ ८॥

अर्थ–गुप्त द्वार उकर (खुल) गया, गुरु का परिवार धन्य है। उन्हीं के साथ ही चित्त समाधि लग गई–जैसे डोरी के साथ पतंग और एक क्षण में उन्हीं के साथ ही चित्त समाधि लग गई। डोरी के साथ पतंग और एक क्षण के बाद उनको उस प्रकार देखने लगा जैसे चन्द्रमा को चकोर निहारता है॥ १॥

सुरति की समाधि के जोर एवं शोर से उसे ज्यों ही मैं कुंजी द्वारा उस जटिल दरवाजे को खोलता हूँ, सुरति दौड़ती हुई उसमें उसी प्रकार धँस उठी जैसे नदी की धारा में पानी॥ वह उसी में प्रविष्ट होकर उस पार निकल गई॥ 2-3॥

आठ खंड की अँटारी (महल) के बीच मैंने उस विलक्षण पुरुष को देखा॥ 4॥

उसकी कोई रूप रचना नहीं है, न कोई आकार है, न कोई ज्योति है और उसके विषय में न वेदों में भी कोई विचार हुआ है। न वह ऊँकार रूप है, किसी के लिए कर्त्ता रूप भी नहीं है, और न ही वह काल की व्याप्ति के बीच फैला हुआ है॥ ५-६॥

वही एक मात्र साहब (स्वामी) हैं, ऐसा सन्तों ने बताया है, शेष सब, पाखण्ड का प्रसार-प्रसार है॥ ७॥

यही एक मार्ग है (केवल सुरति समाधि का) जिसने सतगुरु सत्गुरु की पहचान दी है और नानक ने (उस पर चलते हुए) अपने नेत्रों से उसे देखा है॥ ८॥

१६ चरनदासजी की बानी

त्रेगुन रहित सदा हीं चेतन ना काहू उनहारा[१]।
निराकार आकार न कोई निर्मल अति निर्धारा॥ ३॥
अकरी[२] अलख अरूप अनादी तिमिर नहीं उजियारा।
ता में अखड दिपत[३] ऐसे करि ज्यों जल मद्धे तारा॥ ४॥
काल जाल भय सूती नाहीं तहाँ नहीं भ्रम क्षारा।
चरनदास सुकदेव दया सूँ बूड़ि गये ही पारा॥ ५॥

(१) पटतर, मिस्ल। (२) अकर्ता। (३) चमकता है।

वहँ है सतनामा ब्रह्म न जाना। वे सत साहिब अगम सही॥ ४॥
तीनों से न्यारा लोक पसारा। चौथे पद के पार वही।
जहँ है नि:नामी कोउ न जानी। तीनों पट के पार रही॥ ५॥
कहाँ अगम अनामी ठीक न ठामी। संतन जानी सार सही।
अंबर असमाना मही न भाना। चाँद सुरज तत तारे नहीं॥ ६॥
पानी नहिं पवना अगिनि न भवना। वेद भेद गति नाहिं लई।
ब्रह्मा नहिं बिस्ना राम न किस्ना। सिव सिद्धी नहिं पार लई॥ ७॥
निर्गुन नहिं सर्गुन नहिं अपबर्गुन। पिंड ब्रह्मंड दोउ नाहिं कही।
जोती नहिं सोती अगम न होती। पारब्रह्म की आदि नहीं॥ ८॥
नहिं कार अकारा नहिं निरकारा। सत्त नाम सत सत्त रही।
नहिं नाम अनामी तुलसी जानी। जाइ समानी सार मई॥ ९॥

।। शब्द ॥ कबीर साहिब ॥

कबीर पुकारा, मैं तो जगत से न्यारा ॥ टेक ।।
आदि पुरुष अविगत अबिनासी। दीप लोक पद पारा ॥ १ ॥
सरथि सहर हेर हिये द्वारा। सब्द न सिंध अकारा ।। २ ॥
काल न जाल स्वाल नहिं बानी। सो घर अधर हमारा ॥ ३ ॥
अंत न आदि साध कोइ जानै। सतगुरु पदम निहारा ॥ ४ ॥
नहिं तहँ आदि निरंजन जोती। सत्त पुरुष दरबारा ॥ ५ ॥
ब्रह्मा बिस्नु बेद बिधि नाहीं। नहीं आदि ओंकारा ॥ ६ ॥
ये सच्च यार प्यार लख पूरा। रूप न रेख जहूरा ॥ ७ ॥
कहै कबीर संत वोहि द्वारा। चकवा चौक हुकारा ॥ ८ ॥

अर्थ—कबीरदास पुकार-पुकार कर कहते हैं कि मैं तो इस संसार से अलग हूँ।

वह आदि पुरुष ज्ञानातीत और अविनष्टधर्मा है और शून्य द्वीप के लोक में उसका स्थान भी विलक्षण है।

हृदय के द्वारा समस्त नगर में मैंने उसे हृदय द्वारा तलाशा, किन्तु उसके लिए न कोई 'सबद' मिला, न सिंधु मिला, न रूप आकार मिला ॥ २ ॥

उसके लिए न काल है, न कोई जाल (संकट) है, न कोई प्रश्न है, न कोई वाणी है—वही अन्तरात्मा ही मेरा घर है। उसी अन्तरात्मा रूपी घरमें मैंने उसे देखा है, वैसे उसका आदि अन्त नहीं है, किन्तु सोई साधु ही उसे जानता है ॥ ३-४ ॥

उस निरंजन ज्योति का कोई आदि तत्त्व नहीं है, वहीं सत्य पुरुष (निर्गुण ब्रह्म) का दरबार है। न वहाँ आदि ओंकार तत्त्व है, न वहाँ ब्रह्म है, न विष्णु हैं, न वेद विधि वर्णित कोई अन्य तत्त्व ॥ ५-६ ॥

उस सत्य स्वामी साथी को प्यार से देखो, न उसका कोई रूप है, न लक्षण है और न पहचान तत्त्व है। कबीरदास जी कहते हैं कि उसके द्वार पर सन्तगण रहते हैं और चक्रवाक की भाँति ये सन्तगण उसके घर में स्वर करते (हुंकारते) रहते हैं ॥

प्रश्न 20- रामपाल कहता है कि निरंजन की उत्पति अण्डे से हुई थी ?

इस कविर्देव (कबीर प्रभु) ने सतपुरुष रूप में प्रकट होकर सतलोक में विराजमान होकर प्रथम सतलोक में अन्य रचना की।

एक शब्द (वचन) से सोलह द्वीपों की रचना की। फिर सोलह शब्दों से सोलह पुत्रों की उत्पत्ति की। एक मानसरोवर की रचना की जिसमें अमृत भरा। सोलह पुत्रों के नाम हैं :-(1) ''कूर्म'', (2)''ज्ञानी'', (3) ''विवेक'', (4) ''तेज'', (5) ''सहज'', (6) ''सन्तोष'', (7)''सुरति'', (8) ''आनन्द'', (9) ''क्षमा'', (10) ''निष्काम'', (11) 'जलरंगी' (12)''अचिन्त'', (13) ''प्रेम'', (14) ''दयाल'', (15) ''धैर्य'' (16) ''योग संतायन'' अर्थात् ''योगजीत''।

सतपुरुष कविर्देव ने अपने पुत्र अचिन्त को सत्यलोक की अन्य रचना का भार सौंपा तथा शक्ति प्रदान की। अचिन्त ने अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की शब्द से उत्पत्ति की तथा कहा कि मेरी मदद करना। अक्षर पुरुष स्नान करने मानसरोवर पर गया, वहाँ आनन्द आया तथा सो गया। लम्बे समय तक बाहर नहीं आया। तब अचिन्त की प्रार्थना पर अक्षर पुरुष को नींद से जगाने के लिए कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने उसी मानसरोवर से कुछ अमृत जल लेकर एक अण्डा बनाया तथा उस अण्डे में एक आत्मा प्रवेश की तथा अण्डे को मानसरोवर के अमृत जल में छोड़ा। अण्डे की गड़गड़ाहट से अक्षर पुरुष की निंद्रा भंग हुई। उसने अण्डे को क्रोध से देखा जिस कारण से अण्डे के दो भाग हो गए। उसमें से ज्योति निरंजन (क्षर पुरुष) निकला जो आगे चलकर 'काल' कहलाया। इसका वास्तविक नाम ''कैल'' है।

जैसा कि अनुराग सागर में बताया हुआ है । निरंजन की उत्पति सत्यपुरुष के पांचवे शब्द से हुई थी ।

तेज नाम से कोई सुत नहीं है । वास्तव में काल निरंजन अत्यंत तेज अंग वाला होकर आया था ।

सोलह सुत का प्रकट होना

चौपाई

दूजे शब्द जु पुरुष प्रकाशा। निकसे कूर्म चरण गहि आशा॥
तीजे शब्द जु पुरुष उच्चारा। ज्ञान नाम सुत उपजे सारा॥
टेकि चरण सम्मुख ह्वै रहेऊ। आज्ञा पुरुष दीप तिन्ह दएऊ॥

सत्यपुरुष ने जब दूसरे शब्द को प्रकाशित किया, उससे कूर्म जी प्रकट हुए और उन्होंने आशा (विश्वास) कर सत्यपुरुष के चरणों को पकड़ कर वंदना की। जब सत्यपुरुष ने तीसरे शब्द का उच्चारण किया, तो उससे ज्ञान[1]-नाम के सुत उत्पन्न हुए (जो सब सुतों में सार, अर्थात श्रेष्ठ थे)।

ज्ञान-नाम के सुत सत्यपुरुष के चरणों में प्रणाम कर सामने खड़े रहे, तब सत्यपुरुष ने उनको एक द्वीप में रहने की आज्ञा दी।

चौपाई

चौथे शब्द भये पुनि जबहीं। विवेक नाम सुत उपजे तबहीं॥
पांचवे शब्द जब पुरुष उचारा। काल निरंजन भौ औतारा॥

सत्यपुरुष ने जब जैसे-ही चौथे शब्द का उच्चारण किया, तब ही विवेक-नाम के सुत उत्पन्न हुए। सत्यपुरुष ने जब पांचवें शब्द को उच्चारा, तो उससे काल-निरंजन का अवतार हुआ।

॥ चौपाई ॥

तेज अंग ते काल ह्वै आवा। ताते जीवन कह संतावा।
जीवरा अंश पुरुष का आहीं। आदि अंत कोउ जानत नाहीं॥

काल-निरंजन अत्यंत तेज-अंग (तेज रूप-भीषण प्रकृति) वाला होकर आया। उसी से, अर्थात अपने उग्र-स्वभाव से उसने सब जीवों को कष्ट दिया है।

जीव सत्यपुरुष का अंश है। जीव के आदि-अंत को कोई नहीं जानता है (क्योंकि जीव नित्य-अविनाशी है। यह आदि-अंत से रहित शाश्वत है। नाशवान का आदि-अंत एवं जन्म-मरण होता है, किंतु यह तो अजन्मा है। परंतु अज्ञानवश यह अपने अविनाशी स्वरूप को भूलकर काम-मोहादि विषयों में भटक जाता है, जिससे काल द्वारा अनंत दुख पाता है)।

197

ज्ञानी (योगजीत) वचन निरंजन प्रति

॥ चौपाई ॥

कह ज्ञानी सुनु राय निरंजन। तुम तो भये वंश में अंजन॥
जीवन कहं मैं आन बचाई। सत्य शब्द सतनाम दृढ़ाई॥
पुरुष आज्ञा ते हम चलि आऊ। भौ सागर ते जीव मुक्ताऊ॥
पुरुष अवाज टारु यहि बारा। छन महं तोकहं देउं निकारा॥

ज्ञानी जी ने कहा कि हे निरंजन राय! सुन, तुम तो सत्यपुरुष के वंश में, अर्थात उनके सोलह-सुतों में अंजन (कालिख) रूप कलंकित हुए हो। मैं जीवों को सत्य शब्दोपदेश कर सत्यनाम दृढ़ाकर बचाने आया हूं। भवसागर में जीवों को मुक्त करने के लिए मैं सत्यपुरुष की आज्ञा से आया हूं। सत्यपुरुष ने मुझे जैसी आज्ञा दी है, यदि तुम उसे टाल देते हो, अर्थात उसमें विघ्न डालते हो, तो इसी क्षण मैं तुम्हें यहां से निकाल दूं।

तुलसी साहिब हाथरस वाले जी भी यही कहते है कि सत्यपुरुष के 16 सुत या पुत्र या अंश या निरगुन में से ही एक निरंजन था ।

सतनाम इक साहिब स्वामी । सो निज रहै अगमपुर धामी ।
तिन के पुत्र निरंजन होई । जा ने रची सकल बिधि सोई ।

वाहगुरु का अंस कहइया । जा से सोलह निरगुन भइया ।
ता में एक निरंजन राई । गुरु अंस से जोती आई ।

सतनाम से उपजा सोई । ऐसे सोला निरगुन होई ।
यह सब पिंड ब्रहमाण्ड के माई । सोला निरगुन सुन्न समाई ।

सोला निरगुन है निरबानी । निराकार जाही को जानी ।
जोति निरंजन सोई कहाई । ता को संत काल गोहराई ।

कही कबीर सोई पिरथम भाखा। छूटै तिमिर होय अभिलाखा॥
सुन और महासुन के पारा। जहँ वो सार सब्द बिस्तारा॥
येहि अलोक कब्बीर लखावा। ता पीछे सतलोक बतावा॥
सुन और महासुन्न उन गावा। हम अनाम निःनाम सुनावा॥
सत पुरुष सतलोक कहाये। ता को हम सतनाम सुनाये॥
सोला सुत कब्बीर बखाना। हम ने सोला निरगुन ठाना॥

उसी तत्त्व का विवेचन कबीरदास जी ने सर्वप्रथम किया है, इससे अंधकार विनष्ट हो उठता है—धर्म की अभिलाषा चित्त में बढ़ जाती है। शून्य तथा महाशून्य के उस पार स्थित जहाँ से उस मूल तत्त्व का विस्तार हुआ है—उस अलोक तत्त्व को कबीरदास जी ने दिखाया था, और उसके पीछे सत्लोक बताया है। उन्होंने उसे शून्य तथा महाशून्य कहकर बताया था और हमने उसे अनाम और निःनाम कहकर पुकारा है। सत् पुरुष के लोक को सत्लोक कहा जाता है, उसको हम 'सत् नाम' कहकर सुनाते हैं। कबीरदास जी ने सोलह पुत्रों की बात कही है, मैंने सोलह निर्गुण स्थल कहकर उन्हें पुकारा है॥

॥ सवैया ४॥

जब पिंड न अंड नहीं ब्रह्मंड, सो कहे नवखंड बने न बिसाऊँ।
जबै सतपुरुष रहे सुख धाम, सो वा में बसै सतलोक कहायौ।
ता ने कियौ सब ठाट बैराट, सो सोला निरबान को ता ने बनायौ।
सोला में एक को दीन्ह निकार, सोई निराकार न जगत भुलायौ॥
पुरुष के अंस से जोति भई, सो वही निराकार की कहियै लुगाई।
ता के पुत्र भये पुनि तीन, सो ब्रह्मा बिस्नु महेस कहाई।
कुंभ निरबान के अंग से जान, लिये पाँचौ तत्त बैराट बनाई।
काल निरबान जो ठाट कियौ, सो बैराट में जोति और काल समाई॥
ता कौ कहै भगवान अज्ञान, सो जाही ने जीव चराचर खाई।
सो ताही को पूजि चलै नर चालि, सो काल निरबान न जाल बिछाई।
अंड के पार कह्यौ नहिं सार, सो जार पसार रहे गति माई।

जब न पिंड है, न अंड है, न ब्रह्मांड है और जिसे नौ खंड कहते हो—वह कैसे बनेगा, न विस्तार (बिसाऊँ) होगा। जब सत्पुरुष अपने सुख धाम में निवास करेगा तब उस धाम को सत्य लोक (सतलोक) कहा जाएगा। उसी ने सम्पूर्ण वैराट की रचना करके अपना ठाट-बाट बनाया है और उसी ने सोलह निर्वाण की रचना की है। उसने इस सोलह में से एक को अलग कर दिया और वही निरंकार है, उसी ने सम्पूर्ण जगत को विस्मृत कर रखा है॥

पुरुष के अंश से ज्योति बनी-वही ज्योति निरंकार की पत्नी है। उनके तीन पुत्र हुए और वे ब्रह्मा, विष्णु, महेश कहलाये।। उस निरंकार के अंग से वैराट ने पाँच तत्त्वों की रचना की। इस काल ने निरंकार के साथ जो ठाट बाट किया उसके कारण वह ज्योति के साथ सम्पूर्ण वैराट में समा गया॥

॥ उत्तर – तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

पिरथम पुरुष अनाम अकाया। रहै नहीं बैराटी माया॥
जिन से सत्त नाम भया जाना। चौथा पद सोइ संत बखाना॥
जहँ सोइ सत्तनाम अस्थाना। सत्त लोक की करौं बखाना॥
सत्त लोक से निरगुन आया। आदि अंत का भेद सुनाया॥
जा सुत सोल्हा निरगुन होई। ता की बिधि भाखौं सुन सोई॥
चंद न सूर गगन नहिं तारा। धरति न पानी पवन अकारा॥
सेस कुरम नहिं दस औतारा। आदि अंत नहिं कीन्ह पसारा॥
ब्रह्मा बिस्नु बेद बिधि नाहीं। बिधि बैराट रचौ नहिं जाई॥
तब नहिं बेद बेद का करता। रूप रेख बिन रहै अकरता॥
निरगुन पुत्र पुरुष को सोई। ता कर नाम निरंजन होई॥
चौथा पद सतनाम दयाला। ता कर पुत्र निरंजन काला॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥ चौपाई

सुनु गुनुवा तो को समझाऊँ। आदि अंत या की बतलाऊँ॥
सत्तलोक इक पुरुष अपारा। चौथे पद के पार बिचारा॥
तापु अंत जिव पुरुष नियारा। जा का पद चौथे के पारा॥
ता के पुत्र भये पुनि भाई। सोला निरगुन तिन कर नाई॥
सो निरगुन जो पुरुष से भैया। जा में लघू निरंजन कहिया॥
ता को संत काल गोहरावै। सोई राम रमतीत कहावै॥
सोई निरंजन कहिये काला। आदहि जोति बिछाई जाला।
पुरुष निरंजन जोती नारी। ये दोऊ मिलि सृष्टि रचा री॥
तिन के पुत्र तीनि जो जाना। ब्रह्मा बिष्नु ताहि कर नामा॥
तीजे संभू छोटे भाई। तीन पुत्र या बिधि उपजाई॥
निरंजन पिता जोति है माता। ये तीनों इन से उतपाता॥
रमतीता सोइ बुझौ काला। जोती काल रचा जंजाला॥
ता के भये दसौ औतारा। काल अंस जग राम पसारा॥
रमता राम कर्म के माहीं। रमतीत राम काल की छाहीं॥

तीनि लोक से चौथा न्यारा। चौथे के परे अगम अपारा॥
पुरुष तहाँ इक अगम अनामी। चौथा पद तेहि पार ठिकानी॥
चौथा पद सतनाम कहाई। तेहि नानक वाहगुरू बताई॥
सत्त नाम वाह गुरू बतावा। तेहि कबीर सत सब्द लखावा॥
तीनों नाम एक हैं भाई। वे बासी चौथे पद माहीं॥
वाहगुरू का अंस कहइया। जा से सोलह निरगुन भइया॥
ता में एक निरंजन राई। गुरू अंस से जोती आई॥
जोति निरंजन की है नारी। दोनों मिलि कीन्हा बिस्तारी॥
वाहगुरू पद इनसे न्यारा। निराकार नहिं जोति पसारा॥
तीनि लोक निराकार समाना। वाहगुरू चौथे में जाना॥
वाहगुरू का भेद नियारा। निराकार नहिं पावै पारा॥
जोति निरंजन किया बिधाना। उपजे तीन पुत्र परमाना॥
ब्रह्मा बिष्नु महेसुर जाना। काल निरंजन से उतपाना॥
निरंजन जोति काल अन्याई। दस औतार याहि के भाई॥
काल ने लिये दसौ औतारा। तीनि पुत्र पुनि साज सँवारा॥

घट रामायण / २४३ ॥ तुलसी साहिब-चौपाई॥

ये तुम्हरी कछु भूल न भाई। या की बिधी कहौं समझाई॥
सत्तनाम इक साहिब स्वामी। सो निज रहै अगमपुर धामी॥
तिन के पुत्र निरंजन होई। जा ने रची सकल बिधि सोई॥
जोति अंस स्वाती से आवा। दोनों मिलि बैराट बनावा॥
आई जोति निरंजन पासा। निराकार जोती को ग्रासा॥
जब पुनि पुरुष दीन्ह तेहि स्त्रापा। लच्छ जीव करिहौ नित ग्रासा॥
जाउ निरंजन होइहौ काला। जग में रचिहौ बहु जंजाला॥
ऐसा ज्वाब पुरुष मुख डाला। भया निरंजन जग में काला॥
तीन लोक में रहै समाई। चौथे में नहिं जाने पाई॥
ऐसा स्त्राप पुरुष ने दीन्हा। काल निरंजन को अस चीन्हा॥
पुरुष पुत्र जग जाग्रत नामा। ता को हुकम दीन्ह तेहि ठामा॥
निरंजन काल जोति को ग्रासा। जाहि काटि आवौ हम पासा॥

प्रश्न 21- सोसाइटी का कोई वर्ग कबीर को कवि बोलता है । कोई कबीर को भगत बोलता है । कोई कबीर को संत बोलता है । कोई कबीर को डायरेक्ट परमात्मा बोलता है । आखिर ये कबीर चीज क्या हैं ?

कबीर ये सब तो थे ही । परम सत्य को जानने वाले भी थे । अंतिम लक्ष्य तक पहुँचे हुये सतगुरु थे । कबीर के बारे में ये सब बातें स्थूल रूप में । आपके प्रश्न के अनुसार सत्य ही है । पर परमात्मा की ये लीला अति गोपनीय और विलक्षण है ।.. क्योंकि कबीर जब यहाँ थे । तब उन्होंने स्वयँ एक बार कहा था ।.. कबीर कबीर कौन कबीर ?

काया में जो रमता वीर । कहते उसका नाम कबीर । यानी धुर (सिर के मध्य) से लेकर नाभि तक जो स्वांस में रमण कर रहा है । वही कबीर है । साधारण स्थिति में स्वांस मुँह में तलुये (नाक द्वारा) से नाभि तक आती जाती प्रतीत होती है । पर वास्तव में इसका आना जाना धुर से हो रहा है । हँस दीक्षा में सत्यनाम द्वारा साधक ज्यों ज्यों ऊपर की मंजिलें तय करता जाता है । वो इस चेतनधारा से जुङ्ता जाता है ।

तुलसी साहिब हाथरस वाले जी भी यही अर्थ बताते है ।
काया बीर कबीर कहाई । सब्द रूप है घट के माईं ।
ता को नाम कबीर कहाई । सो कबीर है जग के माईं ।
सतगुरु तो सतपुरुष बताया । सतलोक रहे पुरुष अकाया ।
वहँ से सुरति कबीरा आई । तीनि लोक ब्रहमाण्ड समाई ।
आतम जीव कबीर कहाई । धर्मदास मन को बतलाई ।
काया बीर कबीर कहाई । धर्मदास मन को समझाई ।

अवतार की तर्ज पर कबीर भी यदा यदा धर्मस्य ग्लानि.. की तरह अज्ञान और तन्त्र मन्त्र के पाखण्डी ज्ञान का बोलबाला हो जाने पर हर युग में प्रकट होते हैं । त्रेता में इन्होंने ही हनुमान को वास्तविक राम का बोध कराया था । जबकि वे तब तक अवतारी राम को ही सब कुछ मानते थे । रावण पत्नी मंदोदरी को भी कबीर ने ज्ञान यानी हँसदीक्षा दी थी । आज से लगभग 500 वर्ष पहले - सिकन्दर लोधी । राजा वीर सिंह । मगहर नरेश बिजली खाँ पठान आदि राजा महाराजा कबीर के शिष्य हुये ।

अब कबीर और परमात्मा (सत्यपुरुष) के बारे में -

कबीर साहेब के चारों युग में होने के नाम इस प्रकार दर्शाये गए है ।
सतयुग सत्सुकृत । त्रेता मुनींद्र कर थामा ।
द्वापर करुणामय सुखदायी । कलियुग नाम कबीर धरायी ।

माया मरी न मन मरा । मर मर गए शरीर ।
आशा तृष्णा न मरी । कह गए दास कबीर ।

सुखिया सब संसार है खावै और सोवै ।
दुखिया दास कबीर है जागै अरू रोवै ।

दास कबीर कहैं समझाई । अंतकाल तेरा कौन सहाई ।
चला अकेला संग न कोई । किया अपना पावैगा ।

दास कबीर जतन करि ओढी ।
ज्यों कीं त्यों धर दीनी चदरिया....

तुलसी साहिब हाथरस वाले जी ने भी कबीर को सत्यपुरुष का दास कहा है ।

३५० / घट रामायण

ये मत बिधि सब कही बखाना। बारा नाम मनहिं के जाना॥
नरायनदास नर मन है भाई। येहि बिधि दास कबीर बताई॥
मन मृत अंध दूत बतलाई। मन नित मृत करै जग जाई॥
ये मन तिमर जगत को लावा। या ते तिमर नाम मन पावा॥
मन जगअंध अचेत करावा। अंध अचेत दूत ठहरावा॥

घट रामायण / ३५१

यह महंत मन अंधा धुन्धा। येहि माँ काल रखावा फंदा॥
दास कबीर येहि पुनि भाखा। हमहूँ दीन्ह येही बिधि साखा॥
वह कबीर यह तुलसी लेखा। मन मानै तौ करौ बिबेका॥
तुलसी संत चरन की आसा। संत सरन में सुरति निवासा॥

यह महन्त का अंधा धुन्ध है–और इसी में काल ने अपना पाश रख छोड़ा है। कबीरदास जी ने भी यहीं कहा है–हमने भी इसी प्रकार की ही साक्षी दी है। वह कबीर का मत है, यह तुलसी का मत और तुम्हारा मन स्वीकार करे तो इसे स्वीकार करो। तुलसी को तो निरन्तर सन्त चरणों की आशा रहती है और सन्तों की ही शरण में सुरति की निवास स्थली है॥

कबीरदास जी ने अपना सत्तगुरु सत्यपुरुष को बताया है । ऐसा तुलसी साहिब जी की वाणियों में भी स्पष्ट है । देखे अगले चित्र में ।

॥ गुपाल गुसाईं। चौपाई॥

सुन स्वामी तुलसी समझाईं। यह कबीर ने अगम सुनाई॥
यामैं मन बुधि चित नहिं चाली। उपजी एक सुनाऊँ हाली॥
सतगुरु नाम कबीर कहाये। वे जग में मुक्ती ले आये॥

अर्थ–हे गोस्वामी तुलसी साहब कबीरदास जी ने जो कुछ भी कहा है, उसमें उस अगम्य तत्त्व को समझाया है। इसमें मेरा मन-मेरा चित्त तथा मेरी बुद्धि नहीं चल पाती। कबीरदास जी द्वारा कही हुई वाणी को मैं सुनाता हूँ। कबीर स्वयं सतगुरु के नाम से पुकारे गए हैं, और वे संसार में मुक्ति होकर आए हैं।

॥ तुलसी साहिब। चौपाई॥

धर्मदास मुख होती बानी। तौ कबीर सतगुरू बखानी॥
खुद कबीर मुख बचन बतावा। उन सतगुरु कहौ केहि कों गावा॥
यह तौ अर्थ न आवा भाई। कही कबीर सो गुरू बताई॥

अर्थ–धर्मदास के मुख से यदि यह बाणी कही होती तो ठीक थी क्योंकि उन्होंने कबीरदास जी को सतगुरु बताया है। स्वयं कबीर के मुख से यह बात कही गई है–बताएँ, उनको सतगुरु किसने कहा है। यह अर्थ उनके ऊपर के शब्द से नहीं निकलता है–कबीर साहब ने किसको गुरू कहा है, उसे बताएँ।

॥ गुपाल गुसाईं। चौपाई॥

सुन स्वामी तुलसी इक बाता। मैं नहिं जानौं अर्थ बिख्याता॥
हम तौ सब्द पढ़न पढ़ि लीन्हा। गाइगाइ खँजरीसँग कीन्हा॥
बोले हाथ जोरि मुख बानी। स्वामी तुलसी कहौ बखानी॥

अर्थ–हे स्वामी तुलसी साहब! मेरी एक बात सुनें–मैं इसमें निहित विवेक सम्पन्न अर्थ को नहीं जानता। वह शब्द था, मैंने, उसे उसी रूप में पढ़ लिया और गा-गाकर उसे खँजड़ी के राग में मिला दिया। के हाथ जोड़कर मुख से बाकी दोगे। हे स्वामी! तुलसी साहब, इसका अर्थ आप वर्णित करें।

॥ तुलसी साहिब। चौपाई॥

तुलसी मन मुसकाने भाई। मैं कहा जानौं गुपल गुसाईं॥
सतसंगति संतन में पाई। सो मैं भाखौं समझि सुनाई॥
सतगुरु तो सतपुरुष बताया। सत्तलोक रहे पुरुष अकाया॥
वहँ से सुरति कबीरा आई। तीनि लोक ब्रह्मंड समाई॥
आतम जीव कबीर कहाई। धर्मदास मन को बतलाई॥
काया ब ीर कबीर कहाई। धर्मदास मन को समझाई॥
मन इंद्री बिच बास कराये। गुन प्रकृती बिच जग उपजाये॥
काया बिच बस बँधे कबीरा। भूले सिधु अमोलक हीरा॥
सिंध बुन्द तजि सूरति आई। वा कर नाम कबीर कहाई॥
बुन्द सिंध की सुधि बिसराया। काया बन्द कबीर कहाया॥

यहाँ कबीर अपने पंच तत्वों से बने हुए मनुष्य शरीर का नाम कबीर बता रहे है । न कि परमात्मा का नाम कबीर है ।

कोई कुल हंस शब्द जो पावई । तीनो जुग जीव थोरा आवई ।

कलियुग मोरा मनुष्य शरीरा । जा कहँ सुनियौं नाम कबीरा ।

कबीर कबीर तु क्या करो । साधो अपना शरीर ।

पांचो इन्द्री वश करो । तुमही दास कबीर ।

यहाँ कबीर सत्यपुरुष का वर्णन कर रहे है ।

एक रोम की शोभा ऐसी और बदन की वरणों कैसी ।

ऐसा पुरुष कान्ति उजियारा । हंसन शोभा कहौं बिचारा ।

जब सत्यपुरुष के एक रोम की शोभा ऐसी है तो और शरीर की शोभा का किस प्रकार वर्णन करूँ ? सत्यपुरुष की छवि (सौन्दर्य) का ऐसा अद्‌वितीय (अनुत्तम) प्रकाश है । अब हंसो की शोभा का वर्णन विचार कहता हूँ ।

चार भुजा के भजन में । भूलि परे सब संत । कबिरा सुमिरो तासु को । जाके भुजा अनंत ।

चार भुजाओं के देवताओं की भक्ति में सभी सन्त भूले हुये हैं । लेकिन कबीरदास अनन्त भुजाओं वाले साहेब की भक्ति करता है ।

कबीर कूता राम का । मुतिया मेरा नाउं ।

गले राम की जेवड़ी । जित खैंचे तित जाउं ।

कबीरदास जी कहते हैं - मैं तो राम (अविनाशी राम) का कुत्ता हूँ और नाम मेरा मुतिया (मोती) है गले में राम की जंजीर पड़ी हुई है । उधर ही चला जाता हूँ जिधर वह ले जाता है ।

कृपया ध्यान दे । कबीर जी ने ये बात चौथे राम (परमात्मा) के लिए कही थी ।

अब " राम " को जानिये। केवल चार लाइनों में पहुँचे हुये सन्तों ने ये दुर्लभ रहस्य सरलता से बता दिया है । वे चार लाइनें ये हैं -

जग में 4 राम हैं । 3 सकल व्यवहार ।

चौथा राम निज सार है । ताको करो विचार ।

एक राम दशरथ का बेटा । एक राम घट घट में बैठा ।

एक राम का सकल पसारा । एक राम है सबसे न्यारा ।

अब इसका सही अर्थ -जग में 4 राम हैं । 3 सकल व्यवहार ।

इस संसार में 4 राम हैं । जिनमें से 3 व्यवहार या चलन में हैं । मतलब हम उनसे परिचित हैं । लेकिन -

चौथा राम निज सार है । ताको करो विचार ।

जो इन सबसे अलग चौथा राम हैं । उसी से हमें वास्तविक मतलब है । अतः उसका ही विचार करें ।

एक राम दशरथ का बेटा । एक राम घट घट में बैठा ।

राजा दशरथ के पुत्र 1 राम को तो लगभग विश्व में सभी जानते हैं । और अज्ञानता वश इन्हें ही सब कुछ मानते भी हैं । एक राम घट घट में यानी प्रत्येक शरीर में चेतन या रमता (गतिशीलता) रूप में मौजूद हैं । अध्यात्म की तकनीकी भाषा में इसको ररंकार कहा जाता है । हमारे शरीर की प्रत्येक हरकत क्रिया इसी ररंकार की चेतन ऊर्जा से संचालित हैं । और स्वयँ ररंकार को ये ऊर्जा नाम (वास्तविक शब्द) से प्राप्त होती है ।

एक राम का सकल पसारा ।

एक राम जो अखिल सृष्टि में व्यापक है । जिसको कण कण में समाया बोलते हैं । और उसी चेतना से क्रियाशील होती जङ प्रकृति माया के परदे पर इस सृष्टि को बनाती बिगाङती रहती है । अर्थात परिवर्तन करती रहती है ।

एक राम है सबसे न्यारा ।

विशेष - यही वो " राम " हैं । जिसको जानने से वास्तविक लाभ होता है । अतः हमारे समस्त भाव समस्त जिज्ञासाएं इन्हीं पर केन्द्रित होनी चाहिये । जो सभी ज्ञात अज्ञात अखिल सृष्टि के मालिक हैं ।

सन्तमत में या धार्मिक ग्रन्थों में अधिकांश " नाम " या मन्त्र के स्थान पर राम शब्द का ही प्रयोग किया है । ऐसा विषय के विस्तार में जाने से बचने हेतु किया गया है । क्योंकि एक ही स्थान पर सभी व्याख्या संभव नहीं है । यदि जिज्ञासु आगे भी इच्छुक होगा ।तब उसके प्रसंग अनुसार वह भेद भी पता चल ही जायेगा । क्योंकि राम शब्द समस्त जीवधारियों में वास्तविक अर्थों में रमता अर्थात चेतन (धारा भी) या श्वांस को ही ध्वनित करता है । इसमें कोई विशेष माथापच्ची की आवश्यकता नहीं है । श्वांस के बिना ये शरीर और मन दोनों ही जङ हैं । शरीर में रमता श्वांस ही राम है ।

कबीरदास जी के शिष्य बिहार वाले दरिया साहेब जी क्या कह रहे है अपने सतगुरु कबीर जी के बारे में

कबीरा की गति कबीरा जाने । कबीरहिं मैं पहिचाना ।

कहें दरिया वोय दर-दर फीरे । भेष विविध है बाना ।

सत्य पुर्ष बालक नहिं अहई । बालक से तरुना नहिं कहई ।

जेहुं तेहुं तत्तु गहिर गम्भीरा । सत्य पुर्ष के पुत्र कबीरा ।

सोरह सुत पुर्ष के तामे एक कबीर ।

आवै जाए जक्त में । फिरि फिरि धरे शरीर ।

कुछ विद्वानों के अनुसार सत्यपुरुष के 16 अंशो में से एक कबीरदास या योगजीत है - अनुराग सागर

प्रथमें सतयुग में चलि आये । सुकृत नाम जो यहां कहाये ।

सतयुग में सत शब्द बखाना । सत्तलोक का कहा ठिकाना ।

योग संतायन नाम कहाया । सत्तनाम कहि ग्यान दृढाया ।
सूक्ष्म भेद ज्ञान कहि दीन्हा । जो चीन्हे आपन कै लीन्हा ।

करुणामय को रूप धरि । मुनीन्द्र आये कहाईया ।
योग जीत है नाम । जग में ज्ञान दृढाईया ।

कलऊ कबीर काशी स्थाना । नाम संतायन पन्थ बखाना ।
सत्त सुकृत का धरा शरीरा । निर्मल ज्ञान कथि कहा कबीरा ।

अजर लोक से साहब आये । अगम लीला केहू भेद न पाये ।
आपुहिं उदित धरा है काल । आपुहिं पुरष अवरि सब चेला ।
आपुहिं प्रकट जग में चलि आये । सकलो दोविधा दूरि बोहाये ।
जिन्दा रूप वोये पुरुष पुराना । अजर लीला वोये अर्ध निशाना ।
सत्त वचन निश्चय निर्वाना । श्रीमुख वचन लिखा निजु ज्ञाना ।
सत्त कहा बूझे कोई ज्ञानी । साहब कहा सत्त सहिदानी ।
अगम लीला वोये भेद निनारा । साहब आये यहाँ पगु ढारा ।
शहर धरकन्धा थै परवाना । तहवाँ साहब आये तुलाना ।

सोई कहें जो कहहिं कबीरा । दरिया दास पद पायो हीरा ।
साहेब परिचय दीन्ह देखाई । ताते लोक कहा समुझाई ।

कहो कथा युग युग चलि आई । संत सुखद मुल मंगल गाई ।
अक्षय वृक्ष वोय पुरुष अकेला । सुत निरंजन सो संग चेला ।
सोरह सुत सब लोक नेवासा । सुकृत सदा पुरुष के पासा ।
सोई सुकृत सोई जोग जीता । महिमा अलख प्रेम निजु हीता ।

अब देखिये खुद कबीर कह रहे है कि मैं तो सत्यपुरुष की आज्ञा से आया हूँ ।

पुरुष आज्ञा ते हम चलि आऊ । भौ सागर ते जीव मुक्ताउ ।
पुरुष अवाज टारु यहि बारा । छन महं तोकहं देउं निकारा ।

कबीरदास जी ने कहा कि - भवसागर से जीवों को मुक्त करने के लिए मैं सत्यपुरुष की आज्ञा से चला आया हूँ । सत्यपुरुष ने मुझे जैसी आज्ञा दी है, यदि तुम उसमे विघ्न डाल देते हो, तो इसी क्षण मैं तुम्हे यहाँ से निकाल दूँ ।

धर्मदास सुनु सतयुग भाऊ । जिन जीवन को नाम सुनाऊ ।
सतयुग सतसकृत मन नाउँ । आज्ञा पुरुष जीव चेताऊँ ।

सद्गुरु कबीर साहेब कहते है कि हे धर्मदास ! सुन, सतयुग में जीवों को मैंने नाम ज्ञान (सत्यपुरुष का) सुनाकर सावधान किया । सतयुग में मेरा नाम सतसुकृत हुआ और सत्यपुरुष की आज्ञा से मैंने जीवों को चेताया ।

प्रथमो सुनो आदि की बानी । करिके ध्यान लेहु तुम जनी ।
सतयुग पुरुष मोहिं हकराई । आज्ञा कीन्ह जाहु जग भाई ।
पहले तुम आदिपुरुष की वाणी सुनो और ध्यान करके तुम समझ लो । सतयुग में सत्यपुरुष ने मुझे पुकारा तथा आज्ञा की कि तुम संसार में जाओ ।

(१७९०) बोधसागर ६

कबीर

सत्य पुरुषकी आज्ञा

सत्यपुरुषने ज्ञानीजीसे कहा कि, ऐ ज्ञानीजी ! काल पुरुषने समस्त जीवोंको फँसाकर मार लिया, सब जीव भटक भटक कर कालकी फाँसीमें पड गये, कोई जीव मेरे लोकमें नहीं आता मैंने सुकृति जी (धर्मदास) को सत्य पंथके प्रचारके लिये पृथ्वी पर भेजा था-उनको कालपुरुषने धोखा देकर लोक वेदमें फँसा लिया और धर्मदासजी सत्यपुरुषकी भक्तिको छोड़कर कालपुरुषकी भक्तिमें लग गये। इस कारण आप पृथ्वी पर जाओ और सुकृतिजीको चेताकर मुक्तिपंथ पृथ्वीपर प्रकट करो। तब ज्ञानीजी सत्यपुरुषकी आज्ञा शिरोधार्य कर दंडवत प्रणाम करके सत्यलोकसे बिदा हुए।

कबीर साहिबका काशीमें प्रकट होना

(६६) गरुड वचन गरुड बोध

शीश नाइ तिन पूछा भाये । हो तुम कौन कहाँसे आये ॥
कौन दिशा ते तुम चलि आऊ । अपनो नाम कही समझाऊ ॥

ज्ञानी वचन

कह ज्ञानी है नाम हमारा । दीक्षा देन आयऊ संसारा ॥
सत्यलोक से हम चलि आये । जीव छुडावन जग महँ आये ॥
सत्यपुरुष मोहि आज्ञा दीन्हा । सत्य शब्द हम लेइ तब लीन्हा ॥

इससे स्पष्ट होता है कि कबीरदास परमात्मा नहीं है । हाँ, लेकिन कबीर को परमात्मा स्वरुप जरूर कह सकते है ।

परमात्मा को जाना नहीं जाता । जो उसे जानता है वो वही हो जाता है । फिर दोनों में भेद नहीं रह जाता ।

जिसे परमात्म ज्ञान होता है वो परमात्मा का स्वरूप ही हो जाता है । वास्तव में सदगुरु परमात्मा स्वरूप ही होता है ।

सतगुरु सत्त पुरुष है स्वामी । सो चौथा पद संत बखानी ।

सत्य पुरुष महँ जाय समाना । हँस पुरुष एकहि कर जाना ।
दुतिया धोखा मिट तब गयऊ । एक रूप महँ एकसम एऊ ।

गुरु पुरुष नहिं आन । निश्चय कै जो मानहीं ।
ताहि मिलै सहिदान । मिटै काल क्लेश सब ।

मुक्ति देने वाले समर्थ सद्गुरु और सत्यपुरुष दो नहीं है । परन्तु जो निश्चय करके माने । उस सुपात्र शिष्य को अमरलोक जाने का सही दान (चिन्ह) मिलेगा और उसका सब कष्ट - क्लेश मिटेगा ।

गुरु नाम आप कहाया । गुरु पुरुष नहिं भिन्न बताया ।
अस जिव काल बस है रहई । दृढ प्रतीत कै गुरु नहि गहई ।

अज्ञान - अन्धकार को नष्ट कर ज्ञान - प्रकाश में लाने वाला, जड़ - चैतन्य एवं सत्य - असत्य का बोध कराने वाला होने से मैं स्वंय आप गुरु कहलाया । सद्गुरु और सत्यपुरुष को अलग नहीं बताया गया । इसके अनुसार गुरु की सेवा भक्ति सत्यपुरुष की ही सेवा भक्ति है । परन्तु जीव काल के वश में होकर ऐसा रहेगा कि वह झूठ अज्ञान में फंसा रहेगा, विश्वास के साथ गुरु को ग्रहण नहीं करेगा ।

जब बात परमात्मा (वास्तव में आत्मा) की है । तो आत्मज्ञान की अन्तिम स्थिति (और भी साफ़ शब्दों में सभी स्थितियों का अन्त) में वहाँ कहने सुनने वाला कोई नहीं होता । द्वैत समाप्त होकर । वह उसी में लीन होकर 1 अद्वैत ही रह जाता है । उसी को शास्त्रों ने सार तत्व या आत्मा कहा है ।

पारख प्रकाश : अप्रैल

परमात्मा को खोजने या पाने के पहले यह जानना होगा कि परमात्मा है क्या। बिना जाने खोजने का क्या मतलब। यह तो मंजिल की दिशा एवं स्थिति को जाने बिना ही वहां पहुंचने के लिए चल देना होगा। जब परमात्मा को जान लिया जायेगा तब न उसे खोजना रह जायेगा और न उसे पाने का भ्रम। जिस परमात्मा को पाकर हम तृप्त-कृतार्थ होना चाहते हैं वह कोई दूसरा नहीं, किंतु अपना आपा, अपना स्वरूप, अपनी आत्म सत्ता ही है और उसको पाना नहीं है, अपितु वह नित्य प्राप्त है, बस उसका बोध पाकर अपने आप में स्थित हो जाना है। अविद्या का परदा हटा, स्वरूप का बोध हुआ और परमात्मा मिल गया। सद्गुरु कबीर कहते हैं—

घूंघट का पट खोल रे तोको पिया मिलेंगे।

अर्थात ऐ मनोवृत्ति रूपी दुलहन! तू घूंघट का पट, अविद्या का परदा हटा दे, तुझे आत्मा-पति का दर्शन-साक्षात्कार हो जायेगा।

जब तक अपना आत्म तत्त्व निर्भ्रांत रूप से समझ में नहीं आता तब तक मनुष्य मन द्वारा सृजित कल्पना को ही परम तत्त्व मानकर उसके पीछे दौड़ता रहता है।

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं—

जब लग लखि नाहीं परत, तुलसी पर पद आप।
तब लग मोह बिबस सब, कहत पुत्र को बाप

अर्थात—जब तक मनुष्य को यह समझ में नहीं आता कि मेरा अपना आपा ही पर पद-श्रेष्ठ पद-परम तत्त्व है तब तक लोग मोहवश मन की कल्पना को ही श्रेष्ठ मानते रहते हैं।

सद्गुरु कबीर कहते हैं—

जेहि खोजत कल्पौ गया, घटहि माहि सो मूर।
बाढ़ी गर्भ गुमान ते, ताते परि गइ दूर

जिस परमात्मा, ईश्वर, ब्रह्म को खोजते अनादि काल का समय बीत गया, वह मूल तत्त्व घट ही में विद्यमान है। किंतु प्राणी-पदार्थों एवं दैहिक नाम-रूप का अहंकार एवं संदेह बढ़ जाने से वह दूर-जैसा हो गया है।

अध्यात्म पर से हटकर स्व की खोज है। पर का मोह-कल्पना छोड़कर स्व को जानकर स्व में ही स्थित होना है।

अंतर ज्ञान के खोजियों द्वारा अपने लिखित अनुभवों में भी इस बात को स्पष्ट किया गया है कि - कोई भी जीवात्मा वहाँ तक पहुँच कर वही हो जाता है । भेद मिट जाता है । क्योंकि वहाँ द्वैत है ही नहीं । 2 का सवाल ही नहीं ।

आदि पुरुष है सिरजन हारा । एकहि मूल एक है डारा ।
हम तुम एक पुरुष के कीन्हें । अब काहे तुम अन्तर दीन्हें ।

एकहि हम तुम एक शरीरा । एक शब्द है मतिके धीरा ।
दूसर भाव नहीं है आसा । सोई कबीर सोई धर्मदासा ।

पलटू साहिब की बानी

(भाग पहला)

॥ अद्वैत ॥

(१७६)

जल से उठत तरंग है जल ही माहिँ समाय ॥
जल ही माहिँ समाय सोई हरि सोई माया ।
अरुझा बेद पुरान नहीँ काहू सुरझाया ॥
फूल मँहै ज्योँ बास काठ मेँ आग छिपानी ।
दूध मँहै घिउ रहै नीर घट माहिँ लुकानी ॥
जो निर्गुन सो सर्गुन और न दूजा कोई ।
दूजा जो कोइ कहै ताहि को पातक होई ॥
पलटू जीव और ब्रह्म से भेद नहीं अलगाय ।
जल से उठत तरंग है जल ही माहिँ समाय ॥

कोटिन जुग परलय गई हमहीँ करनेहार ॥
हमहीँ करनेहार हमहिँ करता के करता ।
जेकर करता नाम आदि मेँ हम हीँ रहता ॥
मरिहैं ब्रह्मा बिस्नु मृत्यु ना होय हमारी ।
मरिहैं सिव के लाल मरैंगी सिव की नारी ॥
धरती अगिन अकास मुवा है पवन और पानी ।
आदि जोति मरि गई रही देवतन की नानी ॥
पलटू हम मरते नहीँ ज्ञानी लेहु बिचार ।
कोटिन जुग परलय गई हम हीँ करनेहार ॥
हमहीं [illegible] ॥
पलटू देह के धरे से वे साहिब हम दास ।
आदि अंत हम हीँ रहे सब में मेरो बास ॥

पलटू साहिब की बानी

॥ दूसरा भाग ॥

रेखता

५

॥ अद्वैत ॥

दास पलटू कहै दूसरा कौन है,
भर्म को छोड़ि दे द्वैत माया
एक अनेक अनेक फिर एक है,
एक ही एक ना और कोई ।
संत को एक अनेक संसार को,
रहा भरिपूर सब माहिँ सोई ॥
संत के अमर है मरै असंत के,
नरक औ सरग यहि भाँति होई ।
नरक औ सरग सब होत अनेक को,
दास पलटू हम देखि रोई ॥१४॥

नानक जी को भी अपने (परमातम) स्वरूप का ज्ञान था ।

रोम रोम में रमि रहा । नानक साह महबूब ।

सब में नानक रमि रहा । कही बावे मुख आप ।

सब में नानक आप समाना । तौ पुनि सभी गुरु सम जाना ।

ये बिधि या को बूझि बिचारा । जब होइ है जग से निरवारा ।

नानक पूरन पारब्रहम घटी घटि रहिआ व्याप्त ।

संत चरणदास जी भी ऐसा ही कहते है ।

है कोई जानै भेद हमारा ।

सब हम में हम सबके माहीं । मैं व्यापक में न्यारा ।

हम अडोल हम डोलत निशिदिन । हम सूक्षम हम भारा ।

हमहीं निर्गुण हमहीं सर्गुण । हमहीं दश अवतारा ।
हमहीं एक बहुत हो खेलैं । हमहीं सकल पसारा ।

मैं सबहून में सब मोहूँ में साँच यही करि जाना ।
यही वही है वही यही है दूजा भाव मिटाना ।

पलटू साहिब

सब में बड़े है संत दूसरा नाम है ।
तिसरे दस औतार तिन्हें परनाम है ।
ब्रह्मा बिसुन महेस सकल संसार है ।
अरे हाँ पलटू सब के ऊपर संत मुकुट सरदार है ।

गरीबदास जी ने भी सदगुरु कबीर को परमात्मा स्वरूप कहा है ।

गरीब, चौरासी बंधन कटे, कीनी कलप कबीर.....("पारख का अंग") :

गरीब, चौरासी बंधन कटे, कीनी कलप कबीर ।
भवन चतुर्दश लोक सब, टूटे जम जंजीर ।।
गरीब, अनंत कोटि ब्रह्माण्ड में, बंदी छोड़ कहाये ।
सो तो एक कबीर हैं, जननी जन्या न माये ।
गरीब, जल थल पृथ्वी गगन में, बाहर भीतर एक ।
पूर्ण ब्रह्म कबीर हैं, अविगत पुरुष अलेख ।।
गरीब, सेवक होय कर उतरे, इस पृथ्वी के माहि ।
जीव उधारण जगतगुरु, बार बार बलि जाहि ।।

गरीबदास जी परमात्मा के विषय में कहते है कि

अडोलम् अबोलम् अछेदम् अभेदम् । परे से परे रे कहो कौंन हेरे ।
अगम अथाह दरिया । गया तू बिसर रे ।

अडोलम् = जो हमेशा एक जैसी स्थिति में बना रहे या जिसमे कोई क्रिया न हो ।
अबोलम् = जो बोलता नहीं अर्थात अपने आप को व्यक्त नहीं करता या जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता ।
अछेदम् = जिसका छेदन नहीं किया जा सकता । जिसको काटा या बाँटा नहीं जा सकता ।
या जो छिद्र यानि विकार से रहित है ।
अभेदम् = जो भेद से रहित है (यानि के जिस के जैसा दूसरा कोई नहीं या)
जो समस्त जगत के नाना रूपों में व्यक्त होते हुए भी मूलतः एक जैसा ही है ।
जिस का भेद नहीं पाया जा सकता ।
परे सै परे = दूर दूर तक व्याप्त है ।
हेरे = हेर = पता लगाना । देखना ।

अगम = जिसे समझा न जा सके ।
अथाह = जिस के इस छोर या उस छोर । गहराई या ऊंचाई का पता न लगाया जा सके ।
बिसर = भूल जाना ।

वह परमेश्वर हमेशा एक जैसी स्थिति में बना रहता है । वह अपने आप को व्यक्त नहीं करता । उसे काटा या बाँटा नहीं जा सकता । वह सब में एक समान भेद से रहित है । वह हर तरफ दूर दूर तक व्याप्त है । ऐसे परमेश्वर को कौन देख (जान) सकता है ।

प्रश्न 22- रामपाल तीन प्रकार के ब्रहम के बारे में बताता है ?

1. पूर्ण ब्रह्म :- इस सृष्टी रचना में सतपुरुष-सतलोक का स्वामी (प्रभु), अलख पुरुष-अलख लोक का स्वामी (प्रभु), अगम पुरुष-अगम लोक का स्वामी (प्रभु) तथा अनामी पुरुष-अनामी अकह लोक का स्वामी (प्रभु) तो एक ही पूर्ण ब्रह्म है, जो वास्तव में अविनाशी प्रभु है जो भिन्न-२ रूप धारण करके अपने चारों लोकों में रहता है। जिसके अन्तर्गत असंख्य ब्रह्मण्ड आते हैं।

2. परब्रह्म :- यह केवल सात संख ब्रह्मण्ड का स्वामी (प्रभु) है। यह अक्षर पुरुष भी कहलाता है। परन्तु यह तथा इसके ब्रह्मण्ड भी वास्तव में अविनाशी नहीं है।

3. ब्रह्म :- यह केवल इक्कीस ब्रह्मण्ड का स्वामी (प्रभु) है। इसे क्षर पुरुष, ज्योति निरंजन, काल आदि उपमा से जाना जाता है। यह तथा इसके सर्व ब्रह्मण्ड नाशवान हैं।

इससे सिद्ध हुआ कि तीन प्रभु हैं

ब्रह्म - परब्रह्म - पूर्णब्रह्म। इन्हीं को 1. ब्रह्म - ईश - क्षर पुरुष 2. परब्रह्म - अक्षर पुरुष/अक्षर ब्रह्म ईश्वर तथा 3. पूर्ण ब्रह्म - परम अक्षर ब्रह्म - परमेश्वर - सतपुरुष आदि पर्यायवाची शब्दों से जाना जाता है।

यही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 17 से 20 में स्पष्ट है कि पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) शिशु रूप धारण करके प्रकट होता है तथा अपना निर्मल ज्ञान अर्थात् तत्वज्ञान (कविर्गीर्भिः) कबीर वाणी के द्वारा अपने अनुयाइयों को बोल-बोल कर वर्णन करता है। वह कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ब्रह्म (क्षर पुरुष) के धाम तथा परब्रह्म (अक्षर पुरुष) के धाम से भिन्न जो पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरुष) का तीसरा ऋतधाम (सतलोक) है, उसमें आकार में विराजमान है तथा सतलोक से चौथा अनामी लोक है, उसमें भी यही कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अनामी पुरुष रूप में मनुष्य सदृश आकार में विराजमान है।

संतमत में ब्रहम को काल कहते है ।

ब्रहम शब्द एक तरह से प्रथ्वी पर विश्व सरकार के रूप में समझ सकते हैं । जैसे इस प्रथ्वी पर पूरी प्रथ्वी का एक अलग से राष्ट्रपति । एक प्रधानमन्त्री आदि भी हों । और बाकी सिस्टम ऐसा ही हो । तो प्रथ्वी के राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री के अधीन सभी देशों की राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री हों । इसको ब्रहम कहेंगे । क्योंकि ये गृह नक्षत्र लोक आदि अपने अपने ब्रहमाण्ड के एक अति विशाल अन्ड में स्थित होते हैं । इसलिये उसको ब्रहम + अन्ड = ब्रहमाण्ड कहते हैं ।

इस त्रिलोकी सत्ता का सबसे बडा भगवान काल निरंजन है । जिसको बहुत समय पहले धर्मराज कहा जाता था । लेकिन जब इसने सतपुरुष की अंश अष्टांगी कन्या यानी आध्याशक्ति जिसे शास्त्र की भाषा में आदिशक्ति भी कहते हैं । को खा लिया । तब से इसका नाम काल या काल निरंजन पड गया ।

परब्रहम और पारब्रहम का मतलब एक ही है । क्योंकि दोनों शब्द एक ही हैं । लोग अपने अपने हिसाब से लिख बोल देते हैं । इसका सीधा सा मतलब है । पारब्रहम यानी ब्रहम के पार । यानी हमारा प्यारा सचखन्ड । हमारा असली देश । हमारे पिताजी { परमात्मा } का घर ।

अनहद शब्द अपार दूर सो दूर है । चेतन निर्मल शुद्ध देह भरपूर है ।
ताहि निअक्षर जानि और निष्कर्म है । परमातम तेहि मान वही परब्रहम है ।

अनहद शब्द की महिमा और उसकी प्राप्ती का बिलास ।

शब्द १

॥ अष्टपदी ॥

अनहद शब्द अपार दूर सूं दूर है ।
चेतन निर्मल शुद्ध देह भरपूर है ॥ १ ॥
निःअच्छर है ताहि और निःकर्म है ।
परमातम तेहि मानि वही परब्रह्म है ॥ २ ॥
याके कीने ध्यान होत है ब्रह्म हीं ।
धारै तेज अपार जाहि सब भर्म हीं ॥ ३ ॥
वा पटतर[१] कोइ नाहिं जो यों हीं जानिये ।
चांद सूर्य्य अरु सृष्टि के माहिं पिछानिये ॥ ४ ॥

कबीर:

परब्रहम है अलख अपारा। हाथ पाउं नहिं देह सँवारा।

क्षर अक्षर कबही नहिं होई। पूरण ब्रहम व्यापक है सोई।

अलख रूप सदा अविनाशी। रहित चिंत अचिंत उदासी।

दोनों क्षर और अक्षर, ब्रहम (काल) के ही स्वरुप है ।

क्षर अक्षर दोउ ब्रहम स्वरूपा। क्षर बिन रहे अक्षर अनूपा।

अक्षर पारब्रहम सो आही। दुख सुख कछु व्यापै नहिं ताही।

अद्वैत ब्रहम = अविनाशी ब्रहम = अविगति ब्रहम = अखण्ड ब्रहम = आदि ब्रहम = पूर्णब्रहम = परमात्मा

पारब्रहम = परब्रहम

- परा या परम शब्द जहाँ भी यूज होता है। अध्यात्म में इसका सीधा सा अर्थ है। ब्रहम स्थिति से परे। अन्य स्थान पर " परे " का मतलब उससे हटकर या अलग होता है।

अर्जुन उवाच

अब तुम सुनौ हो चतुर सुजाना। निर्मल तोहि सुनावौ ज्ञाना ॥
निष्कामी इच्छा नहिं जाहीं। असंग अस्त्र लै काटै ताहीं ॥
असंग अस्त्र सब वृक्षहि काटा। जरा मरणको छूटौ घाटा ॥
सोइ साधू मन चलन न पावै। बाहेर जाते भीतर ल्यावे ॥
जैसे पुहुप वास है भाई। पवन सरूपी लेइ समाई ॥
ऐसे इन्द्री जिव है बासा। मन दौरे इंद्रिन के पासा ॥
इन्द्री साथ महा सुख मानै। अंतकाल रहु तेहि पछितानै ॥
इन्द्रिय वश जो मन नहिं होई। पूरण ब्रह्ममें रहै समोई ॥
मन इन्द्री सो रहै निनारा। सोई पावै मुक्ति के द्वारा ॥
ऐसा साधू कोई भाई। कोटिन मध्ये एक रहाई ॥
अर्जुन कहैं परमपद कैसा। कहै कृष्ण सुनु अर्जुन ऐसा ॥
कोटिन सूर्य्य एक सम होई। कोटिन चन्द्र पूरण है सोई ॥
तबो न बूजो ब्रह्म उजियारा। परब्रह्म है अपरं पारा ॥
अर्जुन कहै सुनो प्रभु मेरे। मैं आधीना दास हौं तेरे ॥

अक्षर कहते हैं । अ - क्षर यानी । जिसका कभी क्षय न हो । यानी जैसा का तैसा..ज्यों का त्यों ही बना रहे । ज्ञान में अक्षर " ज्योति " को कहते हैं । मतलब ज्योति कहते ही नहीं । इसका ठीक दीपक की ज्योति जैसा सुघड स्वरूप है । इसी ज्योति { के इर्द गिर्द } पर समस्त योनियों के शरीर बनते हैं । शरीर बनते बिगङते रहते हैं । पर ज्योति ज्यों की त्यों ही रहती है । इसी ज्योति पर आपके बङे से बङे देवता से लेकर चींटी..कुत्ता बिल्ली जैसे शरीर भी बनते हैं । जबकि अपने दूसरे अक्षर स्वरूप में ये झींगुर जैसी निरन्तर ध्वनि है । इसी को अखण्ड रामायण । राम कथा । या शंकर द्वारा पार्वती को सुनाई - अमरकथा भी कहते हैं । लगभग यही स्थिति शून्य 0 ज्ञान की कही जाती है । और यही काल भी है ।

अब जैसा कि हरेक तत्व । हर स्थिति । हर विभूति पर पुरुष { शब्द } जुङ जाता है । उसी तरह इसका भी एक अधिपति नियुक्त होता है । उसी को अक्षर पुरुष कहते हैं । ज्यादातर साधु यहीं जाकर अटक जाते हैं ।..अक्षर को ही सत्य बतायें ..वे हैं मुक्त वियोगी । वैसे ये ज्ञान की बङी ऊँची स्थिति है ।

परम अक्षर पुरुष से आपका क्या तात्पर्य है ? मेरी समझ में नहीं आया । मेरी नालेज के अनुसार इस तरह की कोई उपाधि नहीं होती । जब वह परम { परे } ही हो गया । तो फ़िर अक्षर अपने आप हट जायेगा ।

तीन देह उन्हीं से उपजी । कारन सुछ्म स्थूला हो ।
कारन देह में सहज सुरति है । औ अंकूर पसारा हो ।
सुछ्म देहं में ओहं सोहं । इनको ख़्याल अपारा हो ।
स्थिर देह में अंस है अच्छर । इच्छा उनसे धारा हो ।
ते अच्छर तें जोति निरंजन । सबको करत अहारा हो ।

कालपुरुष की तात्विक (आंतरिक) योग स्थिति अक्षर या ज्योति या निरंजन है ।

त्रिलोकी के पार चौथे लोक को सतलोक कहा जाता है ।

तीनि लोक जम पसारा । वो दयाल पद इनसे न्यारा ।

चौथे पद में सतगुरु बासा । तीनि लोक में काल निवासा ।

संत चरणदास:

क्षर ही नाद वेद अरु पंडित क्षर ज्ञानी अज्ञानी । बाँचन अच्छर क्षर ही जानो क्षरही चारौ बानी।

ब्रह्मा सेस महेसर क्षर ही क्षर ही त्रैगुन माया । क्षर ही सहित लिये औतारा क्षर हाँ तक जहँ माया ।

पाँचों मुद्रा जोग जुक्ति क्षर क्षर ही लगै समाधा। आठौ सिद्धि मुक्ति फल क्षरही क्षर ही तन मन साधा।

रबि ससि तारा मंडल क्षर ही क्षर ही धरनि अकासा। क्षर ही नीर पवन अरु पावक नर्क स्वर्ग क्षर बासा।

क्षर ही उतपति परलय क्षर ही क्षर ही जानन हारा। चरनदास सुकदेव बतावैं नि: अच्छर है सब सूँ न्यारा।

क्षर = नाशवान

है। क्योंकि कलयुग के प्रारम्भ में अपने पूर्वज अशिक्षित थे। उस समय परमेश्वर के तत्व ज्ञान को नकली संतों, गुरुओं, महंतों तथा आचार्यों ने ऊपर नहीं आने दिया तथा कलयुग के अंत में सर्व व्यक्ति भक्तिहीन तथा महाविकारी हो जाएंगे। अब यह वर्तमान का समय 20वीं सदी से शिक्षित समाज प्रारम्भ हुआ है। यह बिचली (मध्य वाली) पीढ़ी अर्थात् मनुष्य वंश चल रहा है।

वास्तविक ज्ञान अपने सद्ग्रन्थों में विद्यमान है, जिसे नकली संत, गुरु, आचार्य तथा महन्त नहीं समझ सके। जिस कारण से सर्व भक्त समाज शास्त्र विरुद्ध ज्ञान के आधार से दंत कथाओं (लोकवेद) पर आधारित होकर शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण (पूजा) करके अनमोल मानव जीवन व्यर्थ कर रहा है।

शास्त्र विधि अनुसार साधना :-

1. प्रथम चरण में ब्रह्म गायत्री मंत्र दिया जाता है, जो कमलों को खोलने का है।

उपदेश प्राप्त करने वाला भक्तात्मा यह सोचेगा कि गुरु जी कह तो रहे थे कि तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) की पूजा नहीं करनी है। मन्त्र जाप उन्हीं के दिए हैं। उनके लिए निवेदन है कि यह पूजा नहीं है। हम काल के लोक में रह रहे हैं। यहाँ हमने जो सुविधा चाहियेगी वह ब्रह्मा-विष्णु-शिव आदि ही प्रदान करेंगे।

2. दूसरे चरण में सतनाम प्रदान किया जाता है। जो दो मंत्र का है। एक ॐ (ओ3म्)+दूसरा तत् जो सांकेतिक है, केवल साधक को ही बताया जाता है।

3. तीसरे चरण में सार नाम दिया जाता है जो तीन मंत्र का है। ओ3म्-तत्-सत् (तत्-सत् सांकेतिक हैं जो साधक को ही बताए जायेंगे)।

इस प्रकार सारनाम (जो तीन मंत्र का बन जाएगा) के स्मरण अभ्यास से साधक परम दिव्य पुरुष अर्थात् परमेश्वर कविर्देव को प्राप्त होगा तथा सतलोक में परम शान्ति अर्थात् पूर्णमोक्ष को प्राप्त हो जायेगा।

रामपाल के कहने का तात्पर्य है कि 20वीं सदी से पहले समाज शिक्षित नहीं था ।

चक्रों (कमल) का जागरण तो निर्वाणी नाम से ही हो जाता है । आत्मज्ञान या सुरति शब्द योग में गायत्री मन्त्र या वाणी का कोई भी मन्त्र का किसी प्रकार स्थान नहीं है ।

सतनाम: ॐ सोहं

सारनाम: ॐ सोहं सत्यम

ओअं सोहं (ॐ सोहं) जाप सुनावा । सो सब ये माया भरमावा ।
वह तो सब्द सुन्न के माहीं । उलटे चढ़े अधर घर माहीं ।

ओहम (ॐ) से काया बनी । सोहम से मन होय । ओहम सोहम से परे । बूझे विरला कोय ।

जैसा की पहले भी स्पष्ट किया जा चुका है । ये काल के मन्त्र है । असली सतनाम हमारे घट (शरीर) में है ।

सन्त रामपाल दास जी महाराज भी परमेश्वर (परम अक्षर ब्रह्म) के उन अवतारों में से एक हैं जो आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा अधर्म का नाश करते हैं। अब विश्व में शांति होगी। सर्व धर्म तथा पंथों के व्यक्ति एक होकर आपस में प्रेम से रहा करेंगे। राजनेता भी निर्भिमानी, न्यायकारी तथा परमात्मा से डर कर कार्य करने वाले होंगे। जनता के सेवक बनकर निष्पक्ष कार्य किया करेंगे। धरती पर पुनः सत्ययुग जैसी स्थिति होगी। वर्तमान में धरती पर वह अवतार सन्त रामपाल दास जी हैं।

परमात्मा समस्त उपाधियों से रहित है । अवतार बगैरा तो बहुत छोटे खेल हैं । परमात्मा एक तिनका कार्य नहीं करता । हां । लेकिन उसके होने से । उसकी सत्ता से ये सब कार्य हो रहे हैं । तू हाकिम सारी दुनिया का । तेरा हुक्म न कोई टाल सके ।

नाम लेने वाले व्यक्तियों के लिए आवश्यक जानकारी

1. पूर्ण गुरु की पहचान : -- आज कलियुग में भक्त समाज के सामने पूर्ण गुरु की पहचान करना सबसे जटिल प्रश्न बना हुआ है। लेकिन इसका बहुत ही लघु और साधारण-सा उत्तर है कि जो गुरु शास्त्रों के अनुसार भक्ति करता है और अपने अनुयाइयों अर्थात शिष्यों द्वारा करवाता है वही पूर्ण संत है। चूंकि भक्ति मार्ग का संविधान धार्मिक शास्त्र जैसे - कबीर साहेब की वाणी, नानक साहेब की वाणी, संत गरीबदास जी महाराज की वाणी, संत धर्मदास जी साहेब की वाणी, वेद, गीता, पुराण, कुरआन, पवित्र बाईबल आदि हैं। जो भी संत शास्त्रों के अनुसार भक्ति साधना बताता है और भक्त समाज को मार्ग दर्शन करता है तो वह पूर्ण संत है अन्यथा वह भक्त समाज का घोर दुश्मन है जो शास्त्रों के विरूद्ध साधना करवा रहा है। इस अनमोल मानव जन्म के साथ खिलवाड़ कर रहा है। ऐसे गुरु या संत को भगवान के दरबार में घोर नरक में उल्टा लटकाया जाएगा।

रामपाल का खुद का ज्ञान किसी भी संत के ज्ञान से मेल नहीं खा रहा । अब आप स्वंय समझ सकते है उनको कहाँ लटकाया जायेगा ।

पूर्ण गुरु की पहचान:

सात दीप नव खण्ड में सतगुरु फ़ेंकी डोर ।
ता पर हँसा ना चढे तो सतगुरु की क्या खोर ।

कबीर के सभी दोहों की तरह यह दोहा भी खासा रहस्यमय है । सात दीप नव खण्ड यानी इस शरीर में सतगुरु शिष्य के लिये डोर डाल देते है । अब शिष्य को ध्वनि नाम रूपी इस डोर पर चढकर मंजिल यानी धुर तक पहुँचना

होता है ।

वास्तव में कबीर के इसी दोहे में पूर्ण उत्तर छिपा हुआ है। सतगुरु की सबसे बडी पहचान यही है कि वह आपकी स्वांस यानी चेतनधारा में गूँजते नाम को प्रकट कर देते हैं । और साधक की स्थिति अनुसार ये नाम उसको ऊपर ले जाता है । ये पहचान सतगुरु की हुयी कि - वह निर्वाणी ध्वनि रूपी नाम (झींगुर की आवाज जैसी ध्वनि) को सिर के अन्दर मध्य में प्रकट कर देते हैं । इस नाम को प्रकट करने की क्षमता सिर्फ़ सदगुरु की है । ध्यान रहे । सिर के अन्दर मध्य में प्रकट झींगुर जैसी महीन झंकार ।

लेकिन इसमें भी एक रहस्य है । ठीक ऐसी ही मगर तेज और मोटी आवाज में झंकार सिर के दाँये या बाँये या एकदम कान के आसपास सुनाई देती है । यह काल की आवाज है । जो गुरु या किसी सिद्ध के सानिध्य में होने की पहचान है ।

इसी आवाज का एक और रहस्य है । और खास तौर पर जापान में तो यह आम बात है । यह मस्तिष्क और कान की विभिन्न बीमारियों में भी बिलकुल ऐसी ही झींगुर जैसी झंकार सिर के आंतरिक भाग में स्पष्ट सुनाई देती है । पर यह न गुरु न सिद्ध और न ही सदगुरु के द्वारा प्रकट है । बल्कि यह बीमारी है । इन सब आवाजों में अन्तर होता है । जिसे कोई अनुभवी ही बता सकता है ।

इसी आवाज का एक और रहस्य है । काल और उसकी बीबी माया ने सतनाम के साधकों को भ्रमित करने हेतु झाँझरी आदि दीपों की रचना कर जगह जगह ऐसे मिथ्या मायावी संगीत का जादू फ़ैला दिया । ताकि ज्ञान की शरण में आया जीव भ्रमित हो जाये । लेकिन जो वास्तविक सतगुरु की शरण में होता है । उस पर ये जादू बेअसर रहता है । ये खासतौर पर मैंने आपको सतगुरु की पहचान बताई । क्योंकि गुरु में पारब्रह्म तक ले जाने की क्षमता नहीं होती । भले ही वह आत्मज्ञान या हँसज्ञान का ही हो ।

यदि तुम्हें गुरु की शरण में आये हुए तीन महीने से अधिक हो गए और तुम बताये हुए तरीके से साधना भी कर रहे हो और तुम्हें कोई अनुभव नहीं हुआ तो तुम सतगुरु तो क्या किसी गुरु की शरण में भी नहीं हो ।

धर्मग्रंथों में इस बात को स्पष्ट कहा गया है कि कलियुग में झूठें गुरुओं का बेहद बोलबाला होगा और जनता इनकी झूठी बातों में उलझ कर रह जाएगी । इसलिए यदि आपका गुरु सच्चा है तो अधिक से अधिक आपको तीन महीने में अलोकिक अनुभव होने लगेंगे । मैं ऐसे साधको को जानता हूँ जिन्हें ११ दिनों में अनेक अनुभव हुए और वो भली प्रकार साधना करने लगे ।

मैंने पहले भी कहा है । परमहँस दीक्षा वाले साधक सिर्फ़ हमारे यहाँ हैं । अन्य कहीं परमहँस दीक्षा नहीं होती । अब चाइना माल की तरह नकली और घटिया चलन चलाने वाले साधुओं में भी होते हैं । पर वे दो मिनट में पता चल जाते हैं कि हँस हैं या कौवा है ? फ़िर परमहँस की तो बात ही जाने दें । मैंने पहले भी कहा है । परमहँस दीक्षा साधक के शरीर से निकलने की स्थिति बनने लगे । तब दी जाती है । हँस ज्ञान देने वाला गुरु होता है । दशरथ पुत्र राम का हँस ज्ञान था । और श्रीकृष्ण का परमहँस ।

दुनियाँ में तन्त्र मन्त्र या किसी भी प्रकार का अलौकिक ज्ञान हो । उसका मुख्य आधार सिर्फ़ 1 ही है । कुण्डलिनी जागरण । केवल इसी कुण्डलिनी ज्ञान के विस्तार में अनेकों स्तर के लाखों गुरु तक हो सकते हैं । और उनकी एकमात्र पहचान यही है । जो भी प्रयोग साधना वो करायें । उनसे स्पष्ट अलौकिक अनुभव होना ।

आत्मज्ञान के सबसे उच्चतम सहज योग या राज योग का पहला चरण होता है । आत्मा की जङ चेतन से जुङी गाँठ को काट देना । और दूसरा उसका तीसरा नेत्र खोल देना । इस तरह अब तक जन्म जन्म से अज्ञान की जंजीरों में जकङा हँस आत्मा बृह्माण्ड की यात्रा करता है । और सुदूर लोकों को देखता है ।

अब सबसे मुख्य बात - अक्सर जिज्ञासु इस तरह के प्रश्न तो पूछते रहते हैं । पर दो खास बिन्दुओं की तरफ़ उनका ध्यान नहीं जाता । ये तीनों पूर्ण होने चाहिये । 1 पूर्ण गुरु । 2 पूर्ण ज्ञान (यानी शिष्य को पूरी थ्योरी पता हो) 3 पूर्ण शिष्य । तभी सही सफ़लता मिलती है । ये बात जीवन के हर क्षेत्र में भी लागू होती है । बस सिर्फ़ आपको गौर करना होगा ।

प्रश्न 23- परमात्मा से प्राप्ति का तरीका बतायें । और ये बतायें कि परमात्मा से प्राप्ति के बाद व्यक्ति के लक्षण कैसे होते है ?

1 सच्चा सदगुरु (ध्यान रहे । गुरु नहीं)

2 निर्वाणी अजपा मंत्र (ध्यान रहे । कोई अ क जैसा 1 अक्षर भी जीभ या वाणी से जपा जाता है । तो वह काल और काल सीमा का ही मंत्र है । परमात्मा प्राप्ति का मंत्र नहीं ।) और केवल

3 सुरति शब्द योग ही वो तरीका है । जो परमात्मा से मिला सकता है ।

4 विहंगम मार्ग का गुरु ही इस कार्य में समर्थ होता है । और

5 भृंग गुरु (शब्द ध्वनि से जीवात्मा का परमात्मा में प्रवेश कराने वाले) सर्वश्रेष्ठ होता है ।

मेरा चैलेंज है । इसके अलावा जो परमात्म साक्षात्कार का तरीका या मार्ग या मंत्र बताते हैं । वो न. 1 झूठे हैं ।

पहचान - गुरु स्वांसों में निरंतर होता निर्वाणी मंत्र (सोहं) दीक्षा के समय जागृत करते हैं । इसी समय तीसरा नेत्र खुल जाती है । दिव्य (चमकीला सफ़ेद) प्रकाश चक्र या सूर्य आदि जैसे गोले के रूप में बन्द आँखों के पीछे दिखाई देता है । इसके बाद कृमशः अभ्यास द्वारा अन्य अलौकिक दृश्य अनुभव यात्रायें आदि से गुजरना होता है ।

लक्षण - जैसे कोई निरक्षर अनपढ व्यक्ति पूर्ण शिक्षित हो जाये । जैसे कोई नितांत गरीब धन कुबेर हो जाये । तब उनमें जो बदलाव (विभिन्न क्षेत्रों में) होता है । वही बदलाव इस तरह जीवात्मा से परमात्म ज्ञान सम्पन्न व्यक्ति में हो जाता है । पर जिस तरह एक निम्न बुद्धि का व्यक्ति अति उच्च मेधावी व्यक्ति की मानसिकता का स्तर आदि नहीं समझ सकता । उसी तरह परमात्म ज्ञान से सम्पन्न साधु को समझना कठिन ही नहीं । लगभग असम्भव है । जबकि उस बारे में हम काफ़ी कुछ खुद न जानते हों । सन्तन की महिमा रघुराई । बहु विधि वेद पुराणन गाई ।

प्रश्न 24- काल पूजा और परमात्मा की पूजा में अन्तर कैसे किया जाये । सच क्या है । कैसे पता चले । हमारा गुरु या पंथ हमसे जो भक्ति करा रहा है । वो काल पूजा है । द्वैत है । या अद्वैत है आदि आदि ।

सबसे पहली बात तो यही है कि परमात्मा की भक्ति मौन हर कर्म काण्ड से रहित और नाम जप पूर्णतया निर्वाणी (बिना वाणी के जपा जाना । अजपा । जिसका जप स्वयं हो रहा है) है । मतलब आपको 2 अक्षरों से बने शब्द का भी कोई भी नाम या मन्त्र गुरु देता है । तो वह सन्तमत आत्मज्ञान या अद्वैत की भक्ति नहीं है । बल्कि काल पूजा ही है । यहाँ नये लोगों को थोडी अड्चन हो सकती है । क्योंकि हम या सच्चे सन्त मत के गुरु भी जो नाम देते हैं ।उसको भी ढाई अक्षर का कहा जाता है । जाहिर है । ढाई अक्षर का होने से वह भी शब्द हुआ । पर अन्तर है । यह नाम वाणी के जैसा न होकर ध्वनि स्वरूप है । और चेतनधारा यानी स्वांस में स्वयं गूँज रहा है । और साधारण जीव स्थिति में यह नाम उल्टा हो गया है । इसी के लिये कहा गया है -उल्टा नाम जपा जग जाना । वाल्मीकि भये ब्रहम समाना । इसी उल्टे नाम को प्राप्त कर जीव जब काग वृति (कौआ स्वभाव । मल विष्ठा युक्त चीजों में आसक्ति) से हँस हो जाता है । और बृहमाण्ड में ऊँचा उठने लगता है । तब ये हँस ज्ञान बोध से प्रकाशित हुआ इसी नाम को उलटकर " हँसो..हँसो " कहता है । जबकि काग वृति में अहम वश " सोहं..सोहं " पुकारता है । कहीं ररंकार आदि स्थिति पर ये र्र्र्र्र और म्म्म्म्म्म्म्म यानी कालपुरुष का र अक्षर और उसकी पत्नी माया का म अक्षर संयुक्त कर राम ध्वनि भी गुँजाता है । बस खास बात यही है कि अद्वैत में ये सब ध्वनि स्वरूप है । जबकि कुण्डलिनी जागरण जैसी क्रियाओं में ॐ आदि शब्द कुछ अन्य मन्त्र भी बिना बोले ठीक उसी तरह सुनाई देते हैं । जैसे हम वाणी से बोलते हैं ।

अतः कोई भी गुरु आपसे वाणी द्वारा 1 अक्षर का भी नाम या मन्त्र वाणी द्वारा जपने को कहता है । तो वह सतनाम यानी परमात्मा की भक्ति नहीं है । वाणी के सभी स्वर अक्षर (अंतर आकाश में झींगुर जैसी निरन्तर ध्वनि) और उसके कंपन से उत्पन्न हो रहे हैं । और हमारे मुँह से निकलकर वापस आकाश में जाकर उसी अक्षर में लीन हो जाते हैं । और अक्षर को ही ज्योति कहते हैं । मतलब ज्योति कहते ही नहीं । इसका ठीक दीपक की ज्योति जैसा सुघड स्वरूप है । जबकि अपने दूसरे अक्षर स्वरूप में ये झींगुर जैसी निरन्तर ध्वनि है । इसी को अखण्ड रामायण । राम कथा । या शंकर द्वारा पार्वती को सुनाई - अमरकथा भी कहते हैं । लगभग यही स्थिति शून्य 0 ज्ञान की कही जाती है । और यही काल भी है । देखिये - अक्षर को ही सत्य बतावे । वे है मुक्त वियोगी ।

जहाँ तक मुख वाणी कही सो सब काल का ग्रास । वाणी परे जो शब्द है सो सतगुरु के पास । और वह सार शब्द है । कबीर साहब ने कहा है - धर्मदास तोहे लाख दुहाई । सार शब्द बाहर नहिं जाई ।

अब इसके सबूत भी देखिये - सार शब्द जब आवे हाथा । तब तब काल नवावे माथा ।

यानी बिलकुल अंतिम स्थिति । जितनी भी आपने पढी या सुनी ।उनसे एकदम अलग । इसी निर्वाणी नाम की भक्ति करते करते जब जीव अक्षर से भी पार । कई और स्थितियों से गुजरकर । एक तिनका वासना से भी रहित हो जाता है । तब ये सार शब्द ऊर्ध्व से उतरता है । और उसे खींचकर पार ले जाता है । लेकिन इससे पहले की स्थिति तक काल भी है । और माया भी । हालांकि राहत की बात ये हो जाती है कि कई VIP सहूलियतें साधक को पहले से ही मिलनी शुरू हो जाती हैं । जैसे - जबसे रघुनायक मोहि अपनाया । तबसे मोहि न व्यापे माया । यानी माया के क्षेत्र में रहते हुये भी उससे प्रभावित नहीं होते । उसका जादू बेअसर ही रहता है । काल हानि नहीं पहुँचाता - जबसे शब्द सुनो असमानी । तब से काल करे नहिं हानि ।

यही सार शब्द खींचकर परमात्मा से मिलाता है । उसी स्थिति को साक्षात्कार । आनन्द । परमानन्द । अवर्णनीय आदि कहा गया है । देखिये - अक्षर तीत शब्द एक बांका । अजपा हू से है जो नाका । ऊर्ध्व में रहे अधर में आवे । जो जब जाहिर होई । जाहि लखे जो जोगी फ़ेरि जन्म नहिं होई ।

यानी इससे पहले आवागमन है । जन्म मरण है ।

और भी प्रमाण देखिये - सार शब्द निर्णय का नामा । जासे होत मुक्त को कामा। यानी असली आत्मा का लक्ष्य । और यही गूढ है । अति गुप्त - सार शब्द निज गुप्त है कहऊँ वेद तोय सार । पाईये सो पाईये बाकी काल पसार । इसका जानने वाला शरीर बदलता हुआ सदैव अपने आप में स्थित रहता है । यानी माया से परे - शब्द न बिनसे बिनसे देही । हम साधु हैं शब्द सनेही ।

और देखिये । अद्वैत सन्तमत की एक मामूली लाइन । जो पूरे द्वैत ज्ञान की धज्जियाँ ही उङा देती है । धर्म कर्म दोऊ बटे जेवरी । मुक्ति भरे जहाँ पानी । यह गति विरले जानी ।

प्रश्न 25- निर्वाणी साधना और द्वैत साधना में फ़र्क कैसे करें ? और कालदूत साधुओं को कैसे जानें ?

सबसे पहली बात है कि आप दूसरों में दोष बाद में देखें । खुद अपना ही दोष जानें । जब द्वैत अद्वैत कुण्डलिनी मंत्र तंत्र हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सभी धार्मिक मत एक स्वर में कहते हैं कि - SUPREME POWER सिर्फ़ 1 ही है । और उसके सिवा दूसरा कोई नहीं हैं । और तुम भी वही हो । ये अखिल सृष्टि प्रकृति आदि जो कुछ भी दृश्य अदृश्य है । सब उसी से है । फ़िर भी आप बहुत को या 2 को मानते हो । तो सबसे पहले दोष आपका ही है । जबकि आप भी वही हो । जो अज्ञान रूपी अहम वश खुद को " मैं " और अलग मान रहे हो । यदि सिर्फ़ इसी सिद्धांत को गहरायी से अटल होकर स्वीकार कर लो । तो फ़िर कोई काल दूत हो । या और कुछ । आपका कुछ नहीं बिगाङ सकते । और फ़िर किसी ज्ञान की भी आवश्यकता नहीं । लेकिन ? बिना आंतरिक परिवर्तन के दरअसल इस भाव में स्थिर होना बहुत कठिन ही नहीं असंभव है । और ये ज्ञान (बोध) पहचान परिवर्तन सिर्फ़ सदगुरु (सदगुरु का अर्थ - सत्य प्रकाश या सत्य ज्ञान को जानने वाला) द्वारा ही संभव है । अतः द्वैत (लगभग) मिथ्या होते हुये भी एक अकाटय और कठोर सत्य भी है । और आप मूल रूप से अमर अजर अविनाशी आत्मा होते हुये भी जन्म मरण के कष्टदायक जीवात्मा के रूप में आत्म बोध न होने तक बेहद पीङा और तंगी युक्त जिन्दगी के लिये विवश हो ।

इसलिये मूल रूप से द्वैत के काल दूतों की चर्चा करते हैं । जो आपको इस भीषण कष्ट से निकलने ही नहीं देते । और आप इन्हीं के चरणों में - महाराज महाराज स्वामी जी कहते हुये नतमस्तक होते जाते हो । और बङा आसान है । इस काल (पुरुष) और इसके कालदूतों को जानना समझना ।

लेकिन इससे पहले आप अपनी जीव स्थिति को जानिये । आप बहुत छोटे दायरे छोटी सोच में अल्प ज्ञान में माया (मैडम) की करतूत से बंधे हुये हो । इसलिये प्रथ्वी (तत्व) जल (तत्व) अग्नि (तत्व) वायु (तत्व) को भी तत्व रूप से न जानते हुये सिर्फ़ इनके स्थूल रूप से व्यवहार करते हो । पाँचवें आकाश (तत्व) से आपका

कभी वास्ता नहीं पङता । और उच्च स्थितियों का सभी खेल आकाश से ही शुरू होता है । जो भी स्वर्ग आदि प्राप्तियाँ हैं । उनमें आकाश को तत्व रूप जानना होता है । और फ़िर उसके ऊपर भी ।

अब सबसे पहले तो ये समझिये कि इस त्रिलोकी सत्ता का राष्ट्रपति या सर्वेसर्वा ही कालपुरुष है । जो अपने 2 प्रत्यक्ष रूपों या अवतार राम (12 कला मर्यादा पुरुष) श्रीकृष्ण (16 कला योगेश्वर) द्वारा विभिन्न क्रीङायें करता है । जाहिर है । त्रिलोकी की इन 2 प्रत्यक्ष रूप शक्तियों से किसी जीव का (असली) मोक्ष ज्ञान रूपी भला न होता है । न कभी हो सकता है । क्योंकि खुद काल न ऐसा कर सकता है । न कभी करेगा । इसका तीसरा सिर्फ़ मृत्यु के समय प्रत्यक्ष हुआ रूप यमराज का है । उसमें तो ये अच्छे अच्छों के कच्छे गीले पीले कर देता है । ये तो सबको पता ही है । इसका चौथा अदृश्य और सबसे दुष्ट रूप जीव का मन है । सिर्फ़ जिसके द्वारा ही ये जीवों को अपने जाल में फ़ँसाये रखता है ।

कालपुरुष के प्रमुख परिचय के बाद । इसकी बेहद शातिर पत्नी महा माया उर्फ़ अष्टांगी उर्फ़ आदि शक्ति उर्फ़ महादेवी उर्फ़ पहली औरत आदि आदि है । ये और भी बङी खिलाङिन है । सभी प्रमुख देवियाँ और छोटी बङी ऊँच नीच देवियाँ इसी का अंश हैं । इसी के अधीन हैं ।
इसके बाद खास तौर पर इन दोनों के 3 पुत्र बृह्मा विष्णु महेश आते हैं । इनमें मंझला विष्णु बङा खिलाङी है । इसकी पत्नी लक्ष्मी माया रूप है । इसने (विष्णु) ही माया रूप स्त्री का निर्माण किया है । जीव को अपने पिता के सिर्फ़ भोजन हेतु काल जाल में फ़ँसाये रखना ही इसका जैसे एकमात्र ध्येय है । बङा बृह्मा बुद्धि चातुर्य के मामले में कुछ मतिमन्द है । वह छोटे शंकर और मंझले विष्णु की सपोर्ट से काम चलाता है । और काफ़ी हद तक कामी प्रवृति का और डरपोक भी है । कालपुरुष और अष्टांगी का छोटा पुत्र शंकर अपने बङे भाईयों की अपेक्षाकृत समझदार है । और योग में शंकर की अच्छी दिलचस्पी रहती है । फ़िर भी कोई भी कर्मचारी अपने पद अनुसार ही कार्य करेगा । और फ़िर अष्टांगी के भयंकर होते ही ये तीनों थरथर कांपते हैं । अतः शंकर भी घुमा फ़िराकर जीवों मनुष्यों को फ़ँसाये रखने का पिंजरा तैयार करता रहता है ।
और ये 5 ही प्रमुख है । बाकी सब इनके अधीनस्थ कर्मचारी ही हैं । इसी से आप समझ सकते हैं कि द्वैत पूजा या काल पूजा किसे कहते हैं ? आप जिसकी भी पूजा करते हैं । उसकी असलियत वास्तव में क्या है ?

अब आईये । इस लेख की सबसे महत्वपूर्ण बात जो काल दूतों के बारे में है । काल को जब इतने से भी तसल्ली नहीं हुयी । उसने सोचा । इसके बावजूद भी मेरे द्वारा कष्ट पाया जीव सतगुरु को पुकारेगा । वे उसजीव की सुनेंगे । और जीव मेरे चंगुल से निकल जायेगा । तब उसने इसी आत्मज्ञान में मिलावट करने हेतु कालदूतों का निर्माण किया । और उन्हें बेहतर प्रशिक्षित किया । ये ही आपका सबसे बङा नुकसान करते हैं । भ्रमित करते हैं । और ये संख्या में बहुत है । बल्कि संसार में ही फ़ैले हुये है ।
लेकिन इनके वैसे विस्तार में न जाकर मैं इनकी पोल खोल अन्दाज में बताता हूँ कि कैसे आप आसानी से इनकी परख कर सकते हैं ?

1 ये लोग भी कुछ कुछ रहस्यमय अन्दाज में काल निरंजन की बुराई (ताकि आप इन पर विश्वास करें) करेंगे । लेकिन घुमा फ़िराकर बात और मंत्र दीक्षा आदि उसी की देंगे । जैसे - हरि ॐ तत्सत या कबीर के 4 नाम जपने के लिए दे देंगे आदि ।

2 ये कबीर या किसी आत्म ज्ञानी सन्त की आड़ और उसका नाम लेकर उपदेश प्रवचन करेंगे । पर वास्तविकता में उस सन्त की मूल वाणी से उसका दूर दूर तक वास्ता न होगा ।

3 जिस तरह मैं डंके की चोट पर काल निरंजन । उसकी पत्नी । और उसके तीनों पुत्रों की खुली आलोचना करता हूँ । ये कभी नहीं करेंगे । बल्कि घुमा फ़िराकर इन सबके नाम के आगे जी आदि आदर सूचक शब्द आदि लगाकर बारबार उनको भगवान आदि शब्दों से पुकारेंगे । अप्रत्यक्ष महत्व भी देंगे । क्योंकि ये ही इनके आका हैं ।

4 एक जो खास प्वाइंट है । मैंने जन जन को इन काल दूतों और कालपुरुष एण्ड फ़ैमिली की ढंग से पोल खोलने वाली किताब - अनुराग सागर को बार बार लोगों को पढने के लिये प्रेरित किया । ये लोग भूल कर भी उसका नाम कभी नहीं लेंगे । क्योंकि ये किताब 1 मिनट में इन सबकी मिट्टी पलीद कर देती है ।

5 ये कबीर वाणी की बार बार बात करेंगे । पर आपको कबीर साहित्य पढने को कभी प्रेरित न करेंगे । बल्कि उसके बजाय - भगवद गीता । देवी भागवत । पुराण । उपनिषदों । वेदों की बात बार बार करते हुये इसी काल साहित्य (जाल) में उलझाये रखेंगे । लेकिन मूल कबीर वाणी पढते ही आपकी आँखें खुल जायेंगी कि असल मामला कितना अलग है । ये धूर्त कैसे सफ़ेद झूठ बोल रहे थे ?

6 ये सन्त मत या आत्मज्ञान दीक्षा के नाम पर कोई घटिया सा वाणी नाम मंत्र दे देंगे । वास्तव में जिसकी वैल्यू कुण्डलिनी के द्वैत योग जितनी भी नहीं होती । निर्वाणी नाम में 1 अक्षर भी नहीं बोलना होता है । ये नाम आपकी सांस में निरंतर हो रहा है । और अजपा है । यानी इसे जपना बिलकुल नहीं होता । सिर्फ़ स्वांसों पर ध्यान लगाना होता है ।

मुख सूं कहे जन नाम बतावे, सो शिष सीख धार घर जावे।
भजो रात दिन रहो लिव लाई, सत स्वरूप ना पावे भाई ।। ७ ।।

परमात्मा के जन मुंह से कहकर ईश्वर का कोई भी नाम बतावे और शिष्य उसे सीखकर घर चला जावे। रात दिन उस नाम का भजन कर लिव लगाता रहे तो भी उसे सतस्वरूप की प्राप्ति नहीं होती।

राम राम कोई आंण बतावे, तो पण सतस्वरूप ना पावे।
सत्त साहेब कहे निश दिन कोई, अन्तकाल जासी सब रोई ।। ८ ।।

यदि कोई आकर राम-राम का सिमरण करना बता देवे तो भी सत स्वरूप की प्राप्ति नहीं होती। कोई रात दिन सत साहेब-सत साहेब करो अन्तकाल के समय सबको पछताना पड़ेगा।

परम मोख निरभे पद गावे, सत्त साहेब कहे कदे न पावे।
कहणी सकल झूंठ है सारी, वाय शब्द सो बके विचारी ।। ९ ।।

परम मोक्ष व निरभे पद को गाते हैं। मुँह से सतसाहेब-सतसाहेब कहने से कभी प्राप्त नहीं होता है। मुख से कहणे की बात झूठ है। बाणी के आधार के शब्दों से उस पद की प्राप्ति नहीं होती।

कह सुखराम मत भूलो कोई, मुख की केण झूंठ सब होई।
मंतर सिमरण जप सारा, कल मुदरा विश्वास विचारा ।।५३।।

म:फः हैं कि मुंह से सिमरण करके कोई मत भूलो। मुख से कहे मंतर, सिमरण, जप, मुदरा, कूंची, विश्वास सब अैसे ही है। कला प्रगट होना, मुदरा की साधना करना, व विश्वास करने से मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती।

7 ये सार शब्द या परमात्मा की कभी बात न करेंगे। और यदि कोई चालू काल दूत हुआ तो वो सिर्फ़ बात ही करेगा। मध्य मार्ग का रास्ता और आत्म प्रकाश कभी नहीं दिखा पायेगा।

8 ये रंरकार से मिलती जुलती नकली धुन या झंकार को सारशब्द कहकर जीवों को काल के जाल में फंसायेंगे।

9 ये चिकने चुपडे आकर्षक भागवत कथा वाचकों के रूप में नर्क का भय और स्वर्ग का लालच दिखाकर आपको फ़ँसायेंगे। और मुक्ति को इतना सरल बतायेंगे। जैसे मुक्ति कोई रसगुल्ला खाना हो। इनसे भागवत करा लो। बस हो गये मुक्त ?

10 इनमें एक और खास बात होती है । जो कालपुरुष से इन्हें शक्ति के रूप में मिली होती है । ये पास आने वाले जिज्ञासुओं को आसानी से कुछ अलौकिक मायावी अनुभव करा देते हैं । जिससे मनुष्य तेजी से इन पर विश्वास कर लेता है ।

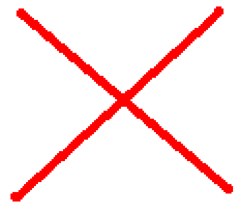
11 इनका ज्ञान टाल मटोल टायप का होगा । जिससे न तो आपकी जिज्ञासा शान्त होगी । और न आत्मिक तसल्ली ही प्राप्त होगी । क्योंकि भेङिये का काम भेङ को खाना ही है ।

12 मैं फ़िर कहूँगा । अगर इन धूर्त दुष्टों की असलियत जाननी हो । तो सिर्फ़ कबीर वाणी अनुराग सागर अवश्य पढें ।

अब प्रस्तुत है कालदूत रामपाल के झूठे या नकली प्रमाण

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 721, राग तिलंग महला 1)

यक अर्ज गुफतम् पेश तो दर कून करतार।
हक्का कबीर करीम तू बेअब परवरदिगार।
नानक बुगोयद जन तुरा तेरे चाकरां पाखाक।



उपरोक्त अमृतवाणी में स्पष्ट कर दिया कि हे (हक्का कबीर) आप सत्कबीर (कून करतार) शब्द शक्ति से रचना करने वाले शब्द स्वरूपी प्रभु अर्थात् सर्व सृष्टी के रचन हार हो, आप ही बेएब निर्विकार (परवरदिगार) सर्व के पालन कर्ता दयालु प्रभु हो, मैं आपके दासों का भी दास हूँ।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 24, राग सीरी महला 1)

तेरा एक नाम तारे संसार, मैं ऐहा आस ऐहो आधार।
नानक नीच कहै बिचार, धाणक रूप रहा करतार।।

उपरोक्त अमृतवाणी में प्रमाण किया है कि जो काशी में धाणक (जुलाहा) है यही (करतार) कुल का सृजनहार है। अति आधीन होकर श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि मैं सत कह रहा हूँ कि यह धाणक अर्थात् कबीर जुलाहा ही पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) है।

कालदूत रामपाल वाणियों को तोड़मरोड़ बताकर लोगों को भ्रमित कर रहा है । अब सही अर्थ नीचे देखें ----

कबीर although we know it as the name of a Bhagat but it is an Arabic word derived from Arabic root **ਕਿਬਰ**.

कबीर means ‘great’. The word ‘Akbar’ also is derived from this root which also means ‘Great’. This is why in English history books Emperor Akbar is called ‘ Akbar The Great’ because his name was Jalaludin Akbar.

हका कबीर करीम तू बेऐब परवदगार ॥१॥
You are true, great, merciful and spotless, O Cherisher Lord. ||1||

दुनीआ मुकामे फानी तहकीक दिल दानी ॥
The world is a transitory place of mortality - know this for certain in your mind.

मम सर मूइ अजराईल गिरफतह दिल हेचि न दानी ॥१॥ रहाउ ॥
Azraa-eel, the Messenger of Death, has caught me by the hair on my head, and yet, I do not know it at all in my mind. ||1||Pause||

जन पिसर पदर बिरादरां कस नेस दसतंगीर ॥
Spouse, children, parents and siblings - none of them will be there to hold your hand.

आखिर बिअफतम कस न दारद चूं सवद तकबीर ॥२॥
And when at last I fall, and the time of my last prayer has come, there shall be no one to rescue me. ||2||

सब रोज गसतम दर हवा करदेम बदी खिआल ॥
Night and day, I wandered around in greed, contemplating evil schemes.

गाहे न नेकी कार करदम मम ईं चिनी अहवाल ॥३॥
I never did good deeds; this is my condition. ||3||

बदबखत हम चु बखील गाफिल बेनजर बेबाक ॥
I am unfortunate, miserly, negligent, shameless and without the Fear of God.

नानक बुगोयद जनु तुरा तेरे चाकरां पा खाक ॥४॥१॥
Says Nanak, I am Your humble servant, the dust of the feet of Your slaves. ||4||1||

सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ एकु सुआनु दुइ सुआनी नालि ॥ भलके भउकहि सदा बइआलि ॥ कूड़ु छुरा मुठा मुरदारु ॥ धाणक रूपि रहा करतार ॥ १ ॥ मै पति की पंदि न करणी की कार ॥ हउ बिगड़ै रूपि रहा बिकराल ॥ तेरा एकु नामु तारे संसारु ॥ मै एहा आस एहो आधारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुखि निंदा आखा दिनु राति ॥ पर घरु जोही नीच सनाति ॥ कामु क्रोधु तनि वसहि चंडाल ॥ धाणक रूपि रहा करतार ॥ २ ॥ फाही सुरति मलूकी वेसु ॥ हउ ठगवाड़ा ठगी देसु ॥ खरा सिआणा बहुता भारु ॥ धाणक रूपि रहा करतार ॥ ३ ॥ मै कीता न जाता हरामखोरु ॥ हउ किआ मुहु देसा दुसटु चोरु ॥ नानकु नीचु कहै बीचारु ॥ धाणक रूपि रहा करतार ॥ ४ ॥ २६ ॥

[इन पंक्तियों में गुरु साहिब ने मानव मन में विद्यमान दुष्ट वृत्तियों से बचने का उपाय प्रस्तुत किया है।]

गुरु जी कहते हैं कि जीव के साथ लोभ रूपी कुत्ता है तथा आशा व तृष्णा रूपी दो कुत्तियाँ हैं। सदैव प्रातः होते ही ये आहार हेतु भौंकने लग जाते हैं। जीव के पास झूठ रूपी छुरा है, जिससे वह सांसारिक प्राणियों को ठग कर खाता है। अर्थात् जीव झूठ के आसरे अभक्ष्य पदार्थ सेवन करता है। हे प्रभु ! सांसारिक जीव हत्यारे के रूप में रह रहा है॥ १॥ जीव के लिए गुरु जी स्वयं को पुरुष मान कर कहते हैं कि मैंने उस प्रभु–पति की प्रतिष्ठित शिक्षा ग्रहण नहीं की तथा न ही कोई श्रेष्ठ कार्य किया है। मैं ऐसे विकृत विकराल रूप में रह रहा हूँ। हे प्रभु ! आपका एक नाम ही भवसागर पार करने वाला है। मुझे इसी नाम की आशा है और इसी नाम का आश्रय है॥ १॥ रहाउ॥ मैं अपने मुँह से दिन–रात निन्दा करता रहता हूँ। मैं निम्न वर्ग वाला चोरी करने हेतु पराए घरों की ओर देखता रहता हूँ। इस देह में काम–क्रोधादि चाण्डाल बसते हैं। हे प्रभु ! मैं हत्यारे के रूप में रह रहा हूँ॥ २॥ मेरा ध्यान लोगों को फँसाने में लगा रहता है, यद्यपि मेरा बाह्य भेष फकीरों वाला है। मैं बड़ा ठग हूँ तथा दुनिया को ठग रहा हूँ। मैं स्वयं को बहुत चतुर समझता हूँ, लेकिन मेरे ऊपर पापों का बहुत भार पड़ा हुआ है। हे प्रभु ! मैं हत्यारे के रूप में रह रहा हूँ॥ ३॥ मैंने प्रभु के किए उपकारों को भी नहीं जाना, अतः मैं कृतघ्न हूँ। मैं दुष्ट चोर हूँ, सो मैं किस मुँह से परमात्मा के दरबार में जाऊँगा। अर्थात् मैं अपने कुकृत्यों से इतना शर्मिन्दा हूँ कि प्रभु के द्वार पर क्या मुँह लेकर जाऊँ। गुरु नानक देव जी स्वयं को जीव रूप में सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि मैं इतना नीच हो गया हूँ। मैं हत्यारे के रूप में रह रहा हूँ। अर्थात्–इस स्वरूप में मेरी मुक्ति कैसे होगी ?॥ ४॥ २६॥

"पवित्र अथर्ववेद में सृष्टी रचना का प्रमाण"

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 1 :–

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः।। 1।।

ब्रह्म–ज–ज्ञानम्–प्रथमम्–पुरस्तात्–विसिमतः–सुरुचः–वेनः–आवः–सः–बुध्न्याः –उपमा–अस्य–विष्ठाः–सतः–च–योनिम्–असतः–च–वि वः

अनुवाद :– (प्रथमम्) प्राचीन अर्थात् सनातन (ब्रह्म) परमात्मा ने (ज) प्रकट होकर (ज्ञानम्) अपनी सूझ–बूझ से (पुरस्तात्) शिखर में अर्थात् सतलोक आदि को (सुरुचः) स्वइच्छा से बड़े चाव से स्वप्रकाशित (विसिमतः) सीमा रहित अर्थात् विशाल सीमा वाले भिन्न लोकों को उस (वेनः) जुलाहे ने ताने अर्थात् कपड़े की तरह बुनकर (आवः) सुरक्षित किया (च) तथा (सः) वह पूर्ण ब्रह्म ही सर्व रचना करता है इसलिए उसी मूल मालिक ने मूल स्थान सतलोक की रचना की है (अस्य) इसलिए उसी (बुध्न्याः) मूल मालिक ने (योनिम्) मूलस्थान सत्यलोक की रचना की है (अस्य) इस के (उपमा) सदृश अर्थात् मिलते जुलते (सतः) अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म के लोक कुछ स्थाई (च) तथा (असतः) क्षर पुरुष के अस्थाई लोक आदि (वि वः) आवास स्थान भिन्न (विष्ठाः) स्थापित किए।

भावार्थ :- पवित्र वेदों को बोलने वाला ब्रह्म (काल) कह रहा है कि सनातन परमेश्वर ने स्वयं अनामय (अनामी) लोक से सत्यलोक में प्रकट होकर अपनी सूझ-बूझ से कपड़े की तरह रचना करके ऊपर के सतलोक आदि को सीमा रहित स्वप्रकाशित अजर - अमर अर्थात् अविनाशी ठहराए तथा नीचे के परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्ड तथा ब्रह्म के 21 ब्रह्मण्ड व इनमें छोटी-से छोटी रचना भी उसी परमात्मा ने अस्थाई की है।

संतमत के सभी संत कहते है कि वेदों में सत्यपुरुष और सतलोक का जिक्र है ही नहीं । वेदों में सिर्फ ब्रह्म तक का वर्णन है । उससे आगे का ज्ञान संतमत देता है ।

सही अर्थ नीचे चित्र में देखें । इसमें ब्रह्मविद्या और ब्रह्म (निरंजन) की बात हो रही है ।

॥ अथ चतुर्थं काण्डम् ॥

[१- ब्रह्मविद्या सूक्त]

[ऋषि - वेन । देवता - बृहस्पति अथवा आदित्य । छन्द - त्रिष्टुप, २, ५ भुरिक् त्रिष्टुप् ।]

५९१. ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः ॥१ ॥

ब्रह्म की उत्पत्ति पूर्वकाल में सर्वप्रथम हुई । वेन (उस तेजस्वी ब्रह्म या सूर्य) ने बीच में स्थित होकर सुप्रकाशित (विभिन्न पिण्डों) को फैलाया । उसने आकाश में वर्तमान विशिष्ट स्थानों पर स्थित पदार्थों तथा सत् एवं असत् की उत्पत्ति के स्रोत को खोला ॥१ ॥

५९२. इयं पित्र्या राष्ट्र्येत्वग्रे प्रथमाय जनुषे भुवनेष्ठाः ।
तस्मा एतं सुरुचं ह्वारमह्यं घर्मं श्रीणन्तु प्रथमाय धास्यवे ॥२ ॥

पिता (ब्रह्म) से प्राप्त, विश्व में स्थित राष्ट्री (प्रकाशमान नियामक शक्ति) सर्वप्रथम उत्पत्ति-सृजन के लिए आगे आए । उस सर्वप्रथम (सर्वोच्च सत्ता) को अर्पित करने के लिए इस सुप्रकाशित, अनिष्टनिवारक तथा प्राप्त करने योग्य यज्ञ को परिपक्व करें ॥२ ॥

५९३. प्र यो जज्ञे विद्वानस्य बन्धुर्विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति ।
ब्रह्म ब्रह्मण उज्जभार मध्यान्नीचैरुच्चैः स्वधा अभि प्र तस्थौ ॥३ ॥

जो ज्ञानी इस (दिव्य सत्ता) का बन्धु (सम्बन्धी) होता है, वह समस्त देवशक्तियों के जन्म का रहस्य कहता है । ब्रह्म से ब्रह्म (वेदज्ञान अथवा यज्ञ) की उत्पत्ति हुई है । उसके नीचे वाले, मध्यवर्ती तथा उच्चभाग से (प्राणियों को) तृप्त करने वाली शक्तियों का विस्तार हुआ ॥३ ॥

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 3

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरूषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।3।।

एतावान्—अस्य—महिमा—अतः—ज्यायान्—च—पुरूषः—पादः—अस्य—विश्वा—भूतानि—त्रि—पाद्—अस्य—अमृतम्—दिवि

अनुवाद :— (अस्य) इस अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म की तो (एतावान्) इतनी ही (महिमा) प्रभुता है। (च) तथा (पुरूषः) वह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर तो (अतः) इससे भी (ज्यायान्) बड़ा है (विश्वा) समस्त (भूतानि) क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष तथा इनके लोकों में तथा सत्यलोक तथा इन लोकों में जितने भी प्राणी हैं (अस्य) इस पूर्ण परमात्मा परम अक्षर पुरूष का (पादः) एक पैर है अर्थात् एक अंश मात्र है। (अस्य) इस परमेश्वर के (त्रि) तीन (दिवि) दिव्य लोक जैसे सत्यलोक—अलख लोक—अगम लोक (अमृतम्) अविनाशी (पाद्) दूसरा पैर है अर्थात् जो भी सर्व ब्रह्मण्डों में उत्पन्न है वह सत्यपुरूष पूर्ण परमात्मा का ही अंश या अंग है।

भावार्थ :- इस ऊपर के मंत्र 2 में वर्णित अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की तो इतनी ही महिमा है तथा वह पूर्ण पुरुष कविर्देव तो इससे भी बड़ा है अर्थात् सर्वशक्तिमान है तथा सर्व ब्रह्मण्ड उसी के अंश मात्र पर ठहरे हैं। इस मंत्र में तीन लोकों का वर्णन इसलिए है क्योंकि चौथा अनामी (अनामय) लोक अन्य रचना से पहले का है। यही तीन प्रभुओं (क्षर पुरूष-अक्षर पुरूष तथा इन दोनों से अन्य परम अक्षर पुरूष) का विवरण श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक संख्या 16-17 में है {इसी का प्रमाण आदरणीय गरीबदास साहेब जी कहते हैं कि :- गरीब, जाके अर्ध रूम पर सकल पसारा, ऐसा पूर्ण ब्रह्म हमारा।।

वास्तव में यहाँ त्रिलोकी की बात हो रही है । क्योंकि कालपुरुष ही इस त्रिलोकी सत्ता (सृष्टि) का मालिक है

त्रिलोकी में देवलोक, प्रथ्वीलोक तथा पाताल लोक आते है ।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 15

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरूषं पशुम्।।15।।

सप्त–अस्य–आसन्–परिधयः–त्रिसप्त–समिधः–कृताः–देवा–यत्–यज्ञम्–तन्वानाः– अबध्नन्–पुरूषम्–पशुम्।

अनुवाद :– (सप्त) सात संख ब्रह्मण्ड तो परब्रह्म के तथा (त्रिसप्त) इक्कीस ब्रह्मण्ड काल ब्रह्म के (समिधः) कर्मदण्ड दुःख रूपी आग से दुःखी (कृताः) करने वाले (परिधयः) गोलाकार घेरा रूप सीमा में (आसन्) विद्यमान हैं (यत्) जो (पुरूषम्) पूर्ण परमात्मा की (यज्ञम्) विधिवत् धार्मिक कर्म अर्थात् पूजा करता है (पशुम्) बलि के पशु रूपी काल के जाल में कर्म बन्धन में बंधे (देवा) भक्तात्माओं को (तन्वानाः) काल के द्वारा रचे अर्थात् फैलाये पाप कर्म बंधन जाल से (अबध्नन्) बन्धन रहित करता है अर्थात् बन्दी छुड़ाने वाला बन्दी छोड़ है।

भावार्थ :- सात संख ब्रह्मण्ड परब्रह्म के तथा इक्कीस ब्रह्मण्ड ब्रह्म के हैं जिन में गोलाकार सीमा में बंद पाप कर्मों की आग में जल रहे प्राणियों को वास्तविक पूजा विधि बता कर सही उपासना करवाता है जिस कारण से बलि दिए जाने वाले पशु की तरह जन्म-मृत्यु के काल (ब्रह्म) के खाने के लिए तप्त शिला के कष्ट से पीड़ित भक्तात्माओं को काल के कर्म बन्धन के फैलाए जाल को तोड़कर बन्धन रहित करता है अर्थात् बंधन छुड़वाने वाला बन्दी छोड़ है।

अनपढ़ रामपाल ने सप्त का अर्थ सात संख कर दिया । इनका तो गणित भी कमजोर है । रामपाल को तो ये भी नहीं पता कि एक संख में कितने शून्य होते है ।

(सात संख = 700000000000000000)

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 16

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।16।।

यज्ञेन–यज्ञम्–अ–यजन्त–देवाः–तानि–धर्माणि–प्रथमानि– आसन्–ते–ह–नाकम्– महिमानः– सचन्त– यत्र–पूर्वे–साध्याः–सन्ति देवाः।

अनुवाद :– जो (देवाः) निर्विकार देव स्वरूप भक्तात्माएं (अयज्ञम्) अधूरी गलत धार्मिक पूजा के स्थान पर (यज्ञेन) सत्य भक्ति धार्मिक कर्म के आधार पर (अयजन्त) पूजा करते हैं (तानि) वे (धर्माणि) धार्मिक शक्ति सम्पन्न (प्रथमानि) मुख्य अर्थात् उत्तम (आसन्) हैं (ते ह) वे ही वास्तव में (महिमानः) महान भक्ति शक्ति युक्त होकर (साध्याः) सफल भक्त जन (नाकम्) पूर्ण सुखदायक परमेश्वर को (सचन्त) भक्ति निमित कारण अर्थात् सत्भक्ति की कमाई से प्राप्त होते हैं, वे वहाँ चले जाते हैं। (यत्र) जहाँ पर (पूर्वे) पहले वाली सृष्टी के (देवाः) पापरहित देव स्वरूप भक्त आत्माएं (सन्ति) रहती हैं।

यहाँ पर रामपाल ने यज्ञ का अयज्ञ कर दिया । श्लोकों को तोड़-मरोड़ कर बता रहा है ।

पवित्र यजुर्वेद अध्याय 29 मंत्र 25 -

समिद्धोऽद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान्यजसि जातवेदः।
आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान्त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः।।25।।

समिद्धः–अद्य–मनुषः–दुरोणे–देवः–देवान्–यज्–असि– जात–वेदः–आ– च–वह–मित्रमहः–चिकित्वान्–त्वम्–दूतः– कविर्–असि–प्रचेताः।

अनुवाद – (अद्य) आज अर्थात् वर्तमान में (दुरोणे) शरीर रूप महल में दुराचार पूर्वक (मनुषः) झूठी पूजा में लीन मननशील व्यक्तियों को (समिद्धः) लगाई हुई आग अर्थात् शास्त्र विधि रहित वर्तमान पूजा जो हानिकारक होती है, अग्नि जला कर भस्म कर देती है ऐसे साधक का जीवन शास्त्रविरूद्ध साधना नष्ट कर देती है। उसके स्थान पर (देवान्) देवताओं के (देवः) देवता (जातवेदः) पूर्ण परमात्मा सतपुरुष की वास्तविक (यज्) पूजा (असि) है। (आ) दयालु , (मित्रमहः) जीव का वास्तविक साथी पूर्ण परमात्मा के (चिकित्वान्) स्वस्थ ज्ञान अर्थात् यथार्थ भक्ति को (दूतः) संदेशवाहक रूप में (वह) लेकर आने वाला (च) तथा (प्रचेताः) बोध कराने वाला (त्वम्) आप (कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर) कबीर (असि) है।

भावार्थ :- जिस समय भक्त समाज को शास्त्रविधी त्यागकर मनमाना आचरण (पूजा) कराया जा रहा होता है। उस समय कविर्देव (कबीर परमेश्वर) तत्व ज्ञान को प्रकट करता है।

यजुर्वेद के इस श्लोक में यज्ञ की बात हो रही है । सही अर्थ नीचे चित्र में देखें ।

यजुर्वेद को 'यज्ञ' से सम्बन्धित माना जाता है । 'पाणिनि' ने 'यज्ञ' की व्युत्पत्ति 'यज्' धातु से की है । ब्राह्मण ग्रन्थों में 'यजुष्' को यज् धातु से सम्बद्ध कहा गया है । इस प्रकार 'यजुः' 'यज्' तथा 'यज्ञ' तीनों एक दूसरे के पर्याय हो जाते हैं । जैसे:—

यच्छिष्टं तु यजुर्वेदि तेन यज्ञमयुञ्जत ।
यजनात् स यजुर्वेद इति शास्त्रविनिश्चयः ॥

(ब्रह्मा० पु० २.३४.२२)

अर्थात् यजुर्वेद में जो कुछ भी प्रतिपादित है, उसी से यज्ञ का यजन किया गया । यज्ञों के यजन के कारण ही उसे यजुर्वेद नाम दिया गया है,

१६००. समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान् यजसि जातवेदः । आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान्त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः ॥२५ ॥

प्राणिमात्र के हितैषी हे मित्र अग्निदेव ! आप प्रज्वलित और महान् गुण सम्पन्न होकर कुशल याजकों द्वारा निर्धारित यज्ञ मण्डप में देवों को आहूत करें तथा यजन करें । आप श्रेष्ठ चेतना युक्त, विद्वान् तथा देवों के दूत हैं ॥

१६०१. तनूनपात्पथ ऽ ऋतस्य यानान्मध्वा समञ्जन्त्स्वदया सुजिह्व । मन्मानि धीभिरुत यज्ञमृन्धन् देवत्रा च कृणुह्यध्वरं नः ॥२६ ॥

हे शरीर के रक्षक और श्रेष्ठ वाणी वाले अग्ने ! आप सत्यरूप यज्ञ के मार्गों को वाङ्माधुर्य से सींचते हुए, हवियों को ग्रहण करें । बुद्धियों द्वारा मननपूर्वक यज्ञ को समृद्ध करें । हमारे यज्ञ को देवों तक पहुँचने योग्य बनाएँ ।

१६०२. नराशꣳसस्य महिमानमेषामुप स्तोषाम यजतस्य यज्ञैः । ये सुक्रतवः शुचयो धियन्धाः स्वदन्ति देवाऽ उभयानि हव्या ॥२७ ॥

हम यज्ञों से पूजित, मनुष्यों द्वारा प्रशंसित, अग्निदेव की महिमा का गान करते हैं । शुभ कर्मयुक्त पवित्र बुद्धि सम्पन्न देवता, दोनों प्रकार की हवियों (स्थूल एवं सूक्ष्म) से यजन करते हैं ॥२७ ॥

108 *यजुर्वेद अध्याय 19 मन्त्र 25*

सन्धिछेदः– अर्द्ध ऋचैः उक्थानाम् रूपम् पदैः आप्नोति निविदः।
प्रणवैः शस्त्राणाम् रूपम् पयसा सोमः आप्यते।(25)

अनुवादः– जो सन्त (अर्द्ध ऋचैः) वेदों के अर्द्ध वाक्यों अर्थात् सांकेतिक शब्दों को पूर्ण करके (निविदः) आपूर्त्ति करता है (पदैः) श्लोक के चौथे भागों को अर्थात् आंशिक वाक्यों को (उक्थानम्) स्तोत्रों के (रूपम्) रूप में (आप्नोति) प्राप्त करता है अर्थात् आंशिक विवरण को पूर्ण रूप से समझता और समझाता है (शस्त्राणाम्) जैसे शस्त्रों को चलाना जानने वाला उन्हें (रूपम्) पूर्ण रूप से प्रयोग करता है ऐसे पूर्ण सन्त (प्रणवैः) औंकारों अर्थात् ओम्–तत्–सत् मन्त्रों को पूर्ण रूप से समझ व समझा कर (पयसा) दूध–पानी छानता है अर्थात् पानी रहित दूध जैसा तत्व ज्ञान प्रदान करता है जिससे (सोमः) अमर पुरूष अर्थात् अविनाशी परमात्मा को (आप्यते) प्राप्त करता है। वह पूर्ण सन्त वेद को जानने वाला कहा जाता है।

भावार्थः- तत्वदर्शी सन्त वह होता है जो वेदों के सांकेतिक शब्दों को पूर्ण विस्तार से वर्णन करता है जिससे पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति होती है वह वेद के जानने वाला कहा जाता है।

यजुर्वेद अध्याय 19 मन्त्र 26

सन्धिछेद :– अश्विभ्याम् प्रातः सवनम् इन्द्रेण ऐन्द्रम् माध्यन्दिनम्
वैश्वदैवम् सरस्वत्या तृतीयम् आप्तम् सवनम् (26)

अनुवाद :– वह पूर्ण सन्त तीन समय की साधना बताता है। (अश्विभ्याम्) सूर्य के उदय–अस्त से बने एक दिन के आधार से (इन्द्रेण) प्रथम श्रेष्ठता से सर्व देवों के मालिक पूर्ण परमात्मा की (प्रातः सवनम्) पूजा तो प्रातः काल करने को कहता है जो (ऐन्द्रम्) पूर्ण परमात्मा के लिए होती है। दूसरी (माध्यन्दिनम्) दिन के मध्य में करने को कहता है जो (वैश्वदैवम्) सर्व देवताओं के सत्कार के सम्बधित (सरस्वत्या) अमृतवाणी द्वारा साधना करने को कहता है तथा (तृतीयम्) तीसरी (सवनम्) पूजा शाम को (आप्तम्) प्राप्त करता है अर्थात् जो तीनों समय की साधना भिन्न–२ करने को कहता है वह जगत् का उपकारक सन्त है।

भावार्थः- जिस पूर्ण सन्त के विषय में मन्त्र 25 में कहा है वह दिन में 3 तीन बार (प्रातः दिन के मध्य-तथा शाम को) साधना करने को कहता है। सुबह तो पूर्ण परमात्मा की पूजा मध्याह्न को सर्व देवताओं को सत्कार के लिए तथा शाम को संध्या आरती आदि को अमृत वाणी के द्वारा करने को कहता है वह सर्व संसार का उपकार करने वाला होता है।

रामपाल ने पूरा ही अर्थ का अनर्थ किया हुआ है । और भोले भाले भक्तों को काल की भक्ति करवा रहा है । अब सही अर्थ नीचे चित्र में देखे ।

१०५०.आश्रावयेति स्तोत्रिया: प्रत्याश्रावो अनुरूप:। यजेति धाय्यारूपं प्रगाथा ये यजामहा: ॥२४ ॥

स्तोत्र की पहली तीन ऋचाएँ "आश्रावाय" शब्द को लक्षित करती हैं तथा अन्तिम तीन ऋचाएँ "प्रत्याश्राव" को। धाय्या नामक ऋचाएँ "यज" पद से प्रारम्भ होती हैं। प्रगाथा रूप ऋचाओं का प्रारम्भ "ये यजामहे" पद से होता है ॥२४ ॥

१०५१.अर्धऋचैरुक्थानाᳬं रूपं पदैराप्नोति निविद:। प्रणवै: शस्त्राणाᳬं रूपं पयसा सोम ऽ आप्यते ॥२५ ॥

अर्द्ध ऋचाओं के उच्चारण से उन मन्त्रों का बोध होता है, जो उक्थ नाम से जाने जाते हैं। पदों से 'निविद' नामक ऋचाओं के उच्चारण का बोध किया जाता है। प्रणवों से शस्त्रों (स्तोत्रों) के रूप का अनुभव करते हैं तथा दुग्ध से सोम के रूप का आभास होता है ॥२५ ॥

१०५२.अश्विभ्यां प्रात:सवनमिन्द्रेणैन्द्रं माध्यंदिनम्। वैश्वदेवᳬं सरस्वत्या तृतीयमाप्तᳬं सवनम् ॥२६ ॥

"प्रात: सवन" की प्राप्ति दोनों अश्विनीकुमारों द्वारा होती है, "माध्यन्दिन सवन" की प्राप्ति इन्द्र देवता सम्बन्धी इन्द्रदेव के मन्त्रों से होती है और "तृतीय सवन" की प्राप्ति विश्वेदेवों से सम्बन्धित देवी सरस्वती के माध्यम से होती है ॥२६ ॥

यह " सैतान बण्या भगवान " पुस्तक तथाकथित रामपाल के शिष्य कृष्ण दासजी ने लिखी है और इस पुस्तक में रामपाल और उसके भाई महेंद्र के हर कच्चे चिट्ठे की पोल है ।

वो कहावत मशहूर है " जिनके घर शीशे की होते है वे दूसरों के घर पर पत्थर नहीं फेखा करते " । बस यही गलती रामपाल कर रहा है । होना जाना कुछ नहीं है । इस पुस्तक को विस्तार से पढ़ने के लिए यहाँ से डाउनलोड कर सकते है ।

http://vedickranti.in/books-details.php?action=view&book_id=148

सैतान

बण्या

भगवान

अब प्रस्तुत है इस पुस्तक के कुछ अंश

परन्तु इस पुस्तक का निकालना (भक्ति और भगवान) अपने "मुह मियां मिठु" वाली कहावत है, रामपाल का जीवन चरित्र जो इस पुस्तक के भुमिका वाले पृष्ठ पर दिया हैं सफेद झुठ लिखने वाला कोई दूसरा नहीं उसका अपना छोटा सगा भाई भक्त महेन्द्र दास (धनाना) ही है। अपने पुल आप ही बांध रहे है। सतसंगी भक्त जन और उनके साथ रहने वाले साथी रिस्तेदार अभी जिन्दा है जो ये जानते है कि स्वयं महेन्द्र और रामपाल दोनों

इक्टठे बैठ कर सराब पिते थे स्वयं मेरे सामने भी महेन्द्र ने शब्द उच्चारण किए कि हमें तो ज्ञान नहीं था पहलें अज्ञान में समय बर्बाद कर दिया हम दोनों भाई इक्ट्ठे बैठकर पीते थे एक भक्त ने बताया कि जब मैं रामपाल को संत रामसरूप (विवेकानन्द) जी के पास लेकर गया तो उस समय शराब पी रखी थी रामसरूप जी से समझाया इनको ज्ञान दिया तब के बाद धीरे-धीरे इस लाइन पर लगे ये बाते जीवन चरित्र में नही दी क्योंकि ये बाते लिखे तो पढ़े लिखे समझदार व्यक्ति विचार करें ? तो ये झंडी बहुत जल्दी फट जाए कि ये सभी स्वयं ढोगी इक्कठे हो रहे हैं। यदि झूठ के पूल बांध कर समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त कर भी ली तो क्या हुआ, कोई बड़ी बात नहीं, परमेश्वर के दरबार मे लेखा देना है जिसके पास परमेश्वर का नाम है भिक्षा मांग कर अपना पेट भरता है तो वह ऐसे झुठी प्रतिष्ठा वाले से कई गुणा ज्यादा अच्छा है सतगुरू महाराज वाणी में कहते है,

नाम सहत में वतन भला है, जो दर दर मांगे भीखा।

परन्तु ये रामपाल पूरा कृतघ्नी जीव है जो ऐसे महापुरुष की भी निदां करता है जो इसको लाइन पर लगाने वाला है ये स्वयं पहले उस संत रामसरूप जी के फोटों के आगे ज्योति जगाकर हाथ जोड़ कर उनके फोटों की भी पूजा करता था मैं आप लोगों को दिखाऊंगा मेरे पास रखा है और नित्य नियम के गुटके में भी छपा रखा है कि श्री रामसरूप जी ने भेद बताया, स्वामी रामदेवानन्द जी ने सफल बनाया रामपाल ने जान लिया, पारस से कचंन बना लोह।

ऐसे उस महान संत रामसरूप (विवेकानन्द) को भी ठुकरा दिया उसको भी कहते है काल का दूत है सो ऐसे महापुरूषो की निद्या करने वाले स्वयं भी नर्क जाऐगें ओर अपने अनुनाईयों को भी ले जाऐगे।

रामपाल कहता था कि बस संत तो इस पृथ्वी पर मैं ही हुं परमेश्वर ने मुझे भेजा है स्वयं मैंने ही स्वामी रामदेवानन्द को सार नाम का ज्ञान कराया उन्हें ज्ञान नहीं था। ये बाते तो मेरे सामने भी कई बार कहीं हैं इनकी ऐसी कपट भरी चाल बाजी की बाते सुनकर वहां के भगत इनसे चिड़ने लगे और अब जीवन चरित्र में लिखते है कि स्वामी जी ने सार नाम दिया अब वर्तमान के भक्त जन विचार करें कि ऐसी कपट की छल युक्त बाते करने वाला संत हो सकता है हाँ आने वाले 50 या 100 साल में ये सभी बाते शायद सत्य हो जाए क्योंकि वह लेख पढ़ेगें वह रामपाल की असलियत को नहीं जानते होगें लेकिन वर्तमान में मेरे जैसे बहुत भक्त है जो इनकी असलियत जानते हैं। इसलिए भविष्य के लिए भी अवश्य लेख लिख कर जाऐगें ऐसे दुष्टों से बचकर रहना। यह तो इतना बड़ा झुठा चाल बाज है मेरे जैसे सैंकड़ों बच्चो का शोषण करता है सतलोक ले जाने का लालच देकर माँ-बाप, भाई-भाई में झगड़े करवा कर "फूट डालो राज करो", वाली नीति अपनाता है। स्वयं मेरे परिवार में इस निति का प्रयोग किया दूसरों का क्या वर्णन करूं जो प्रत्यक्ष प्रमाण है। विस्तार से इसकी एक-2 घटनाओं का निश्चित समय सहित जो मेरे साथ घटना घटी मेरे साथ जैसे इनके विचार विमर्श हुए उनका सत्य-सत्य वर्णन अपने जीवन चरित्र में कि हैं जो उचित समय में प्रकाशित किया जाऐगा जो कि कड़वी अटल सच्चाई होगी और सच्चाई कभी दबाने से दबती नहीं एक ना एक दिन ऊपर अवश्य आती है। यह तो ऐसा झुठा बुगला है जो ऊपर से साफ अन्दर कपट मेरे परम पुज्य गुरूदेव अवधूत स्वामी भक्तराम जी महाराज ने बड़ी मेहनत करके आचार्य जगतगुरू जी महाराज का जीवन चरित्र बहुत पहले प्रकाशित किया था उस जीवन चरित्र से स्वामी जी का फोटो निकालकर अपना फोटो

लगाकर चोरी छिपे छपवाकर संगत में बाटने लगा उस पर लिखवा दिया भक्त रामपाल दास इन्जिनियर ने संग्रह करके छपवाया। स्वामी जी को जब मिला तो वह इनसे मिलने जीन्द कुटिया में गऐ। मैं भी उस समय वहीं था इस घटना को मैंने अपनी आंखो से देखा स्वामी जी जब अन्दर आए तो हमने खड़े-खड़े दूर से सत साहिब किया क्योंकि हमारे अन्दर संस्कार ही ऐसे डाले थे। हमारे पूर्व गुरू जी को स्वामी जी ने जाकर कहा कि आपने कहां से संग्रह करके जीवन चरित्र छपाया तो रामपाल दास हाथ जोड़कर खड़े हो गए कि मुझसे गलती हो गई, क्षमा किजिए आप बड़े दयालु है, मुझे ज्ञान नहीं था सो हमारे स्वामी अवधूत भगत राम जी बड़े ही दयालु है, ऐसे बड़े अपराध कानूनी जुर्म को भी माफ कर दिया और शील स्वभाव से कहा कि कितने छपाए हैं उत्तर मे राम पाल ने कहा 2000 छपवाए हैं 700 बांट दिए 1300 बाकी हैं। स्वामी जी ने कहा इन सबके फोटो निकाल कर आचार्य जी का फोटो लगाकर गरीबदासी आचार्य पीठ कोई स्वामी दयाल दास छुड़ानी धाम से भिजवा देना और लेने हैं तो मुझ से लेना मुझे बताते तैं आपको देता ऐसा कार्य आपको शौभनीय नहीं है। इतना कहकर स्वामी जी आ गए उस समय हमारी बुद्धि उलट थी क्योंकि वह इतना शोसन करते हैं किसी को भी अधिकार नहीं कोई प्रश्न करने का प्रश्न किया तो नाम रहीत हो जाता है इतना डरा देते हैं। और उन 1300 जीवन चरित्र को छुड़ानी धाम भिजवाया, उन महापुरूषों को भी कहते है ये काल के दूत है। इनको नाम उपदेश देने का अधिकार नहीं उस जीवन चरित्र की भी कॉपी मेरे पास उपलब्ध है। ऐसे कपट भरा इसका चरित्र है यह अपने जीवन चरित्र में नहीं लिखवाया झुठी चापलुसी की बातें बनाकर जनता को इक्कठा कर लिया सारे संसार को इक्कठा कर ले तो क्या कल्याण हो जाऐगा महापुरुषों की निदां करके तो आखिर नर्क ही मिलेगा। जितना तत्वदर्शी हैं मैं अच्छी तरह से जानता हुँ इसलिए तो छोड़कर आया हुँ प्रिय भक्तों बहुत सारी घटनाएं मेरे जीवन में घटी हैं।

ये तो अब माया का खेल है जिसमें वो अपने आपको भी भूल गए इसी पुस्तक में आगे पृष्ठ न० 32 पर कहा है कि मुझ दास (राम पाल दास) को परमेश्वर कबीर साहिब जी फागुन शुक्ल पक्ष की एक मार्च 1997 को दिन के दस बजे मिले, तथा संगत को दान करने का सही समय का सकेंत देकर अर्तध्यान हो गए तथा इसको अगले आदेश तक रहस्य युक्त रखने का आदेश दिया (2) पृष्ठ 33 पर कहा है वर्तमान से 1947 से भारत स्वतन्त्र होने का पश्चात विचली पीठी प्रारम्भ हुई है।

सन् 1951 में मुझ दास को भेजा है।

3. पृष्ठ न० 60 पर मुझे (संत रामपाल दास) को नाम देने की आज्ञा मेरे पुज्य गुरूदेव स्वामी रामदेवानन्द जी ने दी कबीर साहिब हमारे परमेश्वर हैं वे समय समय पर मुझ दास को संभालते रहते हैं।

इन सभी ढोंग बनावटी बातों का एक ही उत्तर मैं आपको समझांऊगा

कबीर साहिब को तो एक नौकर बना लिया जो टाईम-2 पर इसकी संभाल कर सै, दिव्य दृष्टि दे दी जो सब ब्रहाण्ड़ो को देखकर चित्र बनाए सैं, AC गाड़ी में बैठे-बैठे दिव्य दृष्टि सारे ब्रम्हाड़ों नै देख ले सै, आसन लगाकर बैंठना थोड़ी बोहत देर मालिक का ध्यान करना यो तो ढोंगीयां का काम हो सै। सन्तों का थोड़ी होता है संत तो AC गाड़ी में बैठकर मोबाइल फोन सुनते-सुनते च्यारो तरफ तै राईफल, बदूंक, पिस्तौलों, वालो का पहरा लगाकर दिव्य दृष्टि ने खोल ले सैं जब सब देखकर चित्र बनाएं सैं, सन् 1951 में कबीर साहिब ने भेजा था और परमेश्वर कबीर साहिब मार्च 1997 से मिल गए थे उसके बाद संभाल कर सैं हे मेरे प्यारे भक्तों परमेश्वर की प्यारी जीव आत्माओं इस प्रकार की ढोंग की बातें बता कर यह भोले भाले जीवों को अपने जाल में फंसाते है।

मेरे आंखों के सामने की घटना सन् 2000 में घटी जो मैं उस समय इनके (संत रामपाल दास जी) के साथ रहता था।

भक्ति का प्यासा था सतगुरू गरीब दास जी महाराज की फूल रूपी वाणी का मैं एक भंवरा था। महाराज की वाणी प्रचार में दिन रात इनके साथ रहता था, न धूप न छाया न दिन रात कुछ भी नजर नहीं आता था बस एक ही लक्ष्य होता था महाराज जी सतगुरू जी की वाणी का प्रचार अखण्ड पाठ सत्संग करते हैं कराते हें इसमें हर प्रकार से सेवा करते हुए इस शरीर को पूरा कर देना है। दूसरा कभी लक्ष्य हुआ ही नहीं, ये तो मेरे बन्दी छोड़ कबीर साहिब जानते है आप नहीं जान सकते। परन्तु मेरे जीवन में सितम्बर 2000 में एक भयंकर तुफान आया जिसने मेरे कुछ अज्ञान के पढ़दे दूर किए रात्रि 12:30 बजे जब चिड़ी गाँव से सत्संग करके (जगतगुरू

तत्वदर्शी) संत रामपाल दास जी, ड्राईवर जयबीर, कपूरा करौंधा, सोमवीर करौंधा, मैं स्वयं भूतपूर्व नाम सजंय भक्त जी, और सेवक सूनील एक टाटा सूमों गाड़ी में बैठ कर चिड़ी से लाखन माजरा रोड़ पर चले (दिव्य दृष्टी का प्रमाण), (1997 में कबीर साहिब ने दर्शन दिए प्रमाण), (समय-समय पद संभाल करते है-प्रमाण) तो चिड़ी गाँव से एक मारूती कार पिछे लगी और उसने दो किलोमिटर गाँव से दूर जाकर (संत रामपाल की) गाड़ी के आगे अड़ा दी तीन बदमाश टाईप के नौ जवान लड़के उतर कर आए और आते ही गाडी की चाबी निकाल ली हम सबको निचे उतार लिया और सन 1951 में परमेश्वर के भेजे हुए जगतगूरू को भी गले से पकड़कर निचे उतार लिया और गन्दी-2 गालीयां देकर (जो मैं यहां नहीं लिख सकता) लगभग 200 फूट दूर ले गए पांच मिन्ट तक आपस में बातचीत चलती रही क्या बाते हुए मुझे मालुम नहीं, उसके बाद गाड़ी के पास ले आए हम सबके कान पकड़वा दिऐ और कहा यदि ऊपर उठोगें तो जान से मार देगें और हमारी पिटाई करने लगे। और जगतगुरू जी के कान भी पकड़वा दिऐ और लात घूसे मार कर बोल रहे थे कि बोल मेरी मौसी के घर फिर जाएगा। जगतगुरू जी मना कर रहे थे कभी नहीं जाऊंगा आज-आज बक्स दो। फिर प्रचार करेगा, तत्वदर्शी जी बोल रहे थे कभी नहीं करूंगा और नाक से सात लकीर निकलवाई। और कहने लगे आज तो छोड़ देता हूँ अगर आगे कहीं हरियाणे में प्रचार करते मिल गया तो घसीट-2 कर मारूंगा जा भाग जा हराम जादें। और इतना कह कर पिटाई करते-करते चाबी वापिस दे दी। और हमारे को कहने लगे इस लुच्चे आदमी की गेल्यां मिल गए तो तुम्हारा भी नम्बर लगेगा। भक्तों को बताई तो सुबह महेन्द्र, विजेन्द्र, राजेन्द्र, जयबीर आदि सभी को कहने से पुलिस रिर्पोट करवाई झूठा इलजाम महन्त दयासागर के भाई पर लगावाया। महेन्द्र ने मुझे आगे करके क्योंकि किसी को पता नहीं था कि किसने पिटाई की? और क्यों कि? प्रचार के लिए तो महन्त घुड़ानी वाले ही रोक सकते है, ऐसा शक

किया और केस भी झूठा कि बदमाशों ने 2000 रू छीन लिए और हमारे को जान से मारने की धमकी दे रहे थे। परन्तु गुरू भक्ति के अन्दर आकर ये सब किया परन्तु सांप के जहर का तब पता चलता है जब वह ढंग मारता है। दूध पिलाते वक्त पता नहीं चलता? तो प्यारे भक्तों विचार करों उस समय दिव्य दृष्टि कहां थी परमेश्वर कबीर साहिब जी क्या कर रहे थे उस समय संभाल क्यों नहीं कि? तीन प्रश्न और सामने खड़े हो गए सो इनका जवाब भी मिलेगा पहले दिव्य दृष्टि पर गोचर होईए, जो सब ब्रह्मण्ड़ों के चित्र दिव्य दृष्टि से देखकर बनाता है जिसके परमेश्वर कबीर साहिब ने जीवन उद्धार के लिए भेजा है जिसकी समय समय पर संभाल करते हैं। क्या उसको ये पता नहीं था कि बदमाश तेरी ऐसी हालत करेगें दिव्य दृष्टि ब्रह्मण्डों को देख सकती है पर चिड़ी वाला काला चैरमैन दिखाई नहीं दिया? मेरे विचार से दिव्य दृष्टि और कबीर साहिब का मिलने वाला और कबीर साहिब के भेजे हुए इन सबका प्रमाण इस एक ही उद्धारण से स्पष्ट हो जाता है।

अब रही एक साधारण व्यक्ति की बात तो परमात्मा की भक्ति में कष्ट आते है। भिरड़, तंदीऐ काट ही हो जाते है उनका स्वभाव है परन्तु महापुरूषों को आना स्वभाव नहीं छोड़ना चाहिए, भक्ति मार्ग में जो कष्ट दुःख आते हैं वह तो भक्ति को दृढ़ करते है। महापुरूषों का तप बनता है। एक साधारण व्यक्ति के साथ यह घटना कोई बड़ी बात नहीं परन्तु अवतारी पुरुष परमेश्वर के भेजे हुए, और दिव्य दृष्टि का प्रमाण, समय-2 पर कबीर

साहिब जी संभाल करते हैं यह सभी बाते स्पष्ट हो गई उसी दिन, परन्तु जब 2000 में यह घटना घटी तब ना तो जगतगुरू बने थे, ना तत्वदर्शी बने थे, और नाही किसी पंथ ग्रथ महापुरुषों की निदां चुगली होती थी और नाही अपने आपको सबसे श्रेष्ठ मानते थे। अधीनता थी केवल रामपाल दास थे मेरे प्यारे प्रभू प्रेमियों मैंने उनके अन्दर जो परमात्मा के प्रति लगन और जो मेरे साथ उनका बहुत गहरा प्यार था उसको बहुत नजदीक से देखा और महसूस भी किया है। यह सब होते हुए उनके साथ यह घटना क्यों घटी, चलों मैं ये भी मानता हुँ यह ऐसी साधारण सी घटना मार पिटाई तो किसी के साथ भी घट सकती है

यह कोई बड़ी बात नहीं क्योंकि हम तो जगतगुरू नहीं, तत्वदर्शी नहीं कबीर के भेजे हुए दुत नहीं, अवतारी पुरुष नहीं, दिव्यं दृष्टि प्राप्त नहीं अगर घट भी गई तो कोई बड़ी बात नहीं परन्तु दिव्य दृष्टि जगतगुरू तत्वदर्शी के लिए बहुत बड़ी बात है तभी तो राईफल पिस्तौलों के पहरे में रहता है।

मैंने एक चिठठी लिखकर श्री रामपाल दास जी को दी कि मेरा मन मेरे बस में नहीं है। मैं घर मे रह कर भक्ति करना चाहता हुँ तो उन्होंने मुझे एकान्त में बुलाकर कहा कि बेटा ये बात तो नहीं है। क्योंकि मैंने 5 साल हो गए आपको देखते-2 ये कारण नहीं है कोई और कारण हैं किस वजह से जा रहे हो फिर मुझे अन्दर कमरे में बुलाया जहां पर वही औरत अन्दर बैठकर संत रामपाल जी के पैर दबा रही थी। संत राम पाल के दोनों पैर उसने अपनी सातलो (पट) के ऊपर रखे थे तो मैने अन्दर जाकर डडौंत प्रणाम कर बैठ गया केवल हम तीन ही कमरे में थे तो मुझे साखी सुनाई ऊंच नीच में हम रहां, हाड़ चाम की देह सरजुन अरजुन समझीयों, रखियों शब्द स्नेह।

ये साखी सुनकर मेरी आखों में पानी आ गया तो महाराज जी कहने लगे अब बता क्या बात हैं तो मैने हिम्मत सी करके कहा कि यह औरत अकेली अन्दर आती है बाहर सभी तकरार करते है और जब आप पूना गए उस दिन से पहला पूरा दिन व रात यह अन्दर आपके पास कमरे में ही रही यह सब अच्छा नहीं है हम गलत नहीं सोचते परन्तु यह सब अच्छा नहीं मैंने तो एक शिक्षा दी थी परन्तु उल्टी मेरे पर ही पड़ गई वह औरत झट से एक दम बोलती है मैं तो ऐसे ही आऊंगी ऐसे ही रहूंगी जिसकी मां ने दूध प्या रखा है मुझे रोक कर देख लेना गोली मार दूंगी तो इस बात को सुनकर हमारे पूर्व गुरूदेव संत रामपाल दास जी महाराज जिसको मैंने अपना तन मन धन सभी भी अर्पण कर दिया था मेरी भक्ति वैराग की तरफ न देखते हुए उस औरत के जाल में फंस गए मुझे कहते हैं ये तो ऐसे ही आएगी ऐसे ही रहेगी किसी ने रहना है तो रहो जाना है तो जाओ मैं डंण्डौत प्रणाम करके उसी वक्त किसी को कुछ भी न कहते हुए कमरे से बाहर आ गया और एक

तरफ जाकर बहुत रोया बन्दी छोड़ ये सब क्यां हो रहा है। प्रिय भक्तों अगर मेरी जगह आप होते तो क्या करते थोड़ा अपने दिल पर हाथ रखकर देखों विचार करो इसलिए मैंने वंहा से निकलना ही उचित समझा।

सारी जनता के सामने की थी, झाकी दरवाजे बंद करके सारी-सारी रात सुबह ९ बजें तक लिला नहीं हुआ करती किसी और को बहकाना, उत्तर में महेन्द्र जी कहते हैं अभी आपने देखा ही क्या है दस दस भी इनके साथ रहेंगी। मैं उसका नाम भी जानता हुं परन्तु मैं किसी का नाम नहीं लिखुंगा क्योंकि मैं बुरा तो हुँ पर इन जितना नही? एक बार पूर्णिमा को संत्सग था विरेन्द्र सुहाग जो रविन्द्र ठाका पुना वाले का जीजा जी वह संत्सग में पूर्णिमा को करौंथा आश्रम में आया था तो अचानक फोन करने वो कमरे में चला गया तो उसने भी उसको रसोई में देखा तो बाहर आकर मुझे कहां संजय भक्त जी यह क्या हो रहा है " बंब पाटेगा कदे" आप इसे रोक नहीं सकते मैंने कहा गुरू जी की आज्ञा है ये तो इनकी लिलाएं है। शायद रविन्द्र सुहाग गुरू भक्ति के अन्दर आकर इस बात को भूल गया होगा पर मुझे अच्छी तरह याद है। इसी पुस्तक भक्ति और भगवान के पृष्ठ न० 10 पर लिखा गया है कि मेरी चाल थी की मैं संगत को अपना बनाकर करौंथा आश्रम का महन्त बंनू। तत्वदर्शी की कितनी छोटी बुद्धि है क्या इलजाम लगा रहे हैं अपने अवगुणों को छुपाने के लिए? यदि मुझे आश्रम प्राप्त करना होता तो आज चार साल के बाद यह पुस्तक निकालने की आवश्यकता नहीं थी उसी दिन भांड़ा फोड़ देता तो यह नौबत ही नहीं आती मैं गाँव के दस बीस आदमीयों को इक्कठे करके आपको रंगे हाथों पकड़वाता तो पता चलता ये मेरी सराफत थी मजबुरी थी यदि मैं ऐसा करूंगा तो जनता का भक्ति से विश्वास ही उठ जाऐगा जैसे मेरा उठ गया था इसलिए किसी का भक्ति से विश्वास जा उठे अपने आप को बुरा कहते हुए किसी को पता न चले चूप चाप निकल आया।

पृष्ठ न० 8 वा इलजाम लगाते है झूठ भी बोलों तै संवारे कैं तो बोलों बोलना भी नहीं आता। वह संजय सापंला में एक भक्त के घर पर रूका उन्होंने बहुत सेवा की कुछ दिन के बाद भक्त की पत्नी के पेट में पानी की रसौली फूट गई मेरी सभी भक्तों से प्रार्थना है (भक्ति और भगवान) पुस्तक को दौबारा गोर से फिर पढना, कहते है फिर कुछ महिनों बाद उसके दोनों लड़कों की भंयकर दुर्घटना हो गई छोटे बच्चे के संब दांत निकल गए इलाज कराया परन्तु लड़के की पीड़ा बढ़ती ही जा रही थी लड़का उस समय 12 वर्ष की आयु का था लड़के ने कहा मुझे करौंथा आश्रम में गुरू जी के पास ले चलों, उसी दिन उस बचे का दर्द समाप्त हो गया दांत जो हिल रहे जाम हो गए।

विचार करो पहले कहते हैं सब दांत बाहर निकल गए फिर तत्वदर्शी बुध्दि कहती है जो हिल रहे थे वह जाम हो गए लगता है पी.जी.आई खोल रखी है ऐसी झुठी मन घड़त कहानीयाँ तैयार की हैं कहीं कोई मेरे पास आ जाए किसी को सच्चाई का पता न चल जाए इसलिए ऐसी डरावनी बातें लिखी है

ये संतो के लक्षण नहीं अपने नाम के आगे इन्जिनियर रामपाल लिखें जगतगुरू, तत्वदर्शी, संत न लिखें क्योंकि संतों के लक्ष्ण महाराज गरीबदास जी ने वाणी में लिखें है।

सोई साध अगाध है आपा न सरा है, पर निन्दा न संचरै चुगली नहीं चाहै, जिस वाणी का सहारा लेकर चलते हो उसको अच्छी तरह पढ़ो उस वाणी से प्रेम करो और सतों की सेवा करो महाराज गरीबदास जी भी सतों की सेवा करते थे। महाराज का जीवन चरित्र पढ़ कर देखो जो हमारे गुरू जी ने प्रकाशित किया है जिसको आपने चोरी छिपे छपवाया था। पढ़ा नहीं ? और आप संतों की तलासी लेते हो संतों की निद्या करते हो अपने आपको ही जगतगुरू मानते हो दूसरों को नीच मानते हो जो स्वयं नीच, चुगलखोर है उसको सब से ही नजर आते है आप अपने प्रचवनों में कहते थे चोर को सब चोर नज़र आते है। तो आप को सभी असंत नजर आते है तो जरा अपने आप में भी थोड़ा झांक कर देख लों, दूसरे पर किचड़ डालने से पहले अपने आप पर डाल कर देख लेना चाहिए।

और (भक्ति और भगवान) पुस्तक का लेखक लिखता है मुझे छोड़कर दूसरे की सेवा की उसमे श्रद्धा आस्था रखी तो नाम से रहित हो जाओगे अपने घर के संविधान बनवा कर जनता को नास्तिक्ता की तरफ ले जा रहे हैं। चांडांल की पत्नी की तरह आए अतिथि की सेवा से नकारा करवाते हैं। इसलिए जो हाल चांडाल की पत्नी का हुआ वोही इसके सारे सेवको का होगा सबको कुते सुवर बना कर छोड़ेगा। इसलिए किसी से बचा जाए तो बच लो, मनुष्य जन्म बार-बार नहीं मिलता, संतो से प्रेम करलो सेवा कर लो, संतो की सेवा का बहुत बड़ा फल है और दुष्टों की सेवा बहुत बड़ा पाप है। जगतगुरू तत्वदर्शी जी इस पुस्तक को ऐकान्त में बैठकर एक बार जरूर पढ़ना विचार करना कि सजंय (उर्फ संत कृष्णदास जी गलत है या आप स्वयं गलत हैं। विचार करके कोई भी कदम उठाना जल्द बाजी मत करना, जल्द बाजी सैतानगी का काम होता है।

जिस प्रकार आप सभी की धज्जीया उड़ा रहें हैं शायद आगे आने वाले समय में भी आप के द्वारा लिखे लेखों में से ही आपकी धज्जीयां उड़ाई जाऐं इसलिए जो आपके नाम से लेख लिखते है पुस्तके लिखते है उनको कहो ध्यान से लिखे।

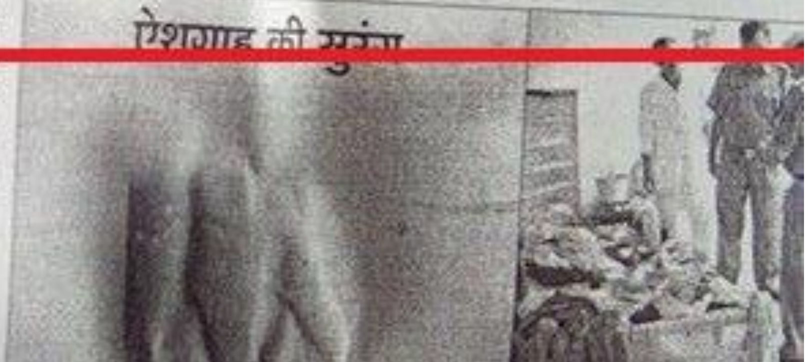
रामपाल सुर्ख़ियों में

रामपाल तेरे कैसे-कैसे रूप

बाप रे बाप... ऐसा बाप

बेटे वीरेंद्र ने कहा, वह समाज में मुंह दिखाने लायक नहीं रह

दीपक खोखर • रोहतक, 18 जुलाई।



रामपाल के आश्रम में युवक ने लगाई फांसी

बरवाला। चंडीगढ़ रोड पर स्थित संत रामपाल के सतलोक आश्रम में बने बाथरूम में एक युवक ने फांसी लगा ली। युवक की तलाशी के दौरान पुलिस को उसकी जेब से मिले आश्रम इंट्री कार्ड पर लिखे नाम पते से उसकी पहचान नरवाना के दबलैण गांव के रहने वाले 32 वर्षीय रणधीर दास के रूप में हुई है। इंट्री कार्ड 19 अगस्त का बना हुआ है। माना जा रहा है कि इसी दिन वह आश्रम में आया होगा।

मामला | आश्रम के अनुयायी बोले करंट लगा, मां ने लगाया हत्या का आरोप

सत्संग में गए युवक की मौत

भास्कर न्यूज | भिवानी

बरवाला आश्रम में सत्संग सुनने गए तेलीवाड़ा के एक युवक की संदिग्ध हालात में मौत हो गई। आश्रम के अनुयायी युवक को देर रात उसके घर छोड़ गए। परिजन अस्पताल लेकर गए तो चिकित्सकों ने उसे मृत बताया। अनुयायियों ने परिजनों को बताया कि युवक को करंट लग गया, मगर युवक की मां ने हत्या का आरोप लगाया है।

बरवाला पुलिस मामले की जांच कर रही है। अभी तक कोई मामला दर्ज नहीं हो पाया है। जानकारी अनुसार, तेलीवाड़ा वासी 23 वर्षीय युवक सौरभ 19 जून को सुबह करीब नौ बजे बरवाला आश्रम में सत्संग सुनने गया था। सौरभ का पूरा परिवार अक्सर वहां जाता है। सौरभ का एक छोटा भाई सचिव व पिता आत्मप्रकाश भी बरवाला आश्रम में जाते हैं। बुधवार देर रात आश्रम से अनुयायी युवक को लेकर उसके घर पहंचे और बताया कि इसे करंट लग गया है। इसके बाद रात 12 बजे परिजन उसे सामान्य अस्पताल लाए। यहां चिकित्सक ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। युवक की मां आशा देवी ने बताया कि उसके बेटे की हत्या की गई है। परिजनों ने पलिस से मामले की पूरी जांच की मांग की है। बरवाला से आए जांच अधिकारी भजनलाल ने बताया कि उन्हें सूचना मिली थी कि बरवाला आश्रम में एक युवक को करंट लग गया है। युवक को भिवानी भेज दिया है। युवक की मां हत्या का आरोप लगा रही है। अभी शव का पोस्टमार्टम नहीं हुआ है। रिपोर्ट के बाद ही आगामी कार्रवाई की जाएगी।



तेलीवाड़ा निवासी आत्मप्रकाश की मौत पर विलाप करते परिजन।

http://epaper.bhaskar.com/bhiwani-bhaskar/101/21062013/cph/1/

DAINIK BHASKAR . 21 JUNE 2013 . BHIWANI BHASKAR. HARYANA

सतलोक आश्रम में मृत मिले रणधीर के पिता बोले-सुसाइड नहीं मर्डर है

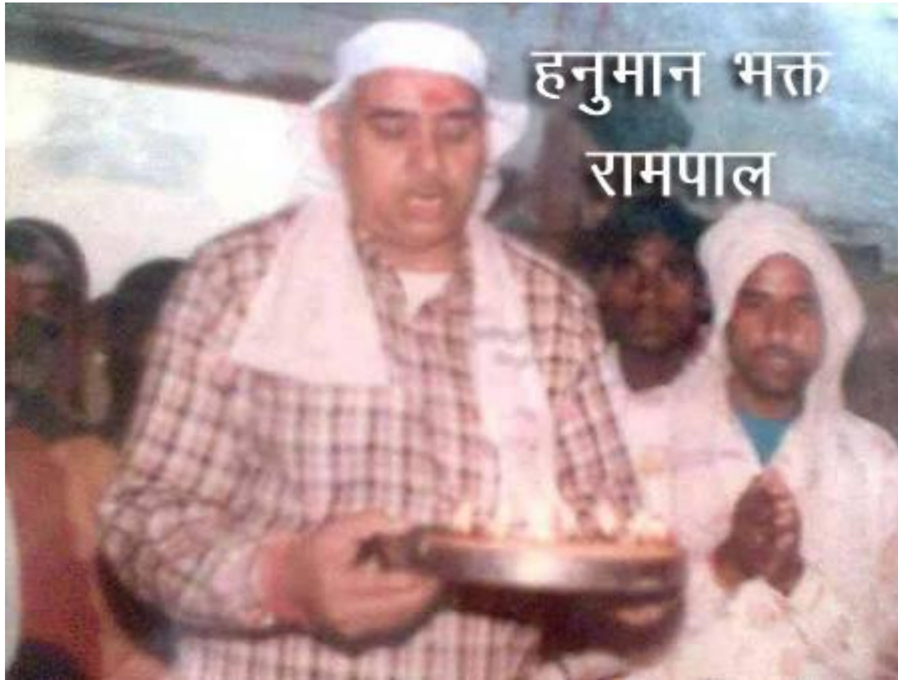
शव का हुआ पोस्टमार्टम, मधुबन भेजा जाएगा विसरा

भास्कर न्यूज | बरवाला

नेशनल हाईवे पर संत रामपाल के सतलोक आश्रम के बाथरूम में मिले शव मामले में मृतक के परिजनों ने आश्रम पर युवक रणधीर दास की हत्या करने का आरोप लगाया है। पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद आगामी कार्रवाई की जाएगी। इससे पहले पुलिस मामले को आत्महत्या का मामला समझ कर जांच कर रही थी। वहीं पुलिस ने मृतक के शव का शुक्रवार को अग्रोहा मेडिकल कॉलेज से पोस्टमार्टम करवाने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया है। चिकित्सकों ने विसरे को जांच के लिए मधुबन लैब भेजने की बात कही है।

पुलिस के समक्ष मृतक के पिता हरिकेश ने आरोप लगाते हुए कहा है कि उसका बेटा आत्महत्या नहीं कर सकता। उन्हें संदेह है कि पहले उसके बेटे को मारा गया है, बाद में मामले को आत्महत्या जाहिर करने के इरादे से शव को शॉवर पर लटकाया गया है। हरिकेश ने आरोप लगाया है कि उसके बेटे की हत्या मामले को आश्रम के संचालक दबाने की कोशिश कर रहे हैं। थाना प्रभारी अनिल कुमार ने बताया कि मौत का कारण पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही साफ हो पाएगा। मेडिकल कॉलेज के सीएमओ डॉ. राजीव चौहान ने बताया कि शव का विसरा जांच के लिए मधुबन भेज दिया है। गुरुवार को संत रामपाल के सतलोक आश्रम में बने बाथरूम में लगे शॉवर पर पायजामे से फंदा लगा शव मिला था। युवक की पहचान उसकी तलाशी के दौरान जेब से मिले आश्रम इंट्री कार्ड से नरवाना के दबलैण गांव के रहने वाले रणधीर दास के रूप में हुई थी।

रामपाल दास 13 वर्ष पूर्व तक हरियाणा सरकार के सिंचाई विभाग में बतौर जूनियर इंजीनियर कार्यरत थे । बचपन से ही हनुमान व श्रीकृष्ण के भक्त रहे ।



रामपाल दास के अनुसार वे लगातार पच्चीस वर्षों तक हनुमान जी की भक्ति करते रहे । इस दौरान उन्होंने नियमित रूप से रोजाना सात बार हनुमान चालीसा का पाठ किया और लगातार 18 वर्षों तक राजस्थान के चारू जिला में स्थित सालासार महाराज के मंदिर में जाते रहे । रामपाल का कहना है कि दो दशक से अधिक की साधना के बाद भी उन्हें भगवान के दर्शन नहीं हुए ।

http://dainiktribuneonline.com/2013/05/%E0%A4%9C%E0%A5%82%E0%A4%A8%E0%A4%BF%E0%A4%AF%E0%A4%B0-%E0%A4%87%E0%A4%82%E0%A4%9C%E0%A5%80%E0%A4%A8%E0%A4%BF%E0%A4%AF%E0%A4%B0-%E0%A4%B8%E0%A5%87-%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%A4-%E0%A4%AC%E0%A4%A8/

भास्कर न्यूज - जींद

किनाना-बिशनपुरा रेलवे स्टेशन के निकट गुरुवार को रेलवे पुलिस ने एक युवक का शव बरामद किया है । शव के पास से ऐसा कुछ बरामद नहीं हुआ, जिससे उसकी शिनाख्त हो सके ।

रेलवे पुलिस ने मृतक के शव को सामान्य अस्पताल के शव गृह में रखवा दिया है । मृतक की उम्र लगभग 27 वर्ष है और उसने गले में रामपाल महाराज का लॉकेट पहना हुआ है । इसके अलावा मृतक ने खाकी रंग की पेंट व सफेद रंग की शर्ट पहनी हुई है । रेलवे पुलिस ने थाना क्षेत्र के तहत रेलवे स्टेशनों को शव की सूचना दे दी है ।

http://www.bhaskar.com/news/MAT-HAR-OTH-c-103-72344-NOR.html

गोरक्षा दल के सदस्यों ने रामपल का पुतला फूंका

गोरक्षा दल हासी द्वारा चौपटा बाजार में करौथा में हुए गोली काड के विरोध में आश्रम के प्रमुख रामपाल का पुतला फूंक कर रोष व्यक्त किया। प्रदर्शन का नेतृत्व गौरक्षा दल के प्रधान सुनील जागड़ा ने किया। इस अवसर पर वक्ताओं ने...

http://article.wn.com/view/WNATda7bd5b9a11c703fc29514bac36f5bae/

- -

सालों से घिरा रहा है सतलोक आश्रम विवादों में । जानिए कब क्या हुआ ।

Source: www.bhaskar.com/article/HAR-ROH-satlok-aashram-rohtak-4262167-NOR.html

9 जून 2006 : झज्जर के छुड़ानी की कोठी दयाल धाम आश्रम के एक भक्त द्वारा लिखित पुस्तक सैतान बणया भगवान के विरोध में रामपाल समर्थकों ने कोठी दयाल धाम पर हमला बोल दिया । इस हमले में आश्रम प्रमुख ब्रहमस्वरूप सहित कई लोग घायल हुए ।

7 जुलाई 2006 : करौंथा आश्रम से 3 लोग गिरफ्तार किए गए ।

8 जुलाई 2006 : करौंथा आश्रम के श्रद्धालुओं ने तीन लोगों की गिरफ्तारी के विरोध में झज्जर-रोहतक हाइवे को जाम कर दिया और गिरफ्तार लोगों को छोड़ने की मांग की। इसी दिन डीघल में 27 खाप के प्रधान जयसिंह की अध्यक्षता में पंचायत हुई ।

9 जुलाई 2006 : पंचायत प्रतिनिधियों ने आश्रम की संदिग्ध गतिविधियों को लेकर बहादुरगढ़ आगमन पर सीएम से बातचीत की ।

10 जुलाई 2006 : डीघल जाम लगा दिया । गुरु पूर्णिमा पर रामपाल समर्थक आश्रम तक न पहुंचे, इसके लिए ग्रामीण तैनात हो गए ।

11 जुलाई 2006 : डीघल व आसपास के ग्रामीण इस बात पर अड़े रहे कि जब तक करौंथा आश्रम के खिलाफ जांच शुरू नहीं होती, तब तक जाम जारी रहेगा। इस तरह जाम चौथे दिन भी जारी रहा ।

12 जुलाई 2006 : आश्रम के बाहर उपद्रव, एक की मौत ।

13 जुलाई 2006 : आश्रम संचालक रामपाल महाराज को 24 सहयोगियों सहित गिरफ्तार कर लिया गया । तत्कालीन एसडीएम वत्सल वशिष्ठ ने आश्रम को अपने कब्जे में ले लिया ।

अगस्त 2006 : रामपाल ने हाईकोर्ट में दी प्रशासन के फैसले को चुनौती ।

नवंबर 2009 : हाईकोर्ट का प्रदेश सरकार को आश्रम दोबारा रामपाल के ट्रस्ट को सौंपने का आदेश । प्रदेश सरकार और आर्य प्रतिनिधि सभा ने हाईकोर्ट के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में दी चुनौती ।

18 फरवरी 2013 : सुप्रीम कोर्ट में सरकार व प्रतिनिधि सभा की याचिका खारिज ।

24 फरवरी 2013 : रामपाल के ट्रस्ट ने एसडीएम कोर्ट में आश्रम का कब्जा लेने के लिए लगाई याचिका ।

11 मार्च 2013 : एसडीएम ने आश्रम के रिसीवर सदर थाना प्रभारी को पत्र लिखकर जल्द आश्रम को ट्रस्ट के हवाले करने का दिया आदेश ।

7 अप्रैल 2013 : गुपचुप तरीके से आश्रम के रिसीवर सदर थाना प्रभारी सतेंदर ने आश्रम ट्रस्ट को सौंप दिया ।

9 अप्रैल 2013 : सतलोक आश्रम पर पथराव और रोहतक-झज्जर हाईवे 8 घंटे जाम । आर्य समाजियों को प्रशासन का रात 12 बजे 30 अप्रैल तक आश्रम को दोबारा कब्जे में लेने का आश्वासन । जाम खुला ।

10 अप्रैल 2013 : सैकड़ों रामपाल समर्थकों का आश्रम में डेरा । करौंथा में धारा 144 लागू ।

11 अप्रैल 2013 : प्रशासन ने सतलोक आश्रम में भी धारा 144 लागू करने और रामपाल के अनुयायियों को बाहर भेजने की बात कही ।

17 अप्रैल 2013 : रामपाल समर्थकों की याचिका पर सिविल जज ने प्रशासन को एक सप्ताह तक आश्रम में यथास्थिति बनाए रखने के आदेश दिए ।

24 अप्रैल 2013 : सिविल कोर्ट ने प्रशासन को दोबारा 27 अप्रैल तक यथास्थिति के निर्देश दिए ।

25 अप्रैल 2013 : आर्य प्रतिनिधि सभा का सतलोक आश्रम के सामने दो कनाल जमीन खरीदने का खुलासा । जहां आर्य समाज मंदिर बनाने की बात कही गई ।

28 अप्रैल 2013 : सिविल जज ने प्रशासन को 8 मई तक आश्रम में यथास्थिति के आदेश दिए । प्रशासन की 30 अप्रैल तक आश्रम खाली कराने की योजना को झटका ।

2 मई 2013 : आर्य समाजियों की संघर्ष समिति ने बैठक कर 12 मई को निर्णायक कदम उठाने का फैसला लिया

8 मई 2013 : कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रख 10 मई तक प्रशासन को यथास्थिति बनाए रखने का आदेश दिए ।

10 मई 2013 : कोर्ट ने रामपाल समर्थकों को बड़ी राहत देते हुए अफसरों को आदेश दिए कि आश्रम की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए ।

12 मई 2013 : 3 की मौत । 100 घायल ।

20 जून 2013 : बरवाला आश्रम के सत्संग में गए युवक की मौत ।

22 सितम्बर 2014 : रामपाल बीमार हो गए है । उन्हें बुखार, कमर दर्द, डायरिया हो गया है । Dr. O. P. हुड्डा ने रामपाल को 5 दिन के बेड रेस्ट की सलाह दी है ।

5 नवम्बर 2014 : पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट ने रामपाल और एनएसएससी के अध्यक्ष राम कुमार ढाका के खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी कर गिरफ्तारी के आदेश दिए हैं ।

16 नवम्बर 2014 : हाईकोर्ट ने डीजीपी व गृह सचिव को 17 नवंबर तक रामपाल को पेश करने का आदेश दे रखा है ।

19 नवंबर 2014 : बरवाला स्थित रामपाल के आश्रम में भक्तों को बंधक बनाकर रखने की बात सामने आई है । मंगलवार सुबह करीब साढे चार बजे लगभग 70 श्रद्धालु सतलोक आश्रम से मौका पाकर भाग निकले । इनमें अधिकतर महिलाएं थीं । उन्होंने बताया कि आश्रम के अंदर रामपाल के तथाकथित कमांडर लोगों को डरा रहे हैं कि बाहर जाओगे तो पुलिस तुम्हारा एनकाउंटर कर देगी । यहीं रुके रहो रामपाल तुम्हारी रक्षा करेंगे । श्रद्धालुओं ने बताया कि अगर आश्रम में और देर रुकते तो वैसे ही मर जाते । वे आज के बाद फिर कभी आश्रम की ओर देखेंगी भी नहीं ।

रामपाल पर मंगलवार की देर रात बरवाला (हिसार) थाने में हत्या का प्रयास, आगजनी, भारत सरकार के खिलाफ साजिश रचने और देशद्रोह का मामला दर्ज किया है । पुलिस ने बुधवार को करीब 70 लोगों को गिरफ्तार किया है ।

20 नवंबर 2014 : हरियाणा के हिसार जिले में बरवाला स्थित सतलोक आश्रम के संचालक रामपाल को पुलिस और सीआरपीएफ की संयुक्त कार्रवाई में देर रात गिरफ्तार कर लिया गया और इसके साथ ही रामपाल की पुलिस से पिछले कुछ दिनों से चली आ रही लुकाछिपी का भी पटाक्षेप हो गया । हरियाणा पुलिस और सीआरपीएफ के अधिकारियों ने करीब सवा नौ बजे आश्रम के अन्दर प्रवेश किया और रामपाल के साथ उनके अनेक समर्थकों को हिरासत में ले लिया ।

http://www.patrika.com/news/sant-rampal-arrest-created-nuisance/1048831#sthash.iZ1MpNZz.dpuf



अब प्रस्तुत है रामपाल के बारे में लोगों के विचार ।

Source :
www.facebook.com/photo.php?fbid=412434918849254&set=a.245630758863005.54867.100002482471503&type=1

Iqbal Seth : जगत गुरु रामपाल महाराज की हिंदी वेबसाइट देखकर " सावन के अंधे को हरा हरा दिखायी देता है " कहावत याद आयी । उनकी वेबसाइट से समझ में आता है कि वो कैसे अवाम को बहका रहे हैं । जाकिर नायक को मक्कारी से ललकार रहे हैं । जबकि इनकी यह मिसाल देखकर आम मुसलमान भी हंसेगा ।

एक ही मिसाल काफी है ज्यादा के हकदार बनें तो हम और भी बता देंगे । साथ ही यह भी कहेंगे इस गुरू को कुरआन शब्द तक कैसे लिखा जाता है पता नहीं ।

देखिये उनको हरा हरा अर्थात कबीर । रमजान के रोजों बारे में जहां कुरआन में जिकर है वहां दिख रहा है । अरबी शब्द वलि तुकब्बिरू शब्द को बल्लत कबीर बता कर कुरआन में कबीर बताकर बहका रहे हैं इस लिंक पर

और स्वयं देखें

www.jagatgururampalji.org/hquran.php

[2:185] फारूक़ ख़ान & अहमद

रमज़ान का महीना जिसमें कुरआन उतारा गया लोगों के मार्गदर्शन के लिए, और मार्गदर्शन और सत्य-असत्य के अन्तर के प्रमाणों के साथ। अतः तुममें जो कोई इस महीने में मौजूद हो उसे चाहिए कि उसके रोज़े रखे और जो बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों में गिनती पूरी कर ले। अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख़्ती और कठिनाई नहीं चाहता, (वह तुम्हारे लिए आसानी पैदा कर रहा है) और चाहता है कि तुम संख्या पूरी कर लो और जो सीधा मार्ग तुम्हें दिखाया गया है, उस पर अल्लाह की बड़ाई प्रकट करो और ताकि तुम कृतज्ञ बनो

बल्लत कबीर बूल्लाह आला महादाकुप वाला अल्ला कुम तरकोरून 1

.1 और ताकि तुम कबीर अल्लाह की बड़ाई बयान करों इस बात पर कि तुम को हिदायत फरमायी और ताकि तुम शुक्र करो अल्लाह तआला का ।

जबकि कुरआन में आप ऑनलाइन लिंक पर देख सकते हैं इस जगह पर रमजान की बातें हो रही हैं कुछ समय पूर्व की हस्ती कबीर दास का इससे कोई लेना देना नहीं ।

http://tanzil.net/#2:185

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَىٰ وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَن شَهِدَ مِنكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ وَمَن كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٨٥﴾

The month of Ramadhan [is that] in which was revealed the Qur'an, a guidance for the people and clear proofs of guidance and criterion. So whoever sights [the new moon of] the month, let him fast it; and whoever is ill or on a journey - then an equal number of other days. Allah intends for you ease and does not intend for you hardship and [wants] for you to complete the period and to glorify Allah for that [to]

which He has guided you; and perhaps you will be grateful. (Quran:2-185(

रमज़ान का महीना जिसमें कुरआन उतारा गया लोगों के मार्गदर्शन के लिए, और मार्गदर्शन और सत्य-असत्य के अन्तर के प्रमाणों के साथा। अतः तुममें जो कोई इस महीने में मौजूद हो उसे चाहिए कि उसके रोज़े रखे और जो बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों में गिनती पूरी कर ले। अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख़्ती और कठिनाई नहीं चाहता, (वह तुम्हारे लिए आसानी पैदा कर रहा है) और चाहता है कि तुम संख्या पूरी कर लो और जो सीधा मार्ग तुम्हें दिखाया गया है, उस पर अल्लाह की बड़ाई प्रकट करो और ताकि तुम कृतज्ञ बनो (185(

http://tanzil.net/#trans/hi.farooq/2:185

पोस्टमार्टम पोस्टमार्टम पोस्टमार्टम पोस्टमार्टम पोस्टमार्टम पोस्टमार्टम पोस्टमार्टम

कबीरपंथी वह भी नकली

ढोंगी रामपालदास का पोस्टमार्टम

अपने असली स्थान (जेल) में जाते रामपालदास

संस्कृत की शैक्षणिक योग्यता का पोस्टमार्टम

रामपाल दास संस्कृत में अनपढ़, गंवार, अँगूठा टेक है इसे तो यह भी नहीं पता कि "अश्वत्थ" का अर्थ "पीपल" होता है और यह मूर्ख इसका अर्थ "घोड़ा" लिखता है। संस्कृत तो दूर की बात है शुद्ध हिन्दी तक इसे पढ़नी नहीं आती। "वेदादि" को "विविध" पढ़ता है (देखो इस मूर्ख की सीडी में), "दुग्धं" को "दूग्धा" पढ़ता है। "स्वेद" पसीने को कहते हैं और यह अनपढ़ मूढ़ मूर्ख इसे "सफेद" कहता है। "सर्वेषां मनुष्याणाम्" को "सर्वा मनुष्यानाम" कहता है जो न तो संस्कृत ही है और न हिन्दी है।

यह मूर्ख "कविः" को "कविरदेव" कहता है। चारों वेदों में "कविरदेव" शब्द कहीं भी नहीं है और न ही इसका कोई अर्थ बनता है और यह मूर्ख रामपाल दास कहता है कि चारों वेदों में लिखा है कि "कविरदेव" कबीर परमेश्वर है। इस अनपढ़ गंवार का एक नमूना और देखो कि यह वेदमंत्रों को श्लोक कहता है। (परमेश्वर का सार संदेश पुस्तक से)

फिर भी आश्चर्य एवं दुर्भाग्य है इस राष्ट्र का कि ऐसे अज्ञानी, मूर्ख भी इस देश में वेद-भाष्य करने लगे हैं और ढोंगी बाबा संत महाराज बन बैठे हैं।

- -

अब देखिए कितनी चालाकी से रामपाल अपनी तथाकथित आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा की चुनौती की आड़ में साधना टी॰वी॰ चैनल के साथ मिलकर लोगों को मूर्ख बना रहे हैं । वास्तविकता तो यह है कि रामपाल केवल उन्ही धर्म गुरुओं को आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा के लिए बुलाते हैं जिन्हे स्वयं धर्म और परमात्मा के बारे मे कोई जानकारी नहीं होती है ।

फिर जो धर्मगुरू आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा के लिए आते हैं उनसे रामपाल की सीधे आमने-सामने बैठकर कोई चर्चा नहीं होती है बल्कि साधना टी॰वी॰ चैनल का एक व्यक्ति रामपाल द्वारा दिये गए कुछ प्रश्न लेकर आगन्तुक धर्मगुरू के पास जाता है और उनसे उन प्रश्नों के उत्तर पूछता है ।

धर्मगुरू द्वारा जो उत्तर दिये जाते हैं उनकी विडियो रिकार्डिंग कर ली जाती है । फिर उन्ही प्रश्नों के उत्तर रामपाल देते हैं और उसकी भी विडियो रिकॉर्डिंग कर ली जाती है । उसके बाद उसे साधना टी॰वी॰ चैनल पर दिखा दिया जाता है ।

अब आप सोचिए क्या यही होता है शास्त्रार्थ ?
क्या ऐसे ही होती है आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा ?
यह कैसी चुनौती है ?
क्या इस तथाकथित चुनौती की आड़ में लोगों को मूर्ख नहीं बना रहे हैं ?

- -

महर्षि यास्क कहते है --

श्रुतितोऽपितर्कतो न पृथक्त्वेन मन्त्रा निर्वक्तव्या प्रकरणाश एव तु निर्वक्तव्याः ।। (निरुक्त 13 - 12)

भाव इसका यह है कि चाहे मन्त्रार्थ ब्राह्मण ग्रन्थों आदि के प्रमाण से करें, चाहे युक्ति और तर्क का आश्रय लेकर करें, परन्तु प्रत्येक दशा में, प्रकरण से अलग करके मन्त्रों का अर्थ न करें । इससे साफ़ ज़ाहिर है कि मन्त्रों का जो क्रम है, उसी के अनुसार प्रकरण को देखकर ही मन्त्रार्थ ठीक हो सकता है, क्रम और प्रकरण से अलग करके नहीं । ध्यात्वय -- प्रायः यही नियम अन्य पुस्तकों व् विषयों पर भी लागू होता है । एक आर्य बन्धु ने एक उदाहरण दिया था (ऐसे ही किसी समूह में) भौतिक विज्ञान की कक्षा में NUCLEUS का भाव और है और जीव विज्ञान की कक्षा में NUCLEUS का भाव कुछ और है । रामपाल किसी भी पुस्तक में कबीर से मिलता जुलता शब्द देख कर यह सिद्ध करना चाह रहा है कि वहाँ वर्णन संत कबीर का है । ऐसे ही वेदादि ग्रन्थों में कहीं भी तन / तनु पद आया है तो वो उसी मन्त्र के आधार पर कहता है कि परमात्मा स+तन = सशरीर है अर्थात परमात्मा साकार है । कुछ समय पूर्व दिल्ली में एक भयंकर सामूहिक बलात्कार की घटना हुई थी जिसका मुख्य आरोपी "राम सिंह" था है । क्या यह रामपाल (रामसिंह जूनियर इंजीनिअर) वही "राम सिंह" तो नहीं ???????

इसकी युक्तियों से तो यह सम्भव है !!!!

http://pt.peperonity.com/go/sites/mview/exposed.rampal.dass/46790061

- -

कबीर साहब जी की वाणी है ।

मत दर हंसा काल से कर मेरी प्रतीत ।
अमर लोक पहुंचाय हूँ चले सो भव जल जीत ।।

रामपाल के चेलों जरा थोडा तो सोचो.. जो खुद मोत से डरता है हमेशा बंदूकधारी की सुरक्षा लेता है । और हमेशा bullet proof घेरे में बेठा रहता है...... वो क्या तुम्हे मुक्ति देगा... खुद बंधन में है ।

- -

अगर रामपाल काल से अपनी रक्षा करने में समर्थ हैं तब तो उसे काल से डरने कि कोई आवश्यकता नहीं होनी चाहिये, मगर रामपाल तो इतना बड़ा डरपोक हैं कि अपने साथ अंगरक्षक रखता हैं, एक और अपने आपको कबीर परमेश्वर का अवतार बताता हैं दूसरी और डरपोक नेताओं के समान बंदूकों के साये में रहता हैं । जो अपनी रक्षा स्वयं करने में असक्षम हैं वह तुम्हारी क्या रक्षा करेगा मूर्खों ?

https://pakhandkhandani.wordpress.com/2013/11/05/%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%AE%E0%A4%AA%E0%A4%BE%E0%A4%B2-%E0%A4%95%E0%A5%87-%E0%A4%9A%E0%A4%AE%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8B%E0%A4%82-%E0%A4%95%E0%A5%87-%E0%A4%A6%E0%A4%BE/

एक होता हैं मुर्ख होना और एक होता हैं मुर्ख बनाना, रामपाल तो धूर्त हैं पर उसके चेले कितने बड़े मुर्ख हैं और रामपाल द्वारा मुर्ख बनाये जा रहे हैं कि वेद मंत्र के एक शब्द कविर्मनीषी से वेदों में कबीर साकार परमेश्वर सिद्ध करने वाला रामपाल की धूर्तता के शिकार हो गये । उनकी क्या आँखें फूटी पड़ी हैं जो वे यह भी नहीं देख पा रहे की इसी मंत्र में ब्रहम के उन गुणों का बखान हैं ।

--------------- ----------

वेदों का अर्थ करने के लिए संस्कृत व्याकरण के नियमों का पालन करना पड़ता हैं । कवि शब्द का अर्थ कबीर किस आधार पर किया गया हैं । रामपाल इसका प्रमाण दे क्योंकि संस्कृत व्याकरण के आधार पर कवि शब्द का अर्थ कबीर किसी भी प्रकार से नहीं बनता और वेद सार्वकालिक ज्ञान हैं जो कि सृष्टी के आरंभ में दिया गया था इसलिए वे न तो इतिहास की पुस्तक हैं और न ही किसी व्यक्ति विशेष के जीवन चरित्र को बखान करने की पुस्तक हैं ।

वेदों के कुछ मन्त्रों के अर्थ को तोड़ मरोड़ देने दे रामपाल एक प्रकार का छल ही कर रहा हैं । इतना ही नहीं गीता के भी मनमाने अर्थ निकालकर रामपाल जो अपने आपको विद्वान सिद्ध करने पर लगा हुआ हैं । अनपढ़ और अज्ञानी जनता को मुर्ख बनाना बहुत आसान हैं परन्तु शिक्षित, स्वाध्यायशील और ज्ञानी जन उसके अर्थों की न केवल उचित समीक्षा करके उसके दावे की पोल आसानी से खोल देते हैं ।

वेद मन्त्रों के गुढ़ अर्थ करने की योग्यता तो दूर की बात हैं पाखंड गुरु रामपाल संस्कृत के वेद मन्त्रों तक को तो अशुद्ध पढ़ता हैं । सभी जानते हैं की वेद ब्रहम की देन हैं । अपने आपको परमात्मा कहने वाला रामपाल वेद मन्त्रों के अर्थों को तोड़ मरोड़ कर न केवल अपना ही परिहास करवा रहा हैं अपितु अन्धविश्वास को बढ़ावा दे रहा हैं ।

अरे हम तो एक बार वहा गए तभी समझ गए की वहा क्या प्रपंच चल रहा है । भोले भाले और मूर्ख टाइप लोगो को बेवकूफ बनाया जा रहा है ।

केवल किताबी बाते है वहा टीवी पर प्रमाण दिखाने की बात करता है । कहीं से 2 लाइन कहीं से 4 लाइन दिखा कर लोगो को गुमराह करता है । रामपाल ग्रंथो में जो दिखाता है उसके आगे पीछे क्या लिखा है ये भी तो देखो अन्धो । अधूरी बात दिखा कर अनपढ़ भोले लोगो को ठग सकते हो सबको नही ।

पोल तो रामपाल की खुल गई कि कितना डरता है मौत से । तभी तो परमात्मा का विश्वास भरोसा छोड़ कर बंदूक धारियों की पनाह में रहता है । अरे कबीर जी तो कहते हंसा मत डर काल से कर मेरी परतीत । इसे खुद साहब पर भरोसा नहीं रहा तभी बंदूक की परतीत करता है ।

कबीर वाणी के अनुसार रामपाल कालदूत है सभी जीवों को बचना चाहिए ।

रामपाल के मुर्ख चेलो को अब यह सब पढ़कर भी अक्ल नहीं आयेगी तो कभी नहीं आ सकती । हम अंत में ईश्वर से यही प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर इन मूर्खों को सद्बुद्धि दे जो चमत्कार जैसे अन्धविश्वास के कारण अपने श्रेष्ठ जीवन का नाश करने पर तुले हुए हैं ।

सभ्य भाषा में एक प्रश्न

रामपाल के सभी चेले रामपाल को चमत्कारी मानते हैं और उनका यह कहना हैं कि रामपाल में सभी प्रकार के असाध्य रोग ठीक करने हैं तो यह बताये की रामपाल खुद अपने आपको बीमार क्यों कह रहा हैं ?

रामपाल कोई संत नहीं है, न ही गुरू की उनमे पात्रता है । कोरा, अज्ञानी, बालबुद्धि का महा अभिमानी, लोगों को शास्त्र एवं पुराणों की अधुरी बात बताकर भ्रमित करनेवाला एक साधारण मलिन जीव है ।

http://www.gyancharcha.com/2012/12/blog-post_22.html

http://www.gyancharcha.com/2013/01/blog-post_9.html

इन दिनों में रोहतक आश्रम में जो कुछ रामपाल की टिप्पणियों को लेकर चल रहा है वह बहुत दु:खद है । स्वयं को दुनिया का एकमात्र महानत्तम जगतगुरु तथा महान तत्वदर्शी संत बताने वाले रामपाल की अल्प बुद्धि ने उनके साधकों को अन्धा बना दिया है । रामपाल की अल्प बुद्धि ने विभिन्न धर्मों के श्रद्धालु लोगों के दिल को गहरी चोट पहुँचाई है ।

एक तो रामपाल ना कोई सिद्ध महापुरुष है, नाहि वे कोई आत्मसाक्षात्कारी संत है । यूँ कहिए - पोथी - पुराण पढ़ - पढ़ के अपने मस्तिष्क पर झूठे ज्ञान का बोझ ढोने वाले एक अधूरे पण्डित हो सकते है, लेकिन वे ज्ञानी संत कतई नहीं है । रामपाल के मस्तिष्क पर मै ज्ञानी हूँ इस अभिमान का भूत सवार हुवा है । यह भूत उतारने के लिए उनके आज तक दिए गये प्रवचनों की जाँच होनी चाहिए ।

रामपाल अगर सच्चे ज्ञानी होते तो वे अपने पागलपन का परिचय ना देते । सच्चा ज्ञानी किसी धर्म को या किसी संत को नीचा दिखाने का काम नहीं करता । रामपाल ने न आर्य समाज के संतों के बारे में अभद्र टिपण्णी

की है, अन्य धर्म के कही संत तथा धर्म गुरुओं के बारे मे लगातार अपनी गन्धि जुबान चलाते आये है, चला रहे है ।

झूठ को सच साबित कैसा करना इसकी उनके पास कला है, इस कला के कारण ही अज्ञानी लोग ठगे जा रहे है । रामपाल के पास संत के कोई लक्षण नहीं है, गुरू के भी कोई लक्षण नहीं है फिर भी वे स्वयं को जगत गुरू मानते है । " दुनिया झुकती है, झुकाने वाला चाहिए " इस कहावत का वे भरपूर लाभ उठा रहे है । रामपाल कितने झूठ है, कितने सच है, यह उजागर करने के लिए मिडिया आगे क्यों नहीं आती ?

हम भगवान से प्रार्थना करते है, हे प्रभु ! रामपाल को शीघ्रता से सदबुद्धि दो । और खून खराबा रोको ।

http://www.gyancharcha.com/2013/05/l.html

- -

ये रामपाल खुद को कबीरपंथी कहता है पर कबीरपंथ की तो इसे A,B,C,D भी नहीं पता ये कबीर साहब जी की तस्वीर सिर्फ भोले भले लोगो को फंसाने के लिए लगाता है ताकि इसका लोगो को गुमराह करके उनसे पैसे हडपने का धंदा चल सके, इसके ज्ञान में भी सदगुरु कबीर साहेब जी की वाणियो का उलेख नहीं होता इसी लिए सभी मिडिया से request है की इसे कबीरपंथी कहकर कबीरपंथीयो की भावनाओ को ठेस ना पहुंचाये ...

- -

फुलसिंगभाई जी : आइये, अब हम आपको रामपाल की बाल बुद्धि का परिचय कराते है ।

Source : http://www.gyancharcha.com/2012/12/blog-post_22.html

अपनी अल्प बुद्धि का परिचय देने वाली ज्ञान गंगा नामक पुस्तक में पृष्ठ संख्या 123 पर लिखा है -

ज्ञान गंगा 123

सभी संतों ने पवित्र गीता जी के अनुवाद में अर्थों का अनर्थ किया है। गीता अध्याय 7 मन्त्र 18 व 24 में अनुत्तमाम् का अर्थ अति उत्तम किया है तथा अध्याय 18 मन्त्र 66 में व्रज का अर्थ आना किया है। जबकि अनुत्तम का अर्थ अति घटिया होता है तथा व्रज का अर्थ जाना होता है। तत्वज्ञान के अभाव से तथा ज्ञान हीन गुरुओं के कारण ही सर्व भक्त समाज शास्त्र विधि रहित साधना करके मनुष्य जीवन व्यर्थ कर रहा है (पवित्र गीता अध्याय 16 मन्त्र 23-24)। सर्व पवित्र धर्मों की पवित्रात्माऐं तत्व ज्ञान से अपरिचित हैं। जिस कारण नकली गुरुओं, सन्तों, महन्तों तथा ऋषियों का दाव लगा हुआ है। जिस समय पवित्र भक्त समाज आध्यात्मिक तत्वज्ञान से परिचित हो जाएगा उस समय इन नकली सन्तों, गुरुओं व आचार्यों को छुपने का स्थान नहीं मिलेगा।

दूसरों को नकली, ज्ञान हीन कहने वाले रामपाल कितने अज्ञानी है यह देखिये -

गीता अध्याय 7 मन्त्र 18 को देखे -

उदारा: सर्वे एव एते ज्ञानी तु आत्मा एव मे मतम

आस्थितः सः हि युक्तात्मा माम् एव अनुत्तमाम गतिम् ॥18॥

इस श्लोक के शब्द का अर्थ गीता प्रेसवालो ने ऐसा दिया है -

उदाराः = उदार है, सर्वे एव = सभी, एते = ये, ज्ञानी = ज्ञानी (तो साक्षात), तु = परंतु, आत्मा = मेरा स्वरुप, एव = ही है - (ऐसा), मे = मेरा, मतम = मत है; आस्थितः = अच्छी प्रकार स्थित है, सः = वह, हि = क्योंकि, युक्तात्मा = मद्नत मन - बुद्धिवाला (ज्ञानी भक्त), माम् = मुझमे, एव = ही, अनुत्तमाम = अति उत्तम, गतिम् = गतिस्वरूप ।

अज्ञानी बालबुद्धि रामपाल का कहना है कि अनुत्तमाम का अर्थ अति उत्तम नहीं होता है । अनुत्तम का अर्थ अति घटिया होता है ।

रामपाल की बुद्धि कितनी अल्प है इसका यह देखे प्रमाण -

1) संस्कृत -हिन्दी कोश

संपादक -वामन शिवराम आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, प्राइवेट लिमिटेड - दिल्ली.

इस शब्द कोश के पृष्ठ संख्या 37 पर अनुत्तम शब्द का अर्थ दिया गया है वह इस प्रकार है -

अनुत्तम = जिससे अच्छा कोई और न हो, जिससे बढ़िया कोई और न हो, सबसे अच्छा, सबसे बढ़िया, प्रमुख रूप से सर्वोपरी ।

2) संस्कृत हिन्दी अंग्रेजी शब्दकोश

संपादक - डा. शिवप्रसाद भारद्वाज शास्त्री,

अशोक प्रकाशन 2615, नई दिल्ली -6

इस शब्द कोश के पृष्ठ संख्या 36 पर अनुत्तम शब्द का अर्थ दिया गया है वह इस प्रकार है -

अनुत्तम = जिससे अच्छा कोई न हो, सर्वश्रेष्ठ, having no superior or higher, unsurpassed exceeding all.

इससे यह सिद्ध होता है रामपाल कितने अधुरी सोच वाले है । उसका ज्ञान भी कितना अधुरा है, और वे बालबुद्धिवत है यह भी सिद्ध होता है ।

भगवान भला ऐसा क्यों कहेंगे - ....मेरे घटिया स्वरुप में अच्छी प्रकार स्थित है । जितने भी सच्चे ज्ञानी है उन्होंने अनुत्तम का सही अर्थ लिया है । घटिया सोचवाले रामपाल को अनुत्तम का अर्थ अति घटिया दिखता है तो इसमे कोई आश्चर्य नहीं है ।

रामपाल की जानकारी के लिये बताते है कुछ लोग अपने बच्चों का नाम अनुत्तम रखते है । भला कोई अपने बच्चे का नाम अति घटिया रख सकता है ?

अब हम चलते है व्रज शब्द की ओर - तथाकथित तत्वदर्शी का व्रज शब्द के बारे में क्या कहना है यह देखते है ।

बालबुद्धि रामपाल का कहना है कि व्रज का अर्थ जाना होता है ।

अब हम आपको व्रज का जाना के अलावा क्या क्या अर्थ होते है यह भी प्रमाण सहित सही अर्थ बताते है ।

1) संस्कृत -हिन्दी कोश

संपादक - वामन शिवराम आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, प्राइवेट लिमिटेड - दिल्ली .

इस शब्द कोश के पृष्ठ संख्या 993 पर व्रज शब्द का अर्थ दिया गया है वह इस प्रकार है -

व्रज = जाना, प्रगती करना, पधारना, पहुँचना, दर्शन करना, सहारा लेना, आ- , आना ।

2) संस्कृत हिन्दी अंग्रेजी शब्दकोश

संपादक - डा. शिवप्रसाद भारद्वाज शास्त्री, अशोक प्रकाशन 2615, नई दिल्ली - 6

इस शब्दकोश के पृष्ठ संख्या 851 पर व्रज शब्द का अर्थ दिया गया है वह इस प्रकार है -

व्रज = जाना, आगे बढना, स्पंदन करना, निवृत होना,

दूसरा अर्थ - घेर, बाड़ा, समुह ।

रामपाल को इतनी सोच क्यों नहीं है यह समझ मे नहीं आता है । उनकी बुद्धि में यह प्रकाश क्यों नहीं पढता कि भगवान भला ऐसा क्यों कहेंगे - मेरी शरण जा । मेरी शरण आ, ऐसा ही होना चाहिये, न की मेरी शरण जा ।उपर्युक्त शब्दकोश में व्रज का अर्थ आ - , आना ऐसा भी दिया गया है लेकिन रामपाल को आ - , आना यह शब्द नहीं दिखते है । उन्हें उनकी हलकी सोच के हिसाब से ही शब्द के अर्थ दिखते है । श्लोक के अर्थ के हिसाब से विद्वानो ने जो अर्थ दिया है वह एकदम सही है, गलत अर्थ नहीं दिया है । सही अर्थ बताने वालों को रामपाल नकली कहते है और स्वयं गलत अर्थ बताकर लोगों को ठगाकर महान विद्वान बन रहे है । गलत अर्थ बताकर भी बड़े दावे के साथ रामपाल कहते है व्रज का अर्थ जाना ही होता है । साधारण व्यवहार में हम किसी बालक को अपने पास बुलाते है तो हम कहते है - मेरे पास आ । ऐसा नहीं कहते है - मेरे पास जा । अधुरे का ज्ञान कितना अधुरा होता है यह रामपाल की सोच से पता चलता है ।

अर्थार्थी[1], आर्त[2], जिज्ञासु[3] और ज्ञानी—ऐसे चार प्रकारके भक्तजन मुझको भजते हैं॥ १६॥

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः॥

उनमें नित्य मुझमें एकीभावसे स्थित अनन्य प्रेमभक्तिवाला ज्ञानी भक्त अति उत्तम है, क्योंकि मुझको तत्त्वसे जाननेवाले ज्ञानीको मैं अत्यन्त प्रिय हूँ और वह ज्ञानी मुझे अत्यन्त प्रिय है॥ १७॥

उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम्।
आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम्॥

ये सभी उदार हैं, परन्तु ज्ञानी तो साक्षात् मेरा स्वरूप ही है—ऐसा मेरा मत है; क्योंकि वह मद्गत मन-बुद्धिवाला ज्ञानी भक्त अति उत्तम गतिस्वरूप मुझमें ही अच्छी प्रकार स्थित है॥ १८॥

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते।
वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः॥

बहुत जन्मोंके अन्तके जन्ममें तत्त्वज्ञानको प्राप्त

---

१. सांसारिक पदार्थोंके लिये भजनेवाला।
२. संकट-निवारणके लिये भजनेवाला।
३. मेरेको यथार्थरूपसे जाननेकी इच्छासे भजनेवाला।

वास्तव में किसी भी शब्द का अर्थ वाक्य के अनुसार लेना चाहिये लेकिन हलकी सोच वाले रामपाल अपनी हलकी सोच से लेते है, यह उपर्युक्त प्रमाण से सिद्ध होता है। इस प्रमाण से यह भी सिद्ध होता है कि रामपाल कोई संत नहीं है, न ही गुरू की उनमे पात्रता है। कोरा, अज्ञानी, बालबुद्धि का महा अभिमानी, लोगों को शास्त्र एवं पुराणों की अधुरी बात बताकर भ्रमित करने वाला एक साधारण मलिन जीव है।

तथाकथित संत रामपाल के भुलभुलया के जाल में फँसे हुये तमाम भाई - बहनों से हमारा अनुरोध है कि अभी भी समय है जगनेका, जाग जाओ। वास्तव में जो नकली है उससे पिंड छुड़ाकर मुक्त हो जाओ। समय निकलने के बाद पछताओगे। ना घर के, ना घाट के रहोगे। हमारा धर्म है आपको जगाना। हमारी रामपाल से कोई जाती दुश्मनी नहीं है, नाहि हम उनके विरोधक है, नाहि हम उनके प्रतिस्पर्धी है। हम असली संत के पुजारी है संत क्या होता है यह हम भलीभांति जानते है। रामपाल संत नहीं है यह पूर्ण सत्य है। वे सत्य को जिस प्रकार तोड़मरोड़ कर लोगों के सामने पेश कर रहे है वह बड़ा दुखद मामला है। इसलिए हम रामपाल की पोलखोल कर रहे है और वह भी प्रमाण के साथ। ना हम उन पर कोई गलत लांछन लगा रहे है। हम जो भी कह रहे है पूर्ण सत्य कह रहे है। इसलिए कह रहे है, भाई - बहनों जाग सको तो जागो नहीं तो भोगो।

मुख सूं कहे जन नाम बतावे, सो शिष सीख धार घर जावे।
भजो रात दिन रहो लिव लाई, सत स्वरूप ना पावे भाई॥ ७॥

परमात्मा के जन मुंह से कहकर ईश्वर का कोई भी नाम बतावे और शिष्य उसे सीखकर घर चला जावे। रात दिन उस नाम का भजन कर लिव लगाता रहे तो भी उसे सतस्वरूप की प्राप्ति नहीं होती।

राम राम कोई आंण बतावे, तो पण सतस्वरूप ना पावे।
सत्त साहेब कहे निश दिन कोई, अन्तकाल जासी सब रोई॥ ८॥

यदि कोई आकर राम-राम का सिमरण करना बता देवे तो भी सत स्वरूप की प्राप्ति नहीं होती। कोई रात दिन सत साहेब-सत साहेब करो अन्तकाल के समय सबको पछताना पड़ेगा।

परम मोख निरभे पद गावे, सत्त साहेब कहे कदे न पावे।
कहणी सकल झूंठ है सारी, वाय शब्द सो बके विचारी॥ ९॥

परम मोक्ष व निरभे पद को गाते हैं। मुँह से सतसाहेब-सतसाहेब कहने से कभी प्राप्त नहीं होता है। मुख से कहणे की बात झूठ है। वाणी के आधार के शब्दों से उस पद की प्राप्ति नहीं होती।

विशेष बात: इन नकली गुरुओं की एक रहस्य वाली बात बता दू । ये ऐसा क्यों होता है । लोग क्यों प्रभावित होते है और कैसे इनका काम हो जाता है ।

ये दरअसल कालदूत है । मतलब ये जैसे भूत प्रेत से आवेशित हो जाते है । ये कालदूतों से आवेशित है और ये कुछ नहीं जानते । ये बेचारे खुद मोहरा बने हुए है । वो कालदूत जो आंतरिक शक्तियां है वो लोगों को एक सम्मोहन के चपेटे में ले लेती है । वो इनकी बुद्धि हर लेती है तो लोग ये जैसा करते है । भेड़ की तरह चलने लगते है । काल के दायरे से वो जीव बचता है । जो इससे बेचैन है । जिसकी परमात्मा की भक्ति की तरफ लौ है । जिसके संस्कार पुण्य ठीक है । जिसका परमात्मा की तरफ झुकाव हो वो निकल जाता है । उसको सदगुरु का आकर्षण या परमात्मा की शक्ति खींच लेती है । वो नहीं फंसता उनके जाल में । अगर फंस भी जाये तो निकल जाता है ।

इस तरह के विभिन्न प्रकार के सन्त जो भी ज्ञान दे रहे हैं । वह भी गलत नहीं हैं । क्योंकि संसार या मृत्युलोक एक पाठशाला है । यहाँ से पास फ़ेल होकर जीवात्मा की विभिन्न करोंङों गतियाँ बनती है । सिद्ध गण यक्ष आदि भी यहीं से बनते हैं । अतः निरी निरी आलोचना करना कि वे सब झूठ ही बोल रहे हैं । यह भी गलत है । लेकिन यह सही है कि वे आत्मज्ञान के नाम पर जीवों के साथ छल कर रहे हैं । वह आत्मज्ञान नहीं है । जीव बेचारा उनके धोखे के मकङजाल में फ़ँस जाता है । और अन्त समय दुर्गति को ही प्राप्त होता है ।